डायमंड कामिक्स पेश करते हैं

महान विशेषांक

लम्बू मोटू और नर्क का ड्रैकुला 5-00

एक बार फिर लम्बू-मोटू को मनहूस ड्रैकुला से टक्कर लेनी पड़ी. इस खौफनाक टकराव की कहानी आप डायमण्ड कॉमिक्स और अंकुर में पढ़ते आ रहे हैं.
ड्रैकुला जो खून पीता है...मनुष्य का ताज़ा खून उसे पैशाचिक शक्ति देता है. बच्चों के नर्म गोश्त के टुकड़ों में से टपकता खून जब उसके हलक में उतरता है तो उसके मुंह में खुशी भरी गुर्राहटें निकलने लगती हैं.
यह डरावनी कहानी ड्रैकुला के खूनी अट्ठाहसों की कहानी है. भूत-प्रेत पिशाच ड्रैकुला के सेवक हैं. ड्रैकुला जिसका खून पी लेता है वह ड्रैकुला का गुलाम बन जाता है. पूरी दुनिया को चेतावनी दी जा चुकी है अंधेरा होते ही घर से न निकलें, दरवाजे, खिड़की, रोशनदान बन्द रखें ..न जाने कब...कहाँ से नर्क का ड्रैकुला आ जाए, और तुम्हें दबोच लें.
उसी खौफनाक ..डरावने ड्रैकुला की कहानी डायमण्ड कॉमिक्स पेश कर रहे हैं :-नर्क का ड्रैकुला में.

चाचा भतीजा और मौत का गीत 3-50

अंकुर और करोड़ों के हीरे 3-00

फौलादीसिंह और सितारों का युद्ध 3-50

मेरा वतन मेरा चमन 3-50

अंकुर बाल बुक क्लब

डायमंड कामिक्स की बच्चों के लिये नई निराली अनुपम योजना

अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनिये और हर माह घर बैठे, डायमण्ड कामिक्स, अंकुर व डायमण्ड बाल पाकेट बुक्स डाक व्यय फ्री की सुविधा के साथ घर बैठे प्राप्त करें ।
डायमण्ड कामिक्स व अंकुर आज हर बच्चे की पहली पसन्द है । रंग बिरंगे चित्रों से भरपूर डायमण्ड कामिक्स व अंकुर हर बच्चा घर बैठे प्राप्त करना चाहता है इस इच्छा के सैकड़ों पत्र हमें प्रति दिन प्राप्त होते हैं । नन्हें मुन्नों की मांग को ध्यान में रखकर हमने यह उपयोगी योजना शुरू करने का कार्यक्रम बनाया है । आपसे अनुरोध है इस योजना के स्वयं सदस्य बने और अपने मित्रों को भी बनने की प्रेरणा दें :—

सदस्य बनने के लिये आपको क्या करना होगा :—

1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर कर हमें भेज दें । नाम व पता साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो ।
2. सदस्यता शुल्क दो रुपये मनीआरर्ड या डाक टिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें ।

सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा ।

3. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगाने पर 2/- की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी । हर माह हम पांच पुस्तकें निर्धारित करेगें यदि आपको वह पुस्तकें पसन्द न हों तो डायमण्ड कामिक्स व डायमण्ड बाल पाकेट बुक्स की सूची में से कोई भी पांच पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते है लेकिन कम से कम पांच पुस्तकें मंगवाना जरूरी है ।

सदस्यता कूपन

मुझे 'अंकुर बाल बुक क्लब' का सदस्य बना लें । सदस्यता शुल्क दो रुपये मनीआर्डर/डाक टिकट से साथ भेजा जा रहा है । (सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है । मैं हर माह वी० पी० छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं ।

नाम_______________

पिता का नाम_______________

पता_______________

डाकखाना_______________

जिला_______________

31 जुलाई तक सदस्य बनकर एक स्टिकर मुफ्त प्राप्त करें !

सभी अवसरों और व्यक्तियों के लिये पत्र लेखन कला की एक विशेष और सम्पूर्ण पुस्तक

डॉयमन्ड लैटर ड्राफ्टिंग कोर्स

इंगलिश में पत्र लिखने की सरलतम विधि का ज्ञान कराने वाली एक उपयोगी पुस्तक । पत्र लेखन एक कला है और तकनीक भी प्रेम पत्र, प्रार्थना पत्र या नौकरी के लिये आवेदन, किसी भी तरह का पत्र लिखना सीखाने वाली अत्यन्त उपयोगी पुस्तक । मूल्य 21/- रु० डाक व्यय 5/- रु०

अंग्रेजी भाषा के मर्म को गहराई से समझाने वाला एक ऐसा प्रभावी कोर्स जिसे अपनाकर आप महसूस करेंगे कि आपने वही पाया है जिसकी आपको वर्षों से तलाश थी ।

डायमंड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स

मूल्य 21/- रु० डाक व्यय 5/- रु०

— अपने निकट के बुक स्टाल से खरीदें या हमें लिखें —

डायमंड कामिक्स प्रा. लि.

2715 दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

सन प्रकाशन की अनुपम भेंट
भारत में पहली बार
केवल "सन मैगजीन" में धारावाहिक प्रकाशित होने वाली

आक्सा

की कहानी अब रंगों से भरपूर हिन्दी व अंग्रेजी में पुस्तक के रूप में

सुन्दर फुर्तीली, साहसी लड़की आक्सा की कहानी प्रतिक्षण एक नये उत्साह से भरपूर। आक्सा शक्तिशाली दुष्ट व्यक्तियों, अजीबो-गरीब जीवों की चालबाजी और विनाश की योजनाओं से लड़ती है।

आक्सा कॉमिक जो सन मैगजीन के लाखों पाठकों का पिछले चार वर्ष से मनोरंजन करती आ रही है। और भारत में केवल सन मैगजीन में ही पढ़ी जा सकती है अब पाठकों की सुविधा के लिये कॉमिक पुस्तक के रूप में हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशित की जा रही है। इस धारावाहिक कहानी की एक पूरी कहानी इस रंगीन पुस्तक में दी गई है। इसको अपने निकटतम पुस्तक विक्रेता से मांगिये।

आक्सा कॉमिक अपने लिये खरीदिये और उसका मजा उठाइये।

अपने पुस्तक विक्रेता से हिन्दी या अंग्रेजी में सन कॉमिक की आक्सा की प्रति सुरक्षित कराइये।
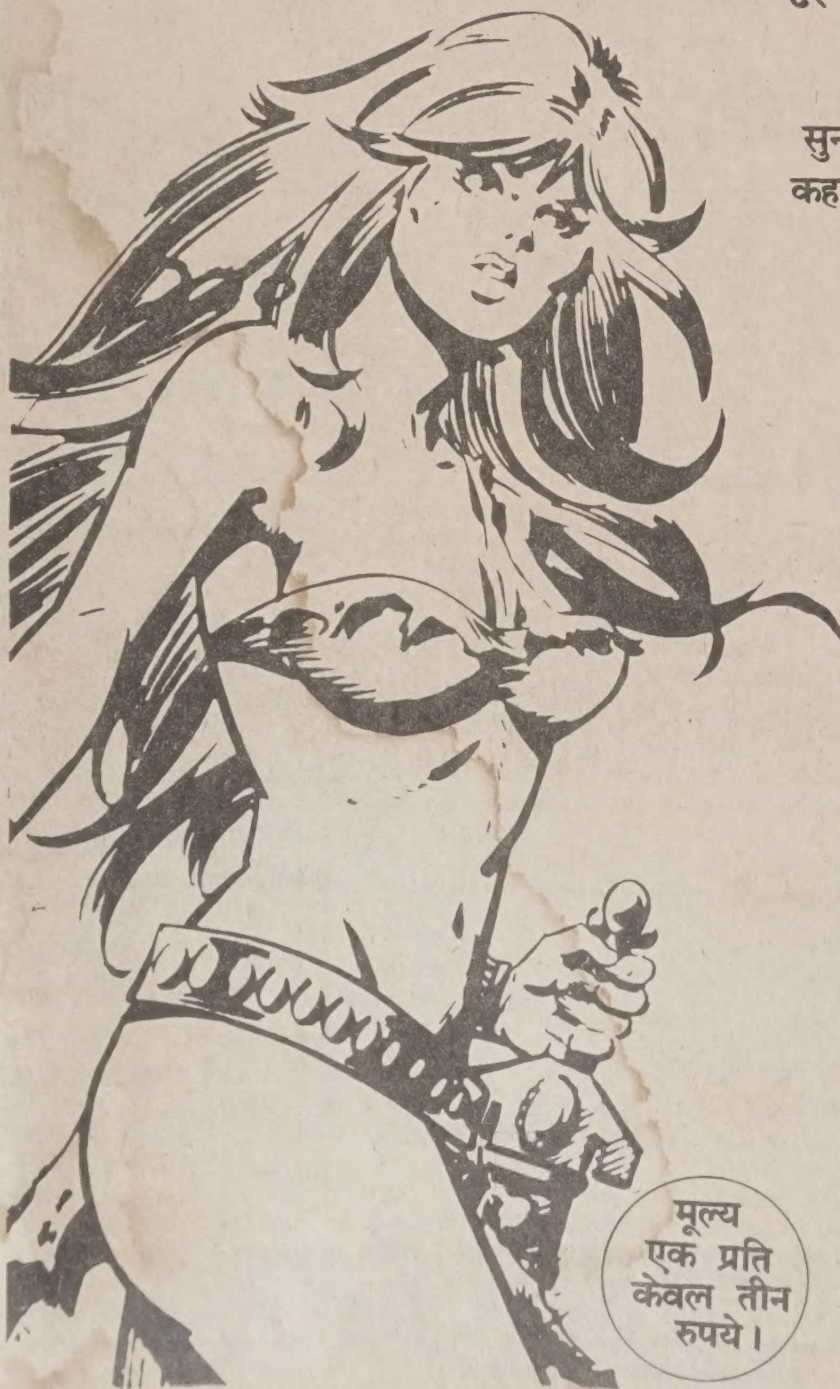
बरखुरदार फारूख,

बेटे मैं तुम्हारे शेर-दिल-बाप का बड़ा पुजारी था। वह भी 'शेख' अब्दुल्ला थे और मैं तो हूं ही 'शेख' चिल्ली। इसी नाते तुमसे दो-चार बात किया चाहता हूं। तुम्हारे मरहूम पिता ने तुम्हें डाक्टरी की शिक्षा कुछ सोच-समझकर ही दिलाई होगी, उनका विचार तुम्हें मुसीबत जदा, बीमार लोगों की महरम पट्टी और मिजाज पोशी की शिक्षा दिलाने से रहा होगा। लेकिन तुमने तो बेटा, डाक्टरी के नुस्खे छोड़ राजनीति के नुस्खे तैयार करने शुरू कर दिये। माना कि डाक्टरी दवाइयां कड़वी होती हैं, लेकिन बेटा याद रखो वह दवाई पीने के बाद मरीज को राहत व शकून मिलता है, पर तुम्हारे इन राजनीति नुस्खों से तो आम जनता को राहत की बजाय बेचैनी और शकून की बजाय दर्द ही नसीब होगा।

तुम्हारे शेर-दिल बाप ने जिंदगी रहे जम्मू काश्मीर को अपना दायां व बायां बाजू समझा, पर बेटे तुम्हारी बचकानी हरकतों ने अपने ही दोनों बाजुओं को आपस में टकराने के लिये मजबूर कर दिया। बेटे जान! अगर तुम बंदर बांट की कहानी भूल गये हो तो तुम्हारे वालिद का भक्त होने के नाते तुम्हें मेरा यह याद दिलाना जरूरी है कि तुमसे भी बड़ा बंदर एक और है जो लाईन के उस पार बैठा अपनी मूंछों पर ताव दे रहा है।

बरखुरदार कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने ही नुस्खों के नशे में ऐसी झोंक खा बैठो कि बाद में पछताना पड़े।

अरे, बेटा, जो मजा मिलजुल कर रहने और आगे बढ़ने में है वह बंदर को रोटी देने में नहीं। न तुम्हारी रोटी रहेगी न तुम्हारा दुश्मन और न ही तुम।

समझे, नहीं समझे। तो आओ मेरी शरण में। अपने अब्बा हजूर के भक्त से मिलो। वह तुम्हारी सब शंकायें दूर करके तुम्हारी गाड़ी को सही रास्ते पर लगा सकता है। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में—

तुम्हारे अब्बा का भक्त
चिल्ली

प्रेम पत्र

दीवाना

अंक : 12, वर्ष : 19, 16-30 जून 1983

सम्पादक • विश्वबन्धु गुप्ता
सह सम्पादिका • मंजुल गुप्ता
प्रोडक्शन सुपरवाईजर • राधे लाल शर्मा
कला निदेशक • सतीश गुप्ता
कलाकार • नेगी, कुलदीप मथारू, उत्तरा भालेराव
जनरल मैनेजर • रमेश गुप्ता

डिप्टी जनरल मैनेजर • वाई. ए. शैट्टी
मार्केटिंग मैनेजर • एम. आर. एस. मनी
प्रोडक्शन मैनेजर • विनोद अग्रवाल
विज्ञापन मैनेजर • जयप्रकाश गुप्ता
प्रकाशक • पन्नालाल जैन
मुद्रक • तेज प्रैस, नई दिल्ली
पता • दीवाना, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
फोन, • २७३७३७, २७३६१७, २७३६०७

वार्षिक चन्दा ५० रुपये
अर्द्ध वार्षिक २६ रुपये
एक प्रति २.५० रुपये

मुख पृष्ठ पर

धूप में खड़े चिल्ली को जब
आया बहुत पसीना
बस आयेगी घंटे बाद
मुश्किल हो गया जीना।
कैसे बचे इस गर्मी से
अक्ल बहुत दौड़ाई
आगे पीछे देखा तो
दाढ़ी हाथ में आई॥

हूं ! तो आज मेरा बर्थ डे है। आज तो मुझे कोई स्पेशल प्रोग्राम कर ही लेना चाहिए। लोगों का मुंह बन्द करना है जो कहते हैं कि राजा मक्खी चूस है। डल है—
सेनापति जी···मैं आज अपने बर्थ डे के उपलक्ष में सेना के सारे जवानों को तीन महीने की तनख्वाह का बोनस दूं तो कैसा रहेगा ?
सारे जवान आपकी जय-जय कार करेंगे।
और अपने राज्य के सारे स्कूल के बच्चों को मिठाईयों का एक-एक पैकेट दूं—मिठाई घंटाघर के हलवाई की देशी घी की बनी होंगी—
प्रद्युम्न सिंह—आज मेरा बर्थ डे है—राज्य में कोई भूखा नहीं रहेगा—सब गरीब गुरबा के लिए मेरी तरफ से शाही लंगर खुले जहां जो चाहे जाकर छत्तीस पकवानों का छक कर भोजन कर सके तो ठीक रहेगा न ?
महाराज सब आपका गुणगान करेंगे।
वो देखो जिन इलाकों में सूखा पड़ा है, वहां के किसानों का लगान माफ होना चाहिए···
जिनकी लड़कियां धन के अभाव में कुआंरी बैठी हैं उनकी शादी शाही खर्च पर हो।
आज रात को सारे शहर में रोशनी का प्रबंध करना है।
महाराज आज आपको चाकलेट कलर के पागल कुत्ते ने तो नहीं काट खाया ?
और आज दस बजे से शाम के पांच बजे तक शाही खजाने के दरवाजे खोल दो। जितने भिखारी हैं उन सबको एक-एक मुट्ठी मोती बांटो। रात को हमारी राजधानी के सारे नागरिक शाही मेहमान माने जायें।
जैसा आप ठीक समझें महाराज।
सज्जनों यह सब तो था वह जो मैं करता अगर मैं सारे हिन्दुस्तान का बादशाह होता। अह···अब चूंकि मैं हिन्दुस्तान का बादशाह न होकर फटीचरपुर का सी ग्रेड का राजा हूं—
तो ऐसा कीजिए एक पंद्रह बीस रुपये वाला बर्थ डे केक किसी बेकरी से मंगवा लीजिये—आधा केक काटने के बाद मैं खा लूंगा।
बाकी सब रियाया में थोड़ा-थोड़ा बांट लीजिए—
आदमी को अपने बर्थ डे पर थोड़ा सा हंसी मजाक कर लेना चाहिए—मूड बनता है।
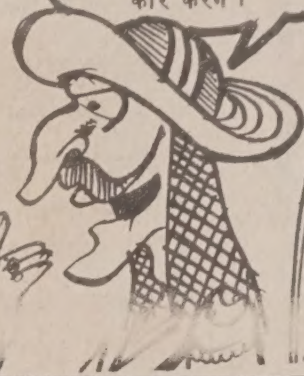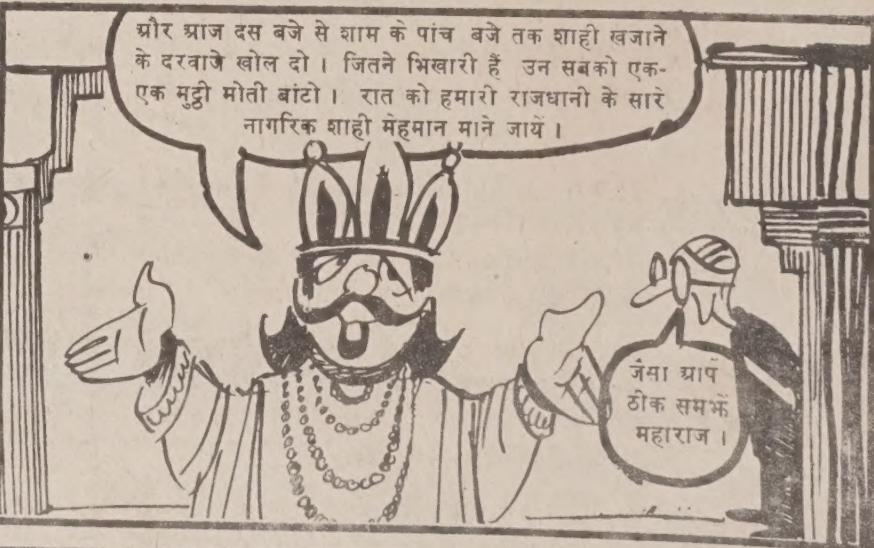
आपका भविष्य

प. कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण प. हंसराज शर्मा
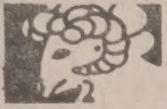
मेष : किन्हीं शुभ फलों की आशा भले ही न हो परन्तु सुधार एवं प्रगति की आशा है, संघर्ष के साथ उतार-चढ़ाव भी देखने में आयेंगे फिर भी उत्साह बना रहेगा।
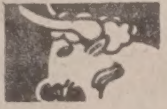
वृष : शुभ-अशुभ मिश्रित फलों का योग है, सहयोगी मदद करेंगे, परन्तु परिश्रम से फल पूरा नहीं मिलेगा या देर से प्राप्त होगा, काम-धंधा ठीक रहेगा।

मिथुन : धन की प्राप्ति होने से परिवार की दशा संभलेगी, परिश्रम से लाभ होगा एवं कुछ अधूरे बिगड़े कार्य सम्पन्न होंगे, परन्तु घर-बाहर कलह क्लेश से चिन्ता बनेगी।

कर्क : सावधानी एवं सोच-विचार कर काम करने में ही भलाई है, समय काफी संघर्षमय है, भाईयों की ओर से भी चिन्ता बन सकती है, आमदनी का साधन बना रहेगा।

सिंह : रोग, शत्रु एवं बाधा उत्पन्न होकर दब जायेंगे, नए काम से हानि लेकिन स्थायी काम-धन्धों से लाभ होता रहेगा, कठिन परिश्रम एवं संघर्ष का सामना, स्वजनों से मतभेद।

कन्या : शुभ फलों से युक्त होने पर भी यह सप्ताह किसी अप्रिय घटना के होने की सूचना देता है, लेकिन हालात ठीक ही चलेंगे और कामनाओं की पूर्ति भी होती रहेगी।

तुला : मिले-जुले फल प्राप्त होते रहेंगे, परिश्रम एवं संघर्ष का जोर बढ़ेगा, रोजगार में उन्नति लाभ के साथ साथ खर्चे बढ़ेंगे, कभी-कभी धन की कमी खटकती रहेगी।

वृश्चिक : सप्ताह विशेष अच्छा तो नहीं फिर भी कठिन परिश्रम एवं सूझबूझ से काम करने पर कुछ कार्य सिद्ध हो सकेंगे, व्यर्थ के झंझटों से परेशानी, धन की कमी खटकेगी।

धनु : कारोबार अच्छा रहेगा, परिश्रम के अनुसार सफलता एवं लाभ की प्राप्ति, वातावरण में शांति एवं उत्साह भी बना रहेगा, धन व्यय के साथ-साथ लाभ भी होता रहेगा।

मकर : संघर्ष एवं विवाद में उलझना आपके हित में नहीं, लाभ की प्राप्ति एवं सुधार करने के लिए आपको कठिन मेहनत से काम लेना होगा रुका पैसा मिलने की संभावना है।
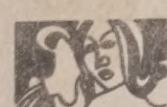
कुम्भ : हालात में शुभ परिवर्तन होते दिखाई देंगे, राजकाज में विजय पाने के लिये भागदौड़ एवं खर्च भी काफी करना पड़ेगा, भाग्य का सहारा रहेगा, घरेलू खर्चे बढ़ेंगे।
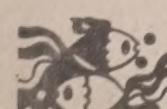
मीन : सप्ताह विशेष अच्छा नहीं, सावधानी एवं धैर्य अनिवार्य है, आलस्य से बचें वरना काम बनने में देरी होगी और लाभ भी देर से मिलेगा, जल्दबाजी से काम न लें।

आपके पत्र

दीवाना अंक 10 मिला। मुख पृष्ठ देखते ही हंसी फूट पड़ी। माचू-पीचू अच्छा लगा। राजा जी, मदहोश, लल्लू और सिलबिल-पिलपिल ने भी बहुत प्रभावित किया। इस अंक में क्यों और कैसे पिछले अंकों की अपेक्षा अधिक रोचक और ज्ञानवर्धक था। गरीबचन्द जी और काका के कारतूस में प्रश्नों के उत्तर एकदम सटीक लगे। दीवाना एक दिलचस्प और बेहतरीन पत्रिका है। **नवनीत तलवारे—जयपुर**

दीवाना के 'छुट्टी अंक' की दीवानगी में जो प्रवेश किया तो जनाब पता ही नहीं लगा कि कब हमारी ट्रेन आई और चली गई हम दीवाना पढ़ते रहे। फिर भी इस अंक में जो कुछ पढ़ा उसके बाद कहीं भटकना कोरी बेवकूफी होगी। राजा जी, लल्लू, चिल्ली लीला और सभी फीचर कितने मजेदार थे यह बताना ट्यूब लाइट में मोमबत्ती जलाना होगा। फिर भी आप जरा 'माचू-पीचू' के लिए कुछ करिये यह एकदम फालतू और बोर लगता है। दीवाना की दीवानगी अब फिर छाने लगी है। आशा है इसी प्रकार दीवानापन कायम रहेगा। अंक काबिल-ए-तारीफ रहा, अतः बधाई।

रमेश ए. एफ.—पानागढ़

बेहद इन्तजार के बाद दीवाना छुट्टी अंक 10 मिला। मिलते ही सारी नाराजगी दूर हो गई। धारावाहिक उपन्यास 'घर' का भाग 4 काफी रोचक लगा। 'बन्द करो बकवास' और 'माचू पीचू मुर्दों का व्यापारी' ने हंसा-हंसा कर दीवाना कर दिया। कहानी दुर्घटना ने मन मोह लिया। एरियलनामा और चना कुरमुरा मजेदार लगा। छुट्टी अंक इतना मजेदार होगा सोचा न था। पाठकों की अधिकता होने के कारण आपके पत्र के लिये पूरा पृष्ठ रख दें। तो और मजा आ जाए। अगले अंक का इन्तजार है। **सुखविन्द्र सिंह जौड़ा—कृष्णापार्क**

दीवाना का 'छुट्टी अंक' प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ से पढ़ना शुरू किया व अन्तिम पृष्ठ पर जाकर ही दीवाना की छुट्टी की। 'सिलबिल-पिलपिल की छुट्टी' पढ़कर तो हंसते-हंसते पेट की छुट्टी हो गई। 'क्यों और कैसे' व 'खेल-खेल में' सचमुच ज्ञानवर्धक स्तंभ हैं। आशा है भविष्य में भी आप इन्हें नियमित रखेंगे।

राहुल गोदीका, श्याम कुमार शाका—जयपुर

कितनी तारीफ करूं कि दीवाना 'छुट्टी अंक' पढ़कर मैं तो दीवाना हो गया। मुख पृष्ठ देखते ही हंसी के गुलछर्रे उड़ गए। लल्लू, माचू-पीचू, सिलबिल-पिलपिल बेहद पसन्द आए। सबसे प्रिय गरीब चन्द जी लगते हैं लेकिन अभी तक गरीब चन्द जी ने हमारे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। इसलिए बेहद दुःख है। अन्य स्तम्भ भी रोचक लगते हैं।

टीटू, रमेश चोपड़ा—दिल्ली

नम्बर आने पर आपके प्रश्न का उत्तर अवश्य दिया जायेगा। सं.

आपकी पत्रिका दीवाना का काफी पुराना पाठक हूं और अब आपकी कृपा से नियमित अंक मुझे मिल रहा है। दीवाना का नया अंक 10 मिला, मुखपृष्ठ काफी मजेदार था। राजवंश का धारावाहिक उपन्यास पसन्द आया। माचू-पीचू बोर लगते हैं इन्हें आप बदल कर मोटू-पतलू ही कर दें। बाकी सभी फीचर अच्छे लगे। अगले अंक के इन्तजार में। **जुबेर अहमद, मोहम्मद शाहिद—दिल्ली**

यह जूली बड़ी घमण्डी लड़की है । कभी आंख तक नहीं मिलने देती, किसी को कुछ समझती ही नहीं—पता नहीं किस हवा में है ।

कोई ना कोई तरीका तो होगा ही इस पर रौब डालने का । किसी न किसी तरह तो यह काबू में आयेगी ही । जब तक कोई ठोस फार्मूला हाथ नहीं आता तब तक इंतजारी करनी होगी···क्या ही अच्छा हो अगर···

किसी दिन यह एक सुनसान सड़क से अकेली गुजर रही हो और तीन चार भयानक शक्ल वाले गुंडे इसके पीछे पड़ जायें···जूली जोर से बचाओ बचाओ चिल्लाये और ठीक उसी समय मैं उधर से गुजर रहा होऊं ।

मैं एक गुंडे के जबाड़े पर मुक्का मारूं ।
BAM!

CHUCK!
दूसरे को एक फ्लाइंग किक ।

तीसरे को जूड़ो का दांव लगा कर कंधे के ऊपर से उछाल कर दस फुट दूर चित्त फैंक दूं···मैं खड़ा होऊं···मेरे चारों तरफ गुंडे जमीन सूंघ रहे हों···

और—जूली—रोती हुई मेरे से आकर लिपट जाए···मैं उसके पीठ पर हाथ फेर दिलासा दूं ।

वह रुंधे गले से मुझसे माफी मांगे । पहले की गुस्ताखियों के लिए—और रोते-रोते मुझे धन्यवाद दे—कि तुम न होते तो मैं लुट गई होती—वगैरह—वगैरह
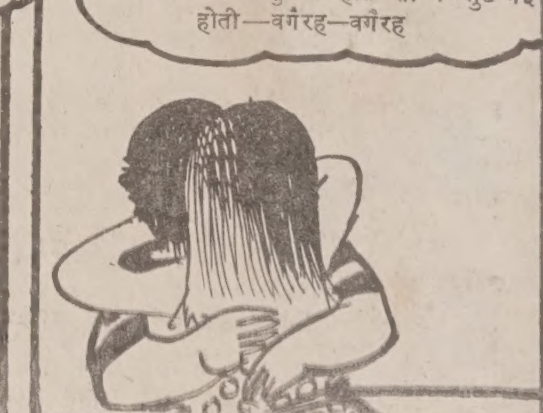
मैं भी जल्दी न मानता ।
थोड़ा-सा अकड़ जाता—इन लड़कियों का दिमाग इसी तरह ठीक किया जा सकता है । और उसे पैरों पर गिर कर गिड़गिड़ाने पर मजबूर करता—

—और शायद फिर तो वह मुझे अपने लान से मेरी वह कॉमिक बुक उठाने देती जो गलती से अखबार वाला कल उसके लान में फेंक गया था

काका के कारतूस

अटपटे प्रश्न दीवानों के
चटपटे उत्तर काका हाथरसी के—

विता अग्रवाल, कानपुर

प्र० : दिलवाले को दिलदार, चौकसी करने वाले को चौकीदार, ाल वाले की मालदार कहते हैं तो मारने-पीटने वाले को ?

उ० : लूटमार कर भागते, ठग-डाकू-बटमार,
मारपीट सीधा करे, वह है थानेदार ।

विनोदपुरी रंजू, लुधियाना (पंजाब)

प्र० : सौन्दर्य को दूर से देखना चाहिए या नजदीक से-?

उ० : सुरे-बेसुरे दूर के लगें सुहाने ढोल
देखोगे नजदीक से, खुले भीतरी पोल ।

मेश कुमार आचार्य, लैरथल (अलवर)

प्र० : गरीब आदमी गहरी नींद सोता है, लेकिन धनवान सेठ रातभर करवटें ही बदलते रहते हैं, ऐसा क्यों ?

उ० : मेहनत मजदूरी करे, आय नींद भर पेट,
बजें फोन की घंटियां, चैन न पाए सेठ ।

कु० अमुरीश महाजन, इन्दौर

प्र० : महिलाओं के मूंछ क्यों नहीं निकलतीं ?

उ० : बातें करती हैं बहुत, महिलायें वाचाल,
उगते-उगते मूंछ के, झड़ जाते हैं बाल ।

रमेश कुकरेजा, इन्दौर

प्र० : हंसती हुई लड़की और खिले हुए फूल में क्या फर्क है ?

उ० : कन्या कोमल कली है, कपट रहित मुस्कान,
फूल खिला, यौवन मिला, महंक गया उद्यान ।

विवेक कौल, दिल्ली

प्र० : काकाजी आपने अगले जनम के लिए आवाम से क्या चाहना की है ?

उ० : स्वीकार है भगवन, आपके चरण दबाना,
लेकिन अगले जन्म में चरणसिंह नहीं बनाना ।

सतीश निर्दोष, अबोहर मंडी

प्र० : जिन्दगी गुजारने को साथी एक चाहिए, हुस्न नहीं मिल सके, शराब ही सही ।

उ० : जिन्दगी है कीमती, क्यों फूंकते शराब में,
शराब से भी दसगुना होता नशा शबाब में ।

सुरेश खुराना पप्पी, जींद

प्र० काका जी पाप का परिणाम क्या होता है ?

उ० : पाप की परिभाषा बदली, प्रभू के इजलास में,
डाकू मक्खन खा रहे, देखलो 'ए' क्लास में ।

ए. आर. के. गुप्ता, श्री गंगानगर

प्र० : वर्तमान शिक्षा पद्धति पर आपके विचार ?

उ० : बाबू सर्विस ढूंढ़ते, थकगए करके खोज,
अनपढ़ श्रमिक को मिल रहे बीस रुपैया रोज ।

विनय चांदगोठिया, श्री गंगा नगर

प्र० : दिल आ गया जो उन पर, दिल आने को क्या कहिए,
दिल हो गया दीवाना, दीवाने को क्या कहिए ।

उ० : शम्मा पर मंडराय जो, दीवाना बनजाय,
'दीवाना' से दिल लगे, जीवन भर मुस्काय ।

रामनिवास शुक्ल, मानपुर (शहडोल)

प्र० : सभी लोग कविता क्यों नहीं बना पाते ?

उ० : कविता का कोई नहीं दुनिया में स्कूल,
सरस्वती की हो कृपा, खिलें काव्य के फूल ।

कृष्ण गोपाल माहेश्वरी, नई दिल्ली

प्र० : प्रेमिका की फटकार में भी मजा क्यों आता है ।

उ० : माशूक मारे पत्थर तो, फूल समझ लीजे,
यह अंधी मुहब्बत का स्कूल समझ लीजे ।

राजेश कुमार अग्रवाल, वाराणसी

प्र० : प्यार-मुहब्बत-फर्ज-और कर्ज में क्या फर्क है काका ?

उ० : प्रेम-दोस्ती से बड़ा है इंसानी फर्ज,
नष्ट मुहब्बत को करे, उसको कहते कर्ज ।

भगवानदास थावराणी, अकोला

प्र० : शादी के लिए काली लड़की मिल रही हो तो ?

उ० : करलीजे स्वीकार मिले यदि काली बीवी
साथ लायेगी स्कूटर-फ्रिज-कलर्ड टी. वी.
ऐसे उपकरणों से चमक जाएगी छोरी
चंद दिनों में हो जाए काली से गोरी

प्रवीन कुमार जैन, अनूपशहर (उ. प्र.)

प्र० : आप कारतूस ही छोड़ते हैं, बम क्यों नहीं छोड़ते ?

उ० : बम-बम-बम के बोल से, शिव ही होंय प्रसन्न,
कारतूस से हो रहे काका प्रेमी धन्न ।

बलजीत सिंह भाटिया, पत्थलगांव

प्र० : काकाजी, मुरारजी भाई की तरह आप भी 88 वर्ष तक स्वरूप रह सकेंगे क्या ?

उ० : मुरारजी की भांति काका, जी नहीं सकते,
जो दवा वे पी रहे, हम पी नहीं सकते ।

उत्तमकुमार शाही, वीरगंज (नेपाल)

प्र० जो ओढ़ता है वह देखता नहीं, जो देखता है वह ओढ़ता नहीं, इस पहेली को बुझाइए ?

उ० : जो मुर्दे को उढ़ाते हैं, उसे हम कफन कहते हैं,
न ओढ़ेंगे उसे जिन्दे, भले ही नग्न रहते हैं ।

बाबू राम विजय कुमार-श्रीगंगानगर

प्र० : आप माथे पर बिन्दी क्यों लगाया करते हैं ?

उ० : बिन्दु लगे जिस अंक पर, वह दसगुन बढ़जात,
इस युक्ती से बढ़ रहे, काका कवि दिनरात ।

'मिस्टर धनीराम"

हुकम चंद पक्षी

'बाबा, दो आदमी किसी काम को दो दिन में करते हैं. तो एक आदमी उसी काम को कितने दिन में करेगा ।

'अरे ! गधो, ये सवाल भी नहीं निकलता । आजकल इन मास्टरों ने तो देश का बेड़ा ही गरक कर दिया । पागलो ये भी कोई सवाल है । दो आदमी दो दिन में, तो एक आदमी एक दिन में पूरा करेगा ।'

अःहा-अःहा बाबा से यह सवाल भी नहीं निकलता ।' बच्चे बाबा पर हंसने लगे—बोले —'बाबा अकेला आदमी तो उस काम को चार दिन में पूरा करेगा ।'

'ही : ही : ही धनीराम बाबा खिसियाने लगे । बच्चों नें एक दूसरा सवाल पूछा—'एक मुर्गा कुए पर बैठा है । उसने एक अंडा दिया, तो बताओ वह अंडा कुए में गिरेगा या ऊपर को जायेगा ।'

'वह तो कुए में ही गिरेगा ।' बाबा ने तपाक से उत्तर दिया ।

'गलत ! बिल्कुल गलत । बाबा तो बिल्कुल मूरख हैं । भला कहीं मुर्गा भी अंडा देता है ।' बच्चे ताली पटकाने लगे और जोर जोर से हंसने लगे । बाबा को क्रोध आ गया । बोले—'ठहरो, मैं तुम्हारी अभी लठिया से खबर लेता हूं । बाबा ने लठिया टटोली ।—'ऐं ! मेरी लठिया । तुमने मेरी लठिया भी छुपा दी है ।'

'बाबा हमने नहीं छुपाई तुम्हारी लठिया । बच्चों ने नकारात्मक स्वर में उत्तर दिया ।

'चुप मुर्गी के चूजो ! तुमने ही मेरी लठिया छुपाई है । आज तुम्हारी टांगें तोड़ डालूंगा । उल्टे सीधे सवाल पूछ कर मेरी मजाक बनाते हो । परेशान करते हो और ऊपर से कतर-कतर जबान चलाते हो ।'

'बाबा सवाल तो तुमसे निकलता नहीं और ऊपर से गुस्सा होते हो ।' बच्चों ने बाबा को अंगूठा दिखा दिया । बाबा उठकर जैसे ही अपने पोतों के पीछे भागे, वैसे ही धड़ाम से चारों खाने चित्त गिर पड़े ।

—'हाए रे ! मार लिया रे ! अरे : महेशा, तूने ये सपोले मेरे लिए ही पाल रखे हैं । तुम्हारा नाश चला जाए, सवालों के बहाने यहां बूढ़े आदमी को तंग करने आ जाते हैं ।'
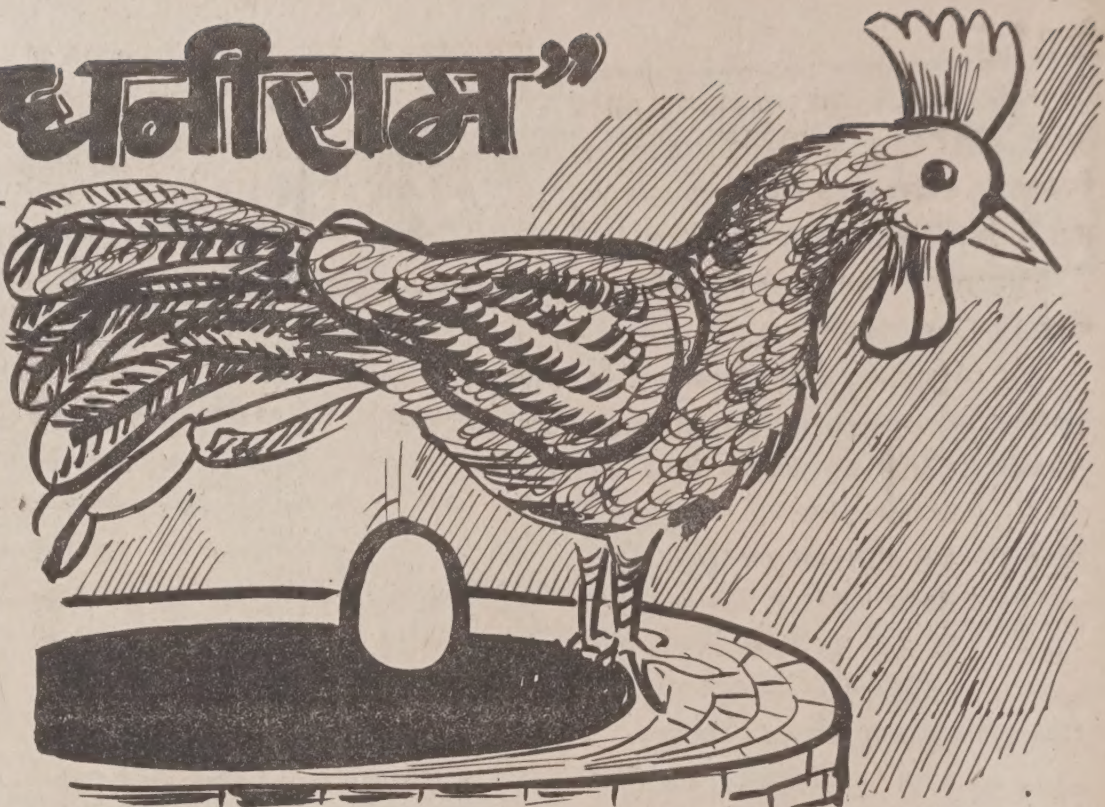
धनीराम जब इस प्रकार की हाए-तौबा मचाने में लगे हुऐ थे, तभी महेश उधर आ निकला । पिता को जमीन पर लेटे हुए देखा, तो बोला—'क्या हुआ, जो जमीन पर इस तरह लुटलुटी कर रहे हो ।'

'क्या कहा ! मैं लुटलुटी कर रहा हूं । मैं कोई गधा हूं, जो इस तरह लुटलुटी करूंगा ।'

'और क्या कम हो ।' महेश ने उपेक्षापूर्ण मुद्रा में कहा ।

'हूं । ठीक कहता है । क्या तू भी उन करेलों का बाप नहीं है । अपने बाप को गधा कहता है और उन काली मिर्चों को कुछ नहीं कहता ।'

'आखिर कुछ हुआ भी ?'

'वो रामू और राजू दोनों शैतान मेरी लठिया ले गए ?

'लठिया ! लठिया वह सिरहाने रखी हुई है । तुम भी कमाल हो बापू । काम के ना काज के और ऊपर से गाली-गसीज । अक्ल तो जैसे बिल्कुल ही ठप्प हो गई है । और हाँ ! बैठे-बैठे एक रस्सी बट देना ।' महेश कहकर चला गया और बाबा खड़े होकर अपनी धूल झाड़ने लगे ।

□

धनीराम खाट पर पड़े हुए पीछे लौटने लगे । बड़े साहब धनीराम पर बिगड़ रहे थे—

'देखो धनीराम जी, जरा अपना टाईप किया हुआ यह लैटर देखो । इसका जुमला बगैर गलती के नहीं है । अफ़सोस की बात है कि आप 'कन्ट्री' शब्द भी ठीक से नहीं लिख सकते, और वैसे शिकायत करते हो कि मेरा प्रोमोशन बूझकर नहीं किया गया ।'

'हाँ सर ! आप मुझसे खुण्दक खाते हैं । आपने मुझसे जूनियरों की सिपारिश तो की, मगर मेरा केस ऊपर नहीं भेजा । ।'

'ये बात नहीं है धनीराम जी । आपमें प्रोमोशन के लिए योग्यता ही नहीं है ।'

'अगले महीने मैं प्रोमोशन के इम्तहान में बैठ रहा हूं; फिर देखता हूं आप मेरा प्रोमोशन कैसे रोकते हो ! धनीराम ने मेज पर हाथ मारा ।

'इतना गुस्सा ठीक नहीं धनीराम जी, पहले इम्तिहान तो कहना सीखो ।' बड़े साहब ने बड़ी संजीदगी से धनीराम को समझाया ।

धनीराम के पैंतालीस पूरे हो चुके थे । पढ़ाई में वो पहले से ही कमजोर थे । और अब तो याददास्त बिल्कुल ही बैठ गई थी । मगर, प्रोमोशन एक ऐसी ललक है, जिसे व्यक्ति सत्तावन साल में भी चाहता है । यही वजह थी कि धनीराम बड़ी उम्मीद और तिकड़म के साथ प्रोमौशन एक्जामिनेशन में बैठे थे । उन्हें पूरी उम्मीद थी कि उनका प्रोमोशन अपने ही बल पर हो जाएगा, फिर वो बड़े साहब से अपना बदला ले लेंगे । मगर परिणाम कुछ और ही निकला । लल्लू-पंजु तरक्की पा गए, मगर धनीराम वहीं के वहीं रहे । अब तो उनका पारा और भी चढ़ गया । उन्होंने हल्ला मचा दिया । बड़े साहब पर जोर-जोर से कटाक्ष किए गए—'आपने जलकर मुझे फेल

क्या है।'

बड़े साहब ने सारे स्टाफ की मीटिंग बुलाई और बगल से एक उत्तर पुस्तिका निकालकर धनीराम जी को दिखाई—'देखना यही है तुम्हारी कापी।'

'हाँ यही है' धनीराम ने बड़ी अकड़ में कहा।

बड़े साहब ने वह उत्तर पुस्तिका एक अन्य साथी को बुलाकर पढ़ने के लिए दी। उत्तर पुस्तिका पढ़ी जाने लगी। पहला प्रश्न था। भारत के राष्ट्राध्यक्ष कौन हैं? उत्तर :—श्रीमती इन्दिरा गांधी। प्रश्न नं. 2 :—सिंगापुर हमारे किस राज्य की राजधानी है? उत्तर :—सिंगापुर की। प्रश्न नं. 3 :—एफ. आई. आर. शब्द कहाँ प्रयोग होता है? उत्तर :—फायर ब्रिग्रेड में। प्रश्न नं. 4 :—स्वतंत्र भारत के प्रथम सेनापति कौन थे? उत्तर :—सुभाष चन्द्र बोस। प्रश्न नं. 5 :—इंटक का पूरा नाम लिखें? उत्तर :—इन्दिरा टमाटर कम्पनी। प्रश्न नं. 6 :—इन्टर पोल पर दो शब्द लिखें? उत्तर :—इन्टर का अर्थ है, बारहवीं तथा पोल का अर्थ है चुनाव। जब बारहवीं क्लास के चुनाव होते हैं, तो इन्टर पोल कहा जाता है। प्रश्न नं. 7 :—रात को पेड़ों के नीचे क्यों नहीं सोना चाहिए? उत्तर :—उनके ऊपर भूत प्रेत रहते है तथा कौए बींट करते हैं। प्रश्न नं. 8 :—हवा क्यों चलती है? उत्तर :—पेड़ हिलते हैं, इसलिए हवा चलती है। प्रश्न नं. 9 :—सिक्किम कहां है? उत्तर :—पहाड़ों पर है। प्रश्न नं. 10 :-वर्षा पृथ्वी पर बूंदों के रूप में क्यों पड़ती है? उत्तर :—राजा इन्द्र के यहां बहुत बड़ी छलनी लगी हुई है। बादल आकर उसमें बैठ जाते और धीरे-धीरे पानी छोड़ते हैं।

उत्तर पुस्तिका का पढ़ना बन्द हुआ, तो बड़े साहब ने धनीराम जी की ओर देखा और बोले—'धनीराम जी यही हैं ना तुम्हारे उत्तर जिन पर तुम्हें प्रोमोशन चाहिए।'

धनीराम धरती में गड़े जा रहे थे, क्योंकि सारा स्टाफ ठहाके लगा रहा था। सब साथियों ने थू-थू की और धनीराम को कालीदास का भी बाप बताया। कई दिन तक धनीराम शर्म के मारे हुए दफ्तर भी नहीं आए। मगर धीरे-धीरे सब कुछ सामान्य हो गया। पहले एक गलती करते थे, अब चार होने लगीं। एक दिन बड़े साहब ने फिर धनीराम जी को बुलाया और कहा—'शायद, तुम्हारा दिमाग अब सही सलामत नहीं रहा है धनीराम जी, बहतर है तुम्हें किसी दूसरे काम पर लगा दिया जाए।' कल से तुम डाक पर बैठा करोगे।'

साहब के आदेश पर धनीराम डाक पर बैठने लगे। कुछ दिन तो ठीक-ठाक चला मगर शीघ्र ही कम्पनी से शिकायतें आने लगीं। पत्र भेजना कहीं होता, धनीराम उस पर पता कहीं का लिख देते। डाक ले जाते हुए या छांटते हुए एक दो पत्र खो देना तो धनीराम का रोजमर्रा का काम हो गया। आये दिन शिकायतें होते देख, साहब ने उनको डाक से हटा कर टैलीफोन पर रख दिया। धनीराम फोन उठाते, तो लोग अंग्रेजी में किटपिट करते आधे शब्द मुंह से निकालते और आधे शेखी के मारे मुंह में ही चबा जाते। धनीराम को गुस्सा आता—'सुअर कहीं के, आज भी गुलाम हो रहे हैं।'

लोग फोन पर पूछते—'हैल्लो हाऊ डू डू' धनीराम जवाब देते—'नहीं साहब यहां कोई कबड्डी नहीं चल रही है।' लोगों ने बड़े

शेष पृष्ठ ४० पर

मौन कुमार का

शेख चिल्ली का अवतार

राजेश गन्ना, शबाना हाजमी, मटन पूरी, खर्चिन, ए० के० जंगल, सुजीत को मापु, टिचू कपूर, युनुस परहेज, शशीपूरी, प्रीति रसपरूह, जनी शर्का, मधु मालिनी ।

यह कहानी है अवतार किशन नाम के एक मूर्ख मैकेनिक की । अवतार शेख चिल्ली का अवतार है । दिन भर उल्टे-सीधे सपने देखता है । मुर्गी पहले पैदा हुई थी या अन्डा के पेचीदा गियरबक्स में अपना टूटा हुआ पेच अड़ाता रहता है ।

बड़ा अजीब हीरो से पाला पड़ा है। चेक मेरे मुंह पर मारने की बजाय सचमुच रकम लिख रहा है। साठ हजार करोड़ रुपए लिख रहा है।
सेठ तुमने ही तो कहा था कि जो चाहो भर लो। तुम्हारा चेक कभी डिसऑनर नहीं होता। साठ हजार करोड़ रुपये मिलते तो मैंने सोचा सरकार को मैं कर्ज दे देता। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का मुंह न देखना पड़ता।
राधा तुम? तुम यहां?
मैं अपना सब कुछ छोड़कर तुम्हारे पास आई हूं।
अपना टूथ ब्रश और कंघी तो कम से कम ले आतीं। मैं यह चीजें किसी को उधार नहीं देता।
मुझे क्या पता था कि तुम्हारे बाप के खाते में इतने पैसे नहीं हैं। तुम टेलीफोन करके पता कर लो। कुछ दिनों के अन्दर प्रबन्ध हो जाये तो मैं इन्तजार कर सकता हूं।
इतने पैसे किसी सूरत में नहीं मिल सकते। तुम पेचकस लेकर गाड़ी में इधर-उधर मारते रहते हो अपने दिमाग के पेच भी कस लिए होते। लोग जब कहते थे कि तुम शेख चिल्ली के अवतार हो तो मुझे यकीन नहीं आता था। अब शक की कोई गुंजाइश नहीं है।
चलो, भागते चोर की लंगोट ही सही। साठ हजार करोड़ रुपए मिले होते तो बात और होती। मुझे भारत रत्न का खिताब मिलता —सारा संसद मुझे धन्यवाद का प्रस्ताव पास करके देता। २६ जनवरी को विशेष अतिथियों वाली सीट मिलती।
जल्दी ही अवतार के घर शेख चिल्ली का एक और अवतार जन्म लेता है। भारत पर चार किलो का बोझ और बढ़ जाता है। एक दिन बीमार पड़ने पर—
अब हमारे पास एक ही अन्तिम इलाज है। इसे लेकर मां वैष्णो के पास चलें।
अगर डाक्टरों को दिखाते तो ज्यादा ठीक रहता। अब तक किन-किन डाक्टरों को दिखा चुके हो?
जैसे ही डाक्टर के पास ले जाने के लिये निकलता हूं इस फिल्म का प्रोड्यूसर डंडा लेकर दरवाजे पर खड़ा मिलता है। वह किसी डाक्टर के पास नहीं ले जाने देता। वैष्णो देवी का सीन डाल, अंधविश्वासियों से टिकट खरीदवा लेना चाहता है।
डाक्टर बाबू मोशाय तुम यहां क्या कर रहे हो?
आनन्द बाबू मैं देख रहा हूं कि हमने आनन्द फिल्म में कितनी बड़ी गलती की। अगर तुम बम्बई आने की बजाय वैष्णो देवी चले गए होते तो तुम्हारा लिम्फोस्कोया ऑफ इन्टैस्टाइन का इलाज हो गया होता।
हमारी शादी को पच्चीस वर्ष गुजर गए, लड़के जवान हो गये। तुम्हारी किस्मत की लकीरें घर गृहस्थी की दौड़-धूप में फीकी पड़ गई हैं।
मुंह से जुये पकड़ने की आदत के कारण ऐसा हो गया है।

बाल सारे भूरे हो गए, यह सबक अमिताभ बच्चन का है। दूसरे एक्टरों को मार्किट में रहने के लिये पहले से दस गुणा ज्यादा श्रम करना पड़ता है।

मुझे नौकरी मिल गई! मुझे नौकरी मिल गई। जब मैंने बताया कि मेरा बाप शेख चिल्ली का अवतार है तो योजना मंत्रालय ने मुझे नौकरी दे दी। बस पांच रुपये सिक्योरिटी डिपाजिट जमा कराना है। पहली तारीख को ज्वाइन करना है।
पांच रुपए कहां से आयेंगे।

तुम फिक्र न करो—मैंने पांच रुपये राजस्थान लाटरी का टिकट खरीदने के लिए रखे थे वह ले लो।

बेटा चन्दर के घर वालों को आज खाने पर बुला लो। तुम चन्दर को चाहती हो न।
नहीं आज हमारे कुत्तों ने खाना नहीं खाया। उसको किसी तरह ठिकाने लगाना है, लगे हाथ बात भी कर लेंगे।
मेरी शादी की बात करनी है?

अवतार जी आपने बहुत कुछ कर लिया। अब मुझे करने दीजिए। आपके बेटे चन्दर को घर जमाई बनाना चाहता हूं। आजकल घरेलू नौकर नहीं मिलते हैं न अवतार जी। यही एक तरीका रह गया है। मुझे कुत्ते पालने का शौक है समझ लूंगा एक और कुत्ता रख लिया।
शुक्रिया सेठ जी, बात यह है चन्दर उसी ब्रांड की सिगरेट पीता है जिस ब्रांड की मैं। किसी के पास खत्म हो जाये तो हम एक-दूसरे से मांग लेते हैं। वह आपके घर रहेगा तो सिगरेट उधार मांगने किसके पास जाऊंगा?

पिताजी आपने सेठजी की इंसल्ट की है। यह ठीक है हमें कुत्तों वाला खाना खिलाया गया लेकिन पौष्टिक तत्वों की उसमें कमी नहीं थी। सेठ जी मुझे भुट्टे भूनने का कोर्स करवाना चाहते थे उसका क्या होगा? वह बहुत बड़े आदमी हैं।

चन्दर अभी तुम बच्चे हो—बेटा बाप जिन्दा है। भुट्टे भुनने का कोर्स मैं करवाऊंगा तुमसे। दिन-रात मेहनत करूंगा। मेरे पास पुरानी धोतियां बहुत हैं।

मैं उन धोतियों को फाड़-फाड़कर रुमाल बना कर बेचूंगा और तेरी पढ़ाई का खर्चा निकालूंगा। आजकल रुमालों की बड़ी सेल है।

चन्दर तुम बड़े हो गये हो, अपनी जिन्दगी का फैसला करने का हक तुम्हें है। तुम अपने रुमाल बेचने वाले बाप को छोड़कर क्यों नहीं आते?
मेरे बाप ने लाटरी टिकट ले रखा है उसके ड्रा निकलने की इन्तजारी कर रहा हूं।

अवतार का हाथ धोतियां फाड़कर रुमाल बनाने वाली मशीन में आ गया है। डाक्टर को फोन करें।
डिम्पल को फोन करो। वह अपने मुहल्ले में लड्डू बांटेगी। यह अब उस पर हाथ नहीं उठा सकेगा।

पिताजी मैं जा रहा हूं, अब तो आप धोतियां फाड़ कर रुमाल भी नहीं बना सकते।
मुझे अपना भविष्य बनाना है। समोसे और पकौड़े खाते तंग आ गया हूं। सैंडविच हम्बर्गर और हाट डॉग खाना चाहता हूं।
नहीं

गुड न्यूज है ! हां गुड न्यूज ! तुम्हारा प्रोविडेंट फंड बना पन्द्रह हजार रुपए और काम पर एक्सीडेन्ट होने का कम्पेन्सेशन बीस हजार। तुम्हारे छोड़े रूमाल भी साढ़े तेरह रुपए में बिक गये। यह सब कुल मिला कर पैंतीस हजार के आसपास बने।

यह सब मेरे है बाबा जी ? एक ही झटके में सारे सपने पूरे कर दिये।

मुझे पहले पता होता एक्सीडेंट का इतना फायदा होता है तो थोड़ी-सी और मेहनत कर टांग भी मशीन में फंसा देता।

अब क्या रह गया है ! आराम ही आराम है। रमेश को भेज टिकटें मंगवा लेता हूं। हम एक और यात्रा वैष्णो देवी की कर लें। जिन दर्शकों से पहली यात्रा न देखी गई हो वह देख लेंगे।

पिता जी टिकटों का इन्तजाम नहीं हो सका। रेलवे काऊंटर पर भीड़ बड़ी थी।

तुम वैष्णो देवी की टिकटें तक नहीं ला सके ? जो वैष्णो देवी की टिकटें नहीं ला सका उसे कराची हलुवा हजम नहीं हो सकता, जो कराची हलुवा हजम नहीं कर सकता वह इस घर में नहीं रह सकता।

लेकिन इस घर में सैंकड़ों चूहे और काकरोच बिना कराची हलुवा खाये रह रहे है उनसे क्यों नहीं कहते आप!

मैंने अवतार को कई बार समझाया कि पान में इतना कत्था और तम्बाकू मत डलवाया कर। किसी दिन तेरा दिमाग पूरी तरह खराब हो जाएगा, वही हो गया।

बाबा जी मुझे समझ नहीं आता अब क्या होगा ? कैसे हमारा गुजारा चलेगा। दोनों बेटे धोखा दे गए।

बुरे वक्त में सब कुछ करना पड़ता है—मेरा मंगलसूत्र···

अवतार तुम्हारे पास तो खजाने की कुंजी है। तुम्हें जो प्रोविडेंट फंड का चैक मिला था बैंक जाकर उसकी फोटो-स्टेट कापी लाओ। उसे देखने लोग आयेंगे, चढ़ावा चढ़ायेंगे। प्रोविडेंड फंड इतनी आसानी से थोड़े ही मिलता है जितनी आसानी से तुम्हें मिला। बरसों चक्कर लगाने पड़ते हैं, ऐड़ियां रगड़नी पड़ती हैं। सिफारिश और खुशामद का सहारा लेना पड़ता है। तुम्हारा घर रिटायर्ड लोगों का तीर्थ स्थल बन जायेगा।

''मुझे क्या मालूम था यह सिचुएशन भी आएगी . . .वरना दारासिंह की दो-एक फिल्में भी देख लेता।''

सुनीता मुंह दबाकर हंसी और कमल ने चौंककर कहा—

''हांय . . .क्या हुआ ?''

स्वर कुछ ऐसा झटकेदार था कि सुनीता ने भी झटक से गर्दन उठाई और चंद सैकिंड के लिए उसकी उंगलियों की पकड़ ढीली पड़ गई . . .और फिर अचानक उसका घूंघट ही नहीं उठा था बल्कि आंचल ही सिर से उतरकर पीछे पहुंच गया था जिसे कमल ने पकड़ लिया था। सुनीता ने कुछ लजाकर, कुछ घबराकर कई बार फिर आंचल को थामकर घूंघट करने का प्रयत्न किया मगर दूसरे ही क्षण उसकी कलाईयां कमल ने पकड़ लीं—कमल ने मुस्कराकर कहा—-

''ऊं हूं . . .एक बार यह चांद बादलों से निकल आया, तो अब नहीं छिप सकता।''

सुनीता ने अपनी गर्दन पूरी झुका ली थी . . .उसके हाथ कमल के हाथों में रह गए थे। कमल उसके सुन्दर कोमल हाथों को देखता रहा . . .फिर अनायास उन्हें चूम लिया और बोला—

''लगता है तुम्हारे गले का रोग कुछ बढ़ गया है इसी लिए आवाज नहीं निकलती।''

सुनीता कुछ नहीं बोली --- गर्दन झुकाए रही . . .कमल ने ठंडी सांस ली और कहा—

''तो फिर किसी ने सच ही कहा था कि शादी से पहले लड़की बोलती है और लड़का सुनता है, शादी होते ही लड़का बोलता है, लड़की सुनती है . . .और शादी के कुछ समय बाद लड़का-लड़की दोनों बोलते हैं और पड़ौसी सुनते हैं।''

सुनीता के गले से बहुत भिंचा-भिंचा सा ठहाका निकल गया। कमल ने कहा—

''यह बात हुई ना . . .लगता है अब गला खुलता जा रहा है। अरे भई चंद घंटों की तो रात रह गई है . . .कुछ खाना खाने वालों ने मार ली, कुछ लड़कियों ने, बाकी जो रह गई है वह भी अगर मौनव्रत में बीत गई तो फिर हम लोग ऐसी दूसरी रात कहां से लाएंगे ?''

सुनीता ने बड़ी मुश्किल से दबी-दबी आवाज में मुस्कराकर पूछा—

''क्या बोलूं ?''

''कोई गीत ही सुना दो . . .तुमने ढेर सारी फिल्मों में ऐसे दृश्य देखे होंगे . . .भरे पूरे घर में सुहाग कक्ष है . . .परिवार के सभी लाग हैं और दुल्हा-दुल्हन आर. डी. बर्मन की ताल पर धड़ल्ले से गीत गा रहे हैं, वह भी 'डूइट'।''

''यह कोई फिल्म का सीन थोड़े है।''

''तो फिर कार्यवाही शुरू . . . .मुकद्दमे की।''

कमल ने सुनीता का चेहरा दोनों हाथों में लेकर उसके होंठों की ओर होंठ बढ़ा दिए तो सुनीता ने जल्दी-से बीच में हाथ लाकर कहा—

''ऊं हूं . . .यह नहीं . . .।''

''क्यों भई ? मेरे मुंह से क्या दुर्गंध आ रही है ? अरे रोज कोलगेट से ब्रश करता हूं।''

''जी नहीं . . .'' सुनीता ने धीरे से हंसकर कहा, ''हम दोनों एक-दूसरे से प्यार करते हैं ना।''

''प्यार न करते होते तो बात यहां तक कैसे पहुंचती ?''

''मगर जरूरी नहीं कि प्यार के माने मिलन के हों . . .प्यार तो पवित्र होता है . . .हमें शारीरिक संबंध की क्या जरूरत ?''

''अरे . . .तुम्हारी ऐसी-तैसी।''

कमल ने सुनीता को पकड़कर खींचा और दबोच लिया . . . .सुनीता भिंची-भिंची हंसी के साथ उसके सीने पर गिर गई—दूसरे ही क्षण कमल के होंठ सुनीता के होंठों पर रखे हुए थे।

□

कमल मैनेजर से आज्ञा लेकर चिक उठाकर भीतर घुसा तो भारी भरकम मैनेजर ने कुर्सी की पीठ से टेक लगाकर अपनी रौबदार आवाज में पूछा—

''कहिए . . .मैं क्या सेवा कर सकता हूं।''

''जी . . .।'' कमल ने एक लिफाफा निकालकर मैनेजर की ओर बढ़ाते हुए कहा, ''यह मिस्टर मेहरा ने दिया है।''

''मेहरा . . .मिस्टर रामप्रकाश मेहरा ?''

''जी हां . . .।'' कमल ने शिष्टता के सहा, ''वह मेरे फादर-इन-ला हैं''

मैनेजर ने लिफाफे से पर्ची निकालकर पढ़ा, फिर सीधा बैठता हुआ बोला—

''हूं . . .तो आप . . .आपने एम. कॉम फर्स्ट-क्लास फर्स्ट किया है एकाउंटेंसी में ?''

'यस सर . . .डिस्टिंक्शन के साथ।

''वैरी गुड . . .पहले कोई अनुभव ?''

'जी . . .इसी साल तो कॉलिज छोड़ा है।''

''हूं—'' मैनेजर ने फिर कुर्सी की पीठ से टेक लगाकर कहा, ''मिस्टर रामप्रकाश से हमारे अच्छे संबंध हैं . . .हम आपका नाम और पता नोट किए लेते हैं . . .अभी तो हमारी फर्म में कोई जगह खाली नहीं है . . .हां जब कभी कोई जगह खाली होगी हम पहला चांस आप ही को देंगे।

''मैनेजर ने उसका नाम और पता नोट कर लिया और कमल थके-थके कदमों से बाहर निकल आया . . .कुछ देर बाद वह निराश-सा सड़क पर चल रहा था। शादी को तीन महीने बीत चुके थे। इस बीच में स्वयं उसके पिताजी ने अपने विभाग से लकर अपने सारे ही जान-पहचान के लोगों के यहां प्रयत्न किया था मगर कमल को कोई नौकरी नहीं मिल सकी थी। सुनीता के पिता ने भी अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोड़ी थी . . .वह भी निरन्तर उसकी सहायता कर रहे थे मगर अभी सरकारी नौकरी तो एक ओर उसे कोई प्राइवेट नौकरी भी नहीं मिल पाई थी। कई जगह वह इन्टरव्यू भी दे आया था और यह जानकर उसका मन बुझ गया था कि उसके मुकाबले में सैकंड डिवीजन और थर्ड डिवीजन पास उम्मीदवारों को चुन लिया गया और उसे रिजक्ट कर दिया गया था। एक स्थान पर जब उसको ज्ञात हुआ कि एकाउन्ट क्लर्क की जॉब पर उसे छोड़कर एक बी. कॉम को चुन लिया गया था तो उसका जी चाहा था कि वह

अपनी डिग्री ही फाड़ डाले . . .वह दर्जनों प्रार्थना-पत्र तो दूसरे शहरों में भिजवा चुका था मगर वहां किसी ने नोटिस तक नहीं लिया था—वह सोचने लगा कि उससे तो अच्छा हरीश ही था मैट्रिक पास होते हुए भी तीन-चार हजार महीना कमा ही लेता था।

कमल के कदम और भी भारी हो गए . . . .वह थका-थका सा चलने लगा।

□

कमल घर में दाखिल हुआ तो उसके कानों से जगमोहन के खांसने की आवाज टकराई और साथ ही सरिता ने कहा—

''बाबूजी . . .तबीयत इतनी खराब है तो छुट्टी क्यों नहीं ले लेते ?''

''बेटी . . .''जगमोहन ने तेज-तेज सांसों के साथ कहा, ''मैं तो वहां बीमारी तक प्रगट नहीं कर सकता . . .नौजवान बेरोजगारों की भीड़ मंडराती फिरती है . . .हमारे मैनेजर के तो जाने कितने भांजे-भतीजे हर दो-तीन बूढ़ों की कुर्सियों पर नजरें लगाए बैठे हैं . . .जब तक कमल को नौकरी न मिल जाए मैं किसी प्रकार का खतरा मोल लेने को तैयार नहीं हूं।

कमल के दिल को एक धक्का सा लगा . . 'कितनी-मेहनत की है बाबूजी ने मुझे पढ़ाने में . . .अब डिग्री मिल गई है तो नौकरी का पता नहीं . . .आखिर कब मैं इन बूढ़ी हड्डियों को आराम दे पाऊंगा ?''

वह अपने कमरे की ओर बढ़ा ही था कि रसोई में से पारो निकली . . .उसे देखकर वह जल्दी से बोली—

''तू आ गया बेटे . . .कुछ काम बना ?''

''नहीं मां . . .उन्होंने भी नाम और पता नोट करके रख लिया है।''

''अरे . . .तो इसमें मुंह लटकाने की क्या बात है ? कौन से साल-दो-साल गुजर गए ?'' पारो ने मुस्कराकर कहा, ''जा! हाथ-मुंह धोकर खाने के लिए तैयार हो जा।''

कमल अपने कमरे में चला आया . . .सुनीता कमरे में ही थी उसने मुंह इस तरह लटका रखा था जैसे कमल से झगड़ा हुआ हो। कमल के मस्तिष्क को झटका लगा और वह धीरे से बोला—

''सुनीता . . .क्या बात है ? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है ?''

''हां-हां . . .बस रहने दीजिए . . .मुझे इन चिकनी-चुपड़ी बातों की जरूरत नहीं।''

''मगर हुआ क्या ?''

''क्या नहीं होता इस घर में, अरे सुबह-शाम, उठते बैठते ताने मिलते हैं—'ऐसी बहू आई है कि बेटे को नौकरी ही नहीं मिलती', 'ऐसी भाभी आई है कि भैया के होंठों से मुस्कराहट तक छीन ली है'।'' सुनीता का स्वर ऊंचा और क्रोध भरा था।

''अरे हाय-हाय . . .धीरे बोलो . . .वह लोग सुन लेंगे।'' कमल ने घबराकर कहा।

''सुनने दीजिए मैं आज सबको सुना देना ही तो चाहती हूं . . .सुनते-सुनते तो तीन महीने गुजर गए।''

अचानक बाहर से सरिता की तेज और खरखराती आवाज आई—

''भाभी . . .जरा बाहर तो आना''।

कमल के पैरों तले से जमीन निकल गई और सुनीता ने चिल्लाकर कहा—

''आती हूं . . . .डरती नहीं हूं तुमसे . . .सरकारी अफसर की बेटी हूँ।''

''अरे-अरे . . .।'' कमल ने सुनीता का हाथ पकड़ना चाहा।

''छोड़िए जी . . .आज फैसला होकर रहेगा।''

फिर इससे पहले कि कमल उसे रोकता सुनीता झपाक से बाहर निकल गई . . .कमल बौखलाकर उसके पीछे झपटा . . .आंगन में सरिता खड़ी थी। दालान में जगमोहन और रसोई के पास पारो। सरिता ने दोनों हाथ कमर पर रख कर कहा—

''हां . . .जरा अब तो कहना . . .क्या लगाई-बुझाई कर रही थीं, भैया से ?''

''एक बार नहीं दस बार लगाई-बुझाई करूंगी . . .भागकर नहीं आई, फेरे कराकर लाए हो तुम लोग . . .मगर इसलिए नहीं कि उठते-बैठते तुम लोगों के ताने सुनूं। अरे, अगर तुम्हारे भैया की नौकरी नहीं लगती तो क्या मैंने लोगों से मना कर दिया है कि इन्हें नौकरी न दें ?''

''हां-हां . . .तुमने मना किया है।''सरिता ने आंखें निकाल कर कहा, ''तुमने नहीं तो तुम्हारे भाग्य ने मना किया है वरना अब तक कभी की नौकरी मिल गई होती भैया को . . .इतने योग्य हैं—फर्स्ट क्लास फर्स्ट एम. कॉम।''

''सुन लिया आपने।''सुनीता ने रुआंसी आवाज में कहा, ''मेरे भाग्य फूटे हैं इसलिए आपको नौकरी नहीं मिलती . . .यह कोई नहीं देखता कि घर से ही रोनी सूरत लेकर जाते हैं . . .किसी के सामने यूं मुंह लटकाकर बैठेंगे तो सामने वाला क्या यह न समझेगा कि जिस नौजवान में नौकरी पाने के लिए ही उत्साह न हो वह कुर्सी पर बैठकर क्या जोश दिखाएगा।''

''क्या कहा तुमने . . .मेरे भैया का मुंह लटका रहता है ?''

''और क्या . . .अपने भैया का दोष मेरे सिर मढ़ती हो . . .कल बाबूजी कह रह थे कि जबसे बहू घर में आई है मुस्कराहट ही छिन गई है . . .मुस्कराते हैं तो लगता है अभिनय कर रहे हों''।

''हाय-हाय बहू, यह क्या कह रही हो ?''जगमोहन ने बौखलाकर कहा, ''मैंने कब कहा था ?''

''कल सुबह मांजी से नहीं कह रहे थे ? मांजी ने भी कहा था कि अच्छा होता इसकी जगह कोई दूसरी बहू आई होती तो मेरे बेटे को नौकरी जरूर मिल जाती।''

''हाय राम! भगवान की मार पड़े कहने वाले पर।'' पारो ने सीने पर हाथ रखकर आंखें फाड़कर कहा, ''इतना सफेद झूठ कह रही हो . . .लाज नहीं आती तुम्हें ?''

''सुन लिया आपने।''सुनीता की आवाज रुंध गई और आंखों में आंसू आ गए, ''मैं झूठी हूं और यह सच्चे हैं—मैं अकेली और पराई हूं ना . . .।''

हां-हां तुम झूठी हो।'' सरिता आंखें निकालकर बोली, ''बाबूजी और मां ने यह कुछ नहीं कहा था . . .मगर मैं कहूंगी . . .बार-बार कहूंगी . . .तुम

मदहोश मदहोश मदहोश मदहोश

पनवती हो . . .वरना भैया को नौकरी मिल गई होती . . .।''

कमल भौंचक्का सा खड़ा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है। सुनीता ने रोते हुए कहा—

''बस हद हो गई . . .मुझे यह सब सुनवाने के लिए ही अपना जीवन-साथी बनाया था . . .अब नहीं रहूंगी मैं यहां—एक मिनट के लिए भी नहीं।''

''हां-हां जाओ . . .अभी निकल जाओ।'' सरिता ने गुस्से से कहा, ''तुम्हें रोकता कौन है?''

''सरिता!'' कमल ने बड़ी मुश्किल से कहा।

''उसे क्या डांटते हैं . . .आपने सच ही कहा था . . .बहू के लिए सास ही काफी है . . .सास-ननद मिलकर एक और एक ग्यारह हो जाएंगे। मुझे पहले ही मां ने सावधान कर दिया था . . .अब तो मैं किसी मूल्य पर भी यहां नहीं रहूंगी।''

''अरे तो जाओ ना . . .केवल धमकी क्यों दे रही हो?'' सरिता हाथ नचाकर बोली—

''लाइए मांजी . . .मेरे पांच रुपये दे दीजिए।''

''कौन से पांच रुपये?''

''उस दिन जो आपने उधार लिए थे . . .मुझे . . .रिक्शा करना है।'' ''हाय राम! मैंने कब उधार लिए थे?'' पारो की आंखें आश्चर्य से निकल पड़ीं।

''नहीं . . .बाबूजी ने लिए थे शायद . . .।'' सुनीता सिसक कर बोली।

''बहू! तुम होश में नहीं हो शायद . . .जाओ, कमरे में जाओ।'' जगमोहन ने गुस्सा दबाते हुए कहा।

''मत दो कोई भी . . .पांच रुपये कोई बड़ी रकम नहीं होते . . .मैं पैदल ही चली जाऊंगी।''

''नहीं . . .तुम्हारे लिए हैलीकॉप्टर मंगवाया जाएगा।'' सरिता तुनककर बोली।

''हेलीकॉप्टर छत पर कैसे उतरेगा?'' सुनीता ने भोलेपन से पूछा, ''छत टूट जाएगी।''

''नहीं टूटेगी . . .मैं मेज पर छोटी मेज रखकर दो कुर्सियां छत के नीचे लगा दूंगी।''

''वचन देती है ना?''

''पक्का . . .।'' सरिता गम्भीरता से बोली, ''मगर कुर्सियां और मेजें टूट गई तो हम लोग खाना काहे पर खाया करेंगे?''

''मैं डैडी से कहकर चटाई भिजवा दूंगी।'' सुनीता ने गम्भीरता से कहा।

''वचन . . .!''

''पक्का वचन! सुनीता से गम्भीरता से कहा, ''मगर अब मेरा ऋण तो चुका दे।''

''मैं बाबूजी और मां की तरह नहीं हूं—लो।''

यह कहकर सरिता ने आगे बढ़कर सुनीता के गले में बांहें डाल दीं और उसे लिपटाकर चूम लिया। पारो, जगमोहन और कमल भौंचक्के से रह गए। सुनीता ने सरिता के गले में बांहें डालकर कमल से कहा—

''कहिए श्रीमन, नाटक पसन्द आया कि नहीं?''

''हे भगवान!'' पारो ने कलेजे पर हाथ रखकर कहा, ''तुम लोग नाटक कर रही थीं?''

''जी नहीं मांजी . . .।'' सुनीता ने कहा, ''उस आने वाले कल की रिहर्सल जिससे मुझे गुजरना है।''

''क्या मतलब?''

''अरे, जब आपके बेटे यूही मुंह लटकाए फिरा करेंगे, तीन महीने के ही थोड़े से समय में साहस खो बैठेंगे। चेहरे पर कोई जोश नहीं होगा तो इन्हें नौकरी देने का रिस्क कौन लेगा? आप ही बताइए बाबूजी . . .क्या मुंह लटकाने और साहस छोड़ देने से नौकरी मिलती है?

''तुम सच कहती हो बहू जगमोहन की आंखों में खुशी के आंसू कांप रहे थे, ''तुमने हमें जितना डरा दिया था उतनी ही अच्छी शिक्षा भी दी। जब तक चेहरे पर साहस और उत्साह की झलक न हो कोई भी भरोसा नहीं करता . . .अरे हम स्वयं ऐसे दोस्त से भी उकता जाते हैं जिसका हमेशा मुंह लटका रहे . . .और फिर नौकरी कोई बाजार में बिकने की चीज तो है नहीं कि गए और खरीद लाए . . .अरे जब हमने शिक्षा पूरी की थी तो हमारी नौकरी ही पूरे पांच महीने बाद लगी थी . . .और यह बात है चौंतीस बरस पहले की . .अब इन चौंतीस वर्षों में कितना भारी परिवर्तन आ चुका है . . .जरा सोचो . . .और फिर चार-पांच बरस तक तो मैं भी हिम्मत हारने वाला नहीं हूं . . .बीमारी तो लगी ही रहती है।''

''बाबूजी . . .हर बीमारी, हर चिन्ता का बस एक ही इलाज है।'' सुनीता ने नेताओं के समान घूंसा हवा में लहराकर कहा, ''निष्ठा, लगन, धैर्य, साहस, जोश और होठों की मुस्कराहट।''

फिर थोड़ी देर बाद सब लोग ठहाके लगा रहे थे . . .खाना भी खा रहे थे . . .और ऐसा लग रहा था जैसे इस घर के किसी भी व्यक्ति के चेहरे पर कभी चिन्ता की परछाई ही न पड़ी हो।

□

कमल जब सोने के लिए कमरे में दाखिल हुआ तो सुनीता मेज पर झुकी हुई कुछ लिख रही थी। कमल ठिठककर रुक गया . . .फिर वह धीरे-धीरे दबे पांव चलता हुआ सुनीता के पास पहुंचा तो सुनीता ने कहा—

''हूं . . .नो फाउल।''

''माई गॉड! क्या तुम्हारी गर्दन पर भी आंखें हैं?''

''जी नहीं . . .।'' सुनीता मुड़ती हुई बोली, ''मैं अपने स्वामी की सुगन्ध . . .दस गज दूर से सूंघ लेती हूं—च्यूंटी की नाक है मेरी . . .।''

''यह क्या कर रही हो?''

''पते लिख रही हूं कागज पर।''

''कैसे पते?''

''मैंने आज से एक अंग्रेजी साप्ताहिक पत्रिका मंगवानी आरम्भ की है . . .इसमें 'वांटिड' का कालम देखती हूं . . .आज ही के वांटिड कालम में ग्यारह पते निकले हैं . . .दिल्ली, बंगलौर, आगरा, मद्रास, पुणे और बम्बई के . . .कल यह प्रार्थना पत्र टाइप कराइए और भेज दीजिए फिर देखिए महादेवी सुनीता देवी का चमत्कार . . .अगर इन ग्यारह जगहों में से कोई एक जगह न मिली तो डाक खर्च जुरमाने समेत वापस।''

कमल ने खड़ी हुई सुनीता को चिपटा लिया और बोला—

''सच कहता हूं सुनीता, कभी-कभी यह अनुभव

शेष पृष्ठ ३६ पर

बन्द करो बकवास

कहानी एवं चित्रांकन :- रघुबीर सिंह

रईस नही हैं। स्मगलर हैं जो एक बार मीसा में बंद हो चुके हैं, वहाँ के लोग बहुत शरीफ हैं इसलिये वहाँ के सभी लोग उनकी नीचता और नंगेपन से डरते हैं।
अच्छा अब हम दोनों चलते हैं।
मिस कटर और रगड़ू जासूसी करने के लिये अदा गांव की तरफ चल पड़ते हैं।
31-A
मिस कटर और रगड़ू अदा गांव में पहुँच कर एक आदमी से पूछते हैं-
भाई साहब यहाँ कुलदीप सेन की मौत कैसे हुई ? इसके बारे में हमें कुछ बतायेंगे।
अदा गांव
हम कुछ नहीं बतायेंगे कि वह दरख्त से लटका हुआ था यदि हमने ये बता दिया कि उसके भाईयों ने उसे मार कर लटका दिया था तो उसके भाई हमें भी मार देंगे। हम इतना ही कहेंगे कि वह दिल के दौरे से मरा है हमें ऐसे ही बोलने को कहा गया है।
उन्हें बातें करते देख वहाँ एक और आदमी आता है।
अरे भईया ये मेमसाहब कौन हैं और ये तुमसे क्या पूछ रही हैं?
भईया हम इनसे कुलदीप सेन की मौत के बारे में पूछ रहे थे कि वह कैसे मरा है।
हम आपको यह नहीं बता सकते कि कुलदीप सेन को जानबूझ कर पागल करने की दवाईयाँ खिलाई गईं फिर उस का खून कर दिया।
आप फिक्र क्यूँ करती हैं जब तक आपके साथ ये जवाँ मर्द है तो हम हर रहस्य को जान कर रहेंगे।
यह दवाईयाँ किसने खिलाई और क्यूँ खिलाई यह जानना ही एक रहस्य है।
यदि आप सहपाल, हायपाल और उनकी माँ की चालों से बच गये तो ही कोई रहस्य जान पाओगे।
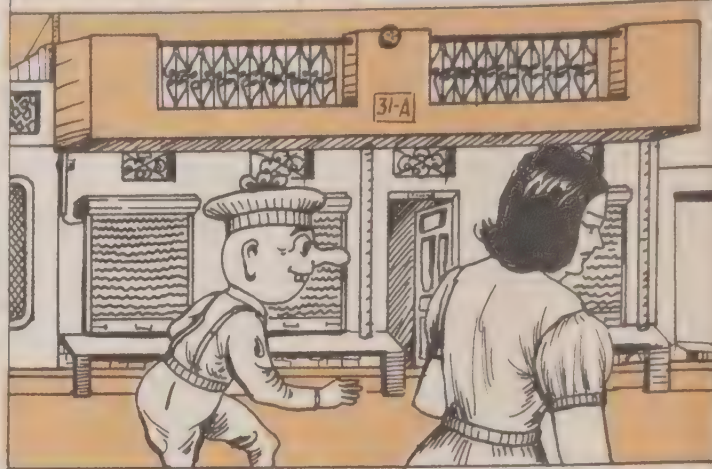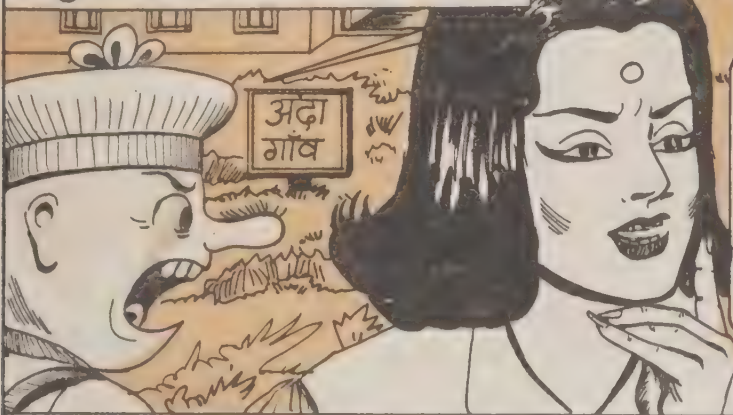
तुम्हारे कहने का मतलब यही है कि वह बहुत खतरनाक है।
क्या बतायें उनकी एक सगी रिश्तेदार, बम्बई से आई हुई थी जिसने उनके घर की कुछ ऐसी बातें जान लीं जिससे उनकी मान प्रतिष्ठा जाने का खतरा था।
तो फिर उसके बाद क्या हुआ?
होना क्या था हायपाल और उसकी माँ ने उस लड़की को नींद की गोलियाँ दे दीं ताकि वह मर जाये।
आप ये सब हमें क्यूँ बता रहे हैं?
हम आप को ये इसलिये बता रहे हैं कि हायपाल और सहपाल ने अपनी माँ की मर्जी से पहले पागल बनाया और फिर मार दिया। ये आदमी को मारना एक खेल समझते हैं।
मामला तो और भी दिलचस्प हो गया है, वह ऐसा कौन सा रहस्य था जिसके लिये उसकी माँ तथा सगे भाईयों ने उसे मौत के घाट उतार दिया।
यदि वह दरख्त से लटका पाया गया है तो इसका मतलब है ये खुदकुशी हुई है, कत्ल तो न हुआ।
अरे इस की रिपोर्ट तो हमें पुलिस ही दे सकती है कि पोस्टमार्टम में क्या आया है।
पोस्टमार्टम तो उन्होंने होने ही नहीं दिया और नाही पुलिस केस बनने दिया।
तो इसका मतलब है कि पुलिस उनसे पैसे खा गई।
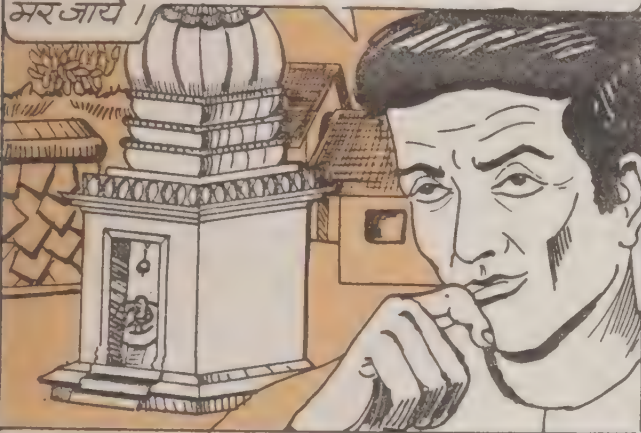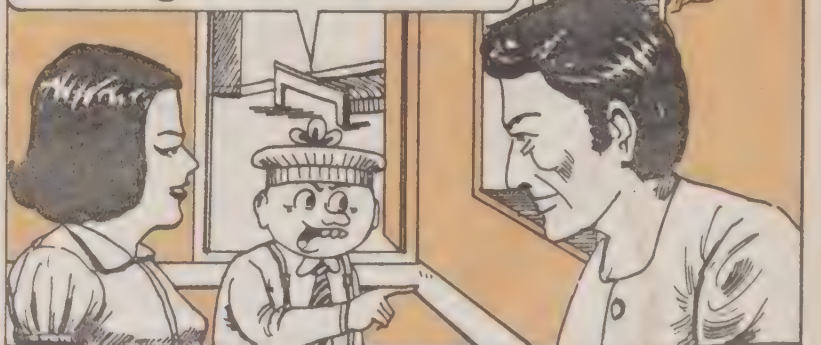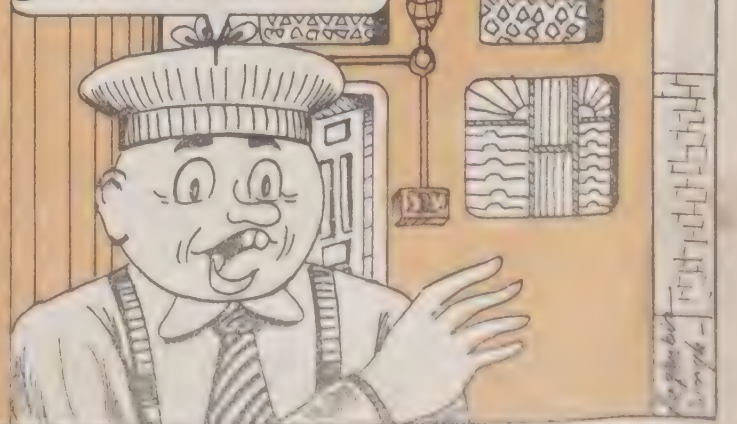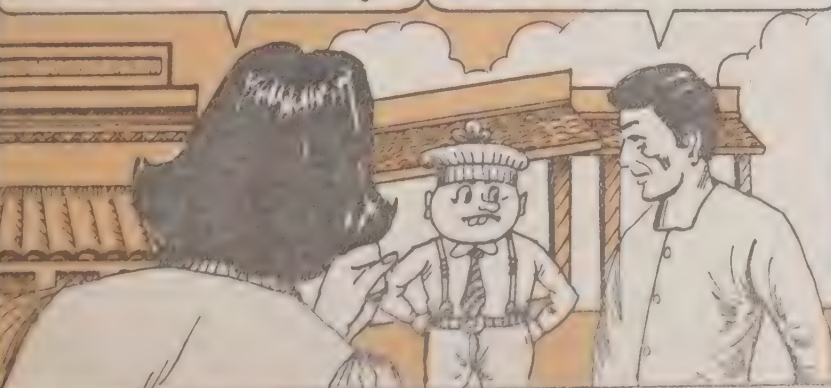
नहीं यहाँ पर एक दाऊजी का लड़का है जो मरने वाले की बहन के साथ ही पढ़ता है और कालेज में इकट्ठे आते जाते हैं उस लड़के का पुलिस में काफी रसूक है इसलिये यह केस डाक्टर के झूठे सर्टिफिकेट दिखा कर दबा दिया गया कि कुलदीप सेन की मृत्यु दिल का दौरा पड़ने से हुई।
मिसकटर जी कातिल बहुत होशियार है इनको रगड़ा देना मुश्किल है।
सहपाल और हायपाल को आते देखकर गाँव के वह दोनों आदमी चले जाते हैं सहपाल और हायपाल अपने गुण्डों के साथ वहाँ आकर कहते हैं-
सीधी तरह हमारे बगले की ओर चलो नहीं तो गोली तुम्हारे सीने के पार होगी।
रगड़ू और मिसकटर चुपचाप उनके बंगले की ओर चल पड़ते हैं।
वह जैसे ही बंगले में पहुँचते है तो उनकी माँ जादूगरनी कहती है-
हमारी जासूसी करने आये थे अब देखो हम तुम्हारा क्या हाल करते हैं?
हमारी बस्ती के कुत्ते बहुत दिनों से भूखे हैं, चलो उनका पेट भर जायेगा।
इनको खम्बों से बाँध दो इनका काम भी रात को तीन बजे के बाद करेंगे।
ताकि ये बेचारे कुलदीप सेन से मिलकर उससे खुद ही सारी बात पूछ लेंगे।
माँ इनके गले में रूमाल का फंदा डाल कर अभी मार दें।
अरे रात को मारना, सुबह बस्ती वालों से कह देंगे हमारे यहाँ दो रिश्तेदार आये थे जो रात को मर गये हैं जैसे कुलदीप सेन को जल्दी-जल्दी जला दिया था वैसे ही इन्हें जला देंगे।
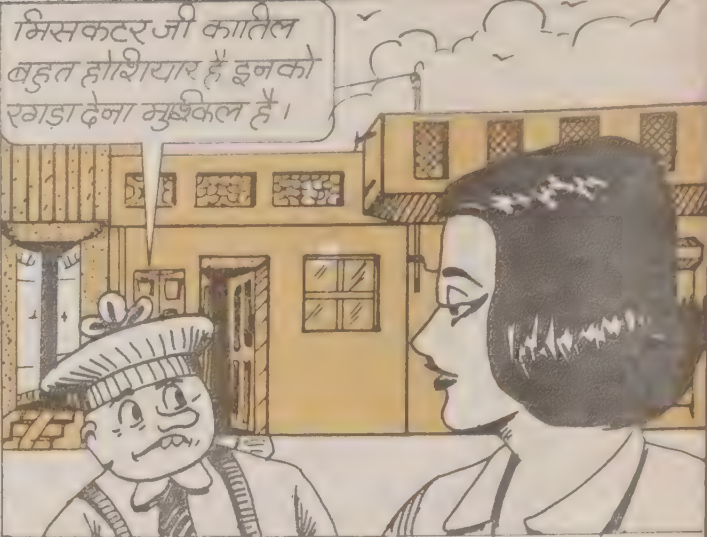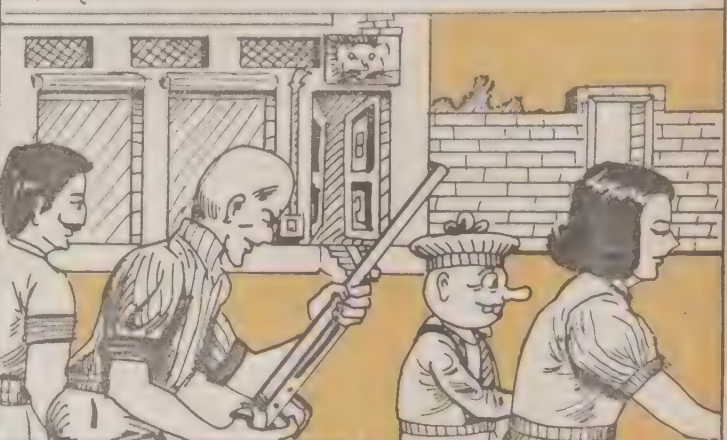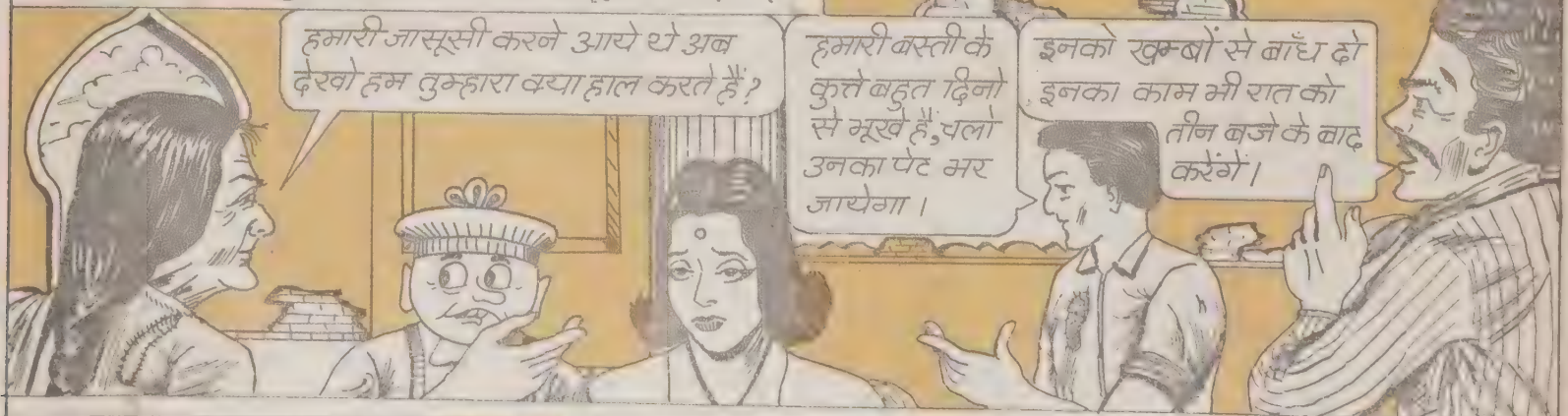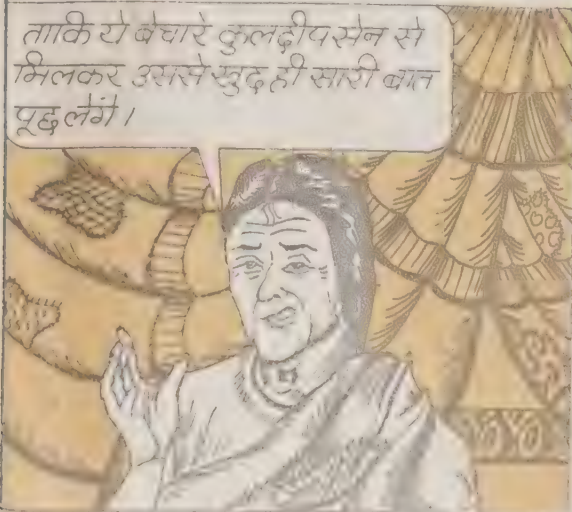
पुलिस का तो हमें कोई खतरा नहीं उन्हें तो मेरी मुनिया रानी ही सैट कर लेगी।
इतनी देर में रगडू की जेब में रखे ट्रांसमीटर से आवाज़ आती है -
हमें पता है आप पकड़े गये है, हम बहुत जल्द जीपें लेकर आ रहे है अब इनका अंत आ गया है हमने तुम्हारे वायरलैस सैट से सारी बातें सुन ली हैं।
अरे ये तुम्हारे पास क्या है ?
अभी तक तुमनें जो बकवास की है उसकी रिकार्डिंग हमारे सभी हैड-क्वाटरों में पहुँच चुकी है। थोड़ी देर में तुम्हारा खेल खत्म होने वाला है।
तभी उन्हें बाहर से आवाज़ आती है -
खबरदार अगर किसी ने भागने की कोशिश की तो गोलियों से भून दिये जाओगे। तुम चारों ओर से घिर गये हो।
तभी हायपाल की छोटी बहन दाऊ के लड़के के साथ मोटर साईकिल पर आती है और ये सब देखकर कि दो आदमियों ने उनके घर को घेर रखा है तो उस लड़के से कहती है -
डार्लिंग कुछ करो, मामला गड़बड़ लगता है, मेरे भाईयों को बचाओ।
दाऊ का लड़का माचू, पीचू के पीछे जाकर उनके ऊपर रिवाल्वर रखकर कहता है:-
खबरदार, अगर किसी ने हिलने की कोशिश की तो जान से हाथ धो बैठोगे चुपचाप अन्दर चलो।

माघू ,पीघू भी उनकी कैद में फंस जाते हैं और वह माघू ,पीघू,रगड़ू और मिसकटर को बाँध देते है ।
इनको रात के ठीक तीन बजे मार देंगे ।
मैं पहले ही कहता था इब कंगालो को रगड़ा देने से हमें क्या फायदा ।
ऐ बुढ़िया जादूगरनी सुना है तूने अपने ससुर को पागल करके मारा था और अपने पति व बेटे को भी पागल कर के मारा है। हम पर कृपा करो और हमें भी पागल करके ही मारो ताकि हम कुछ दिन और जी लें।
हमें भी पागल करने की दवाई दे दो ताकि हम सड़को पर घूम-घूमकर तो मरेंगे और फिर चौकी में अपनी सासू जी का नाम लगा देना ।
अरी जादूगरनी बुढ़िया पागल करने के बाद हमें मार कर दरख्त से लटका देना ताकि हमें तकलीफ कम हो।
हाय पाल सहपाल और लाडो मुनिया हमें डिनर तो करा दो रात को तीन बजे के बाद तो तुमने हमें मार ही देना है।
मैं कहता हूँ इन्हें अभी ही खत्म कर दें।
हाँ, इनका अभी काम तमाम कर दो ताकि यह ऊपर जाकर कुल-दीप सेन के साथ ही डिनर करलें
हायपाल जैसे ही एक रूमाल लेकर माघू के गले में फंदा डाल कर मारने लगता है कि तभी बाहर से इंसपैक्टर घोषकी एक गोलीहायपाल के कंधे में लगती है।
धाँय
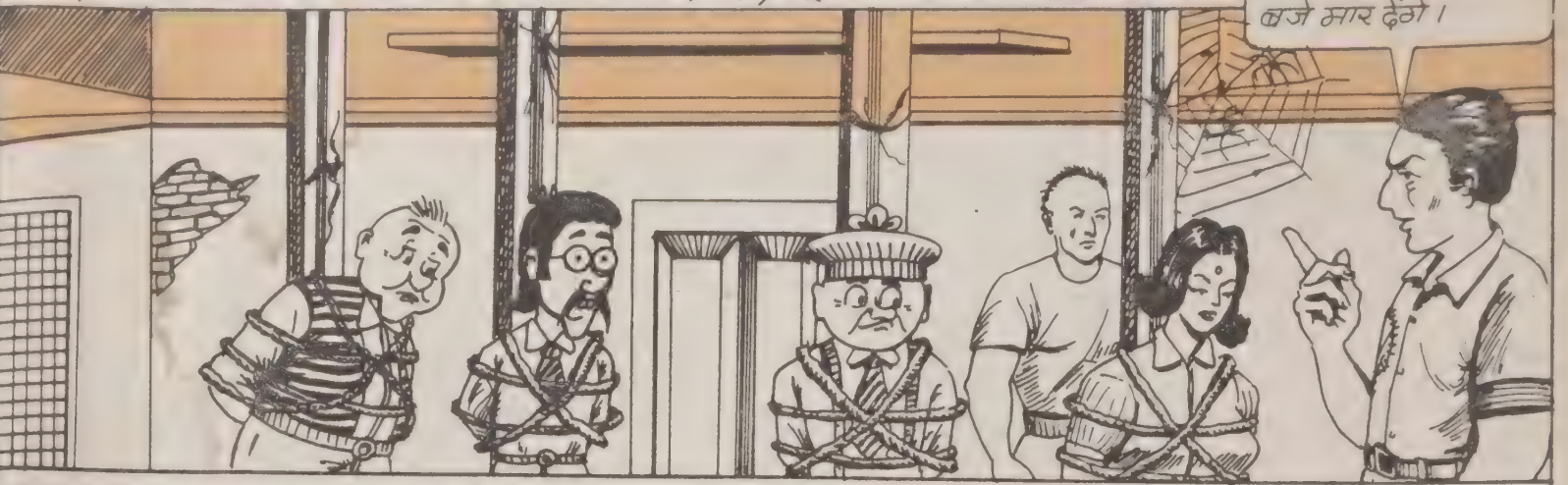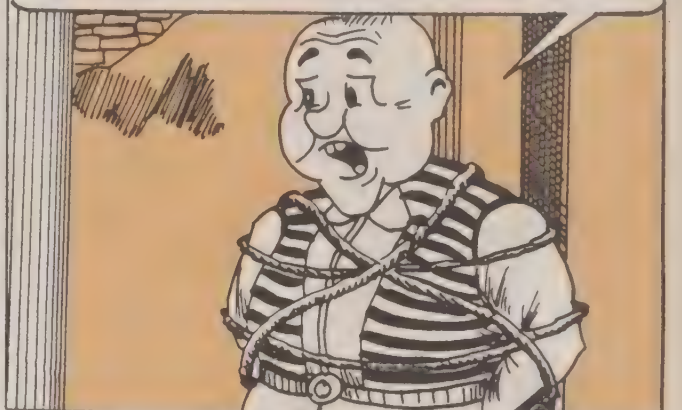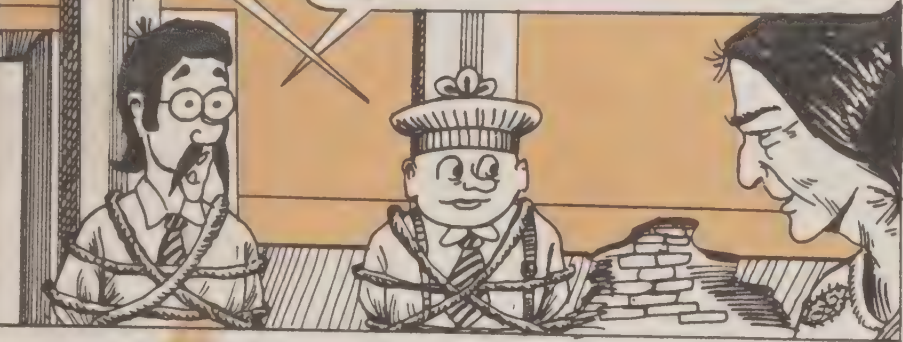
शेष पृष्ठ 33 पर
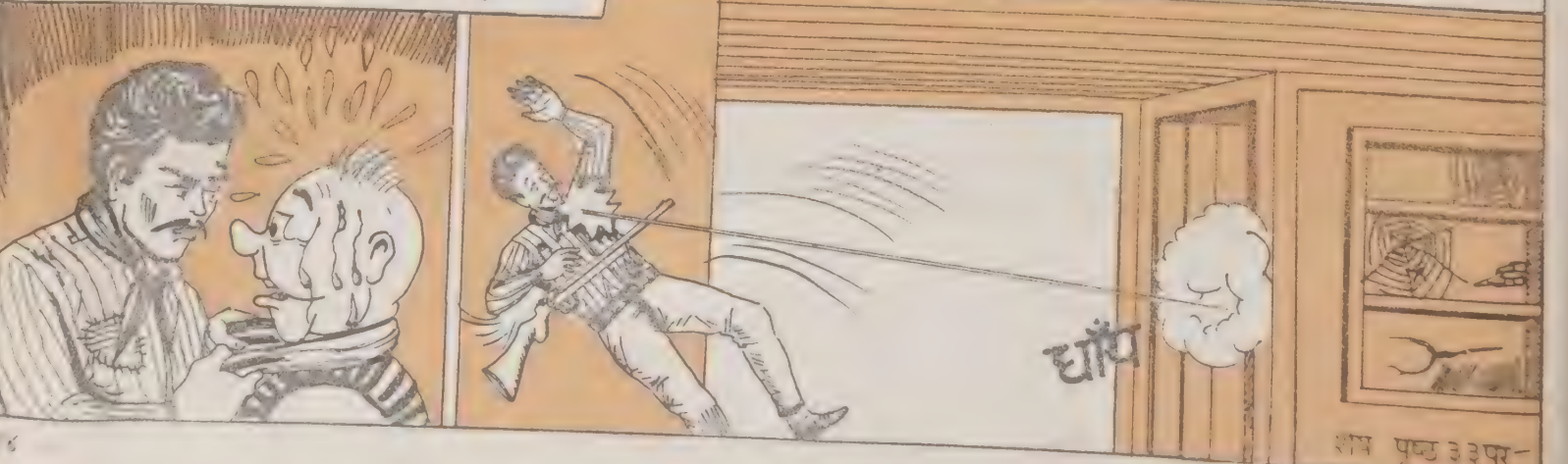
प्र० : रेटरों राकेट क्या है तथा स्पेसशिप या अन्तरिक्षयान इसका प्रयोग कब और क्यों करते हैं ?

उ० : स्पेसशिप में रेटरो राकेट का प्रयोग उस समय किया जाता है जबकि उसके भीतर बैठे यात्री, यान की गति को कम करना चाहते हैं। राकेट अन्तरिक्ष यान के लिए एक ब्रेक का काम करता है, जो यान के आगे बढ़ने से उल्टी दिशा में उसे खींच कर उसकी गति कम करने में सहायक होता है। इस ब्रेक की आवश्यकता तब पड़ती है जब कि अन्तरिक्ष यान की गति काफी घटाकर उसे 'ओरबिट' से निकाल दुबारा पृथ्वी के वातावरण में सुरक्षित लाना होता है।

अन्तरिक्ष यान ओरबिट में पृथ्वी के चारों ओर लगभग 17,000 मील प्रति घंटे की रफ्तार से चलता है। इस गति पर इसमें एक सेन्ट्रीफ्यूगल फोर्स या शक्ति होती है जो इसे पृथ्वी के चारों ओर चक्कर काटता रहता है। परन्तु इसको दोबारा पृथ्वी की कक्षा में लाने की समस्या रेटरो राकेट की सहायता से हल हुई है, यह राकेट अन्तरिक्ष यान से उसकी आगे बढ़ने की दिशा से उल्टी दिशा में छोड़ा जाता है। ताकि यह अन्तरिक्ष यान को वापिस खींचे जिससे उसकी गति धीमी हो। इससे यान की गति धीमी हो जाती है और सेन्ट्रीफ्यूगल फोर्स भी कम हो जाती है जिससे यह ओरबिट से निकल घूमता हुआ पृथ्वी की ओर बढ़ पाता है। यह यान बाद में वातावरण में उत्पन्न हुई फ्रिक्शन या रगड़ से और धीमा हो जाता है और अन्त में इसकी गति पैराशूटों की सहायता से घटाई जाती है।

चाँद पर उतरने के लिए जहाँ कोई वातावरण या हवा नहीं है एक लूनर मोडयूल घुमाया जाता है ताकि उसके रेटरो राकेट का मुंह गति की दिशा में हो। फिर मोड्यूल को रेटरो राकेट के बारबार छोड़ कर कन्ट्रोल किया जाता है, जब तक कि मोड्यूल चाँद पर पूरी तरह उतर कर रुक न जाये।

प्र० : संसार का सबसे ऊंचा रेलवे कहां है ?

उ० : संसार का सबसे ऊंचा रेलवे 'पेरु' में है। इस रेलवे की एक शाखा साईडिंग 15,844 फुट (समुद्र की सतह) की ऊंचाई तक जाती है, परन्तु इस मेन लाईन का सबसे ऊंचा पोईंट 15,688 की ऊंचाई पर है यहां रेलवे लाईन ला गलेश नामक सुरंग से गुजरती है।

'पेरु की सेन्ट्रल रेलवे के अधिकार में जितनी भी रेलवे लाईन हैं वे सब यूरोप और उत्तरी अमरीका के समान स्टेन्डर्ड गाज की है जिसका माप 4 फीट 8½ इंच होता है।

संसार का सबसे ऊंचा रेलवे स्टेशन भी 'पेरु' में ही है यह स्टेशन समुद्र की सतह से 15,685 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। सौ वर्ष पूर्व हेनरी डेगस नामक इन्जीनियर ने इस रेलवे लाईन का निर्माण किया था।

प्र० : संसार का सबसे पहला मानव हृदय ट्रांसप्लांट कब और कहां हुआ था ?

उ० : संसार का सबसे पहला मानव हृदय ट्रांसप्लांट 3 दिसम्बर 1967 को दक्षिणी अफ्रीका केपटाउन के ग्रूट शहूर हस्पताल में हुआ था। 20 सर्जनों की एक टीम ने, जिसके लीडर डाक्टर क्रिस्टिआन बर्नरड थे 55 वर्षीय लूब वाश्कानस्की का आपरेशन किया था। इनके अपने हृदय के स्थान पर, दुर्घटना में मृत 24 वर्षीय डेनिस एन डारविल, का हृदय लगाया गया था डेनिस की मृत्यु एक सड़क दुर्घटना में हुई थी। हृदय देने तथा लेने वाले दोनों का ही रक्त ग्रुप एक था तथा हृदय को ट्रांसप्लांट करने से पहले लगभग तीन घंटे तक ठंडे आक्सीजन युक्त रक्त में रखा गया था।

आपरेशन में पांच घंटे लगे थे तथा नया हृदय वाशकनस्की के हृदय से लगभग आधा था। आपरेशन पूरा कामयाब रहा था और कुछ ही सप्ताह बाद वाश्कनस्की बैठकर खा पी, तथा प्रसन्नता पूर्वक बातचीत कर सकता था।

डाक्टरों को ट्रांसप्लांट हुए हृदय को शरीर द्वारा अस्वीकार कर देने का डर था और साथ ही आपरेशन उपरांत किसी किस्म के रोग की छूत से भी शरीर की रक्षा करनी थी। बाद में एक माह के भीतर ही वाश्कनस्की की मृत्यु शरीर में इनफैक्शन हो जाने केकारण ही हुई थी।

जनवरी सन् 1968 में दोबारा फिलिप ब्लेबर्ग के हृदय के स्थान पर दूसरा हृदय ट्रांसप्लांट किया गया था। दांतों के डाक्टर ब्लेबर्ग की आयु इस समय 58 वर्ष की थी, जो बाद में एक खतरनाक लिवर और लंग इन्फैक्शन से बाल-बाल बचे लिवर और लंग इन्फैक्शन का कारण उनके शरीर द्वारा हृदय को अस्वीकार करने का प्रयास समझा गया था।

सन् 1968 के अन्त तक अमरीका, केनेडा, चेकोस्लेवेकिया और इजरायल में लगभग 100 हृदय ट्रांसप्लांट किये गए थे। 40 से भी अधिक रोगी स्वस्थ हो गए थे। ब्लेबर्ग 17 अगस्त सन् 1969 तक जीवित रहे थे। तथा दूसरे कुछ रोगी दो से ढ़ाई साल तक जीवित रहे थे। परन्तु फिर भी यह आपरेशन कम होते गए। दिसम्बर 1970 से मई 1971 तक केवल छः ही आपरेशन किये गए। सतर्कता ने उम्मीद का स्थान ले लिया था।

एक लघु कथा

कमीशन स्कूल

आजाद रामपुरी

देहाती अंचल में एक नई खोली गई शाला में नियुक्त एक मात्र अध्यापक को शहर में पान की दुकान करते पाया तो उनके एक मित्र ने जिज्ञासावश पूछा —

'क्यों भाई, तुम तो टीचर हो गये थे न।

'हाँ - हाँ।'

'तो फिर यह पान की दुकान कैसे ?

'यार मात्र ढाई सौ रुपट्टी ही तो मिलते हैं इस ससुरी अध्यापकी में भीषण महंगाई में उससें गुजारा नहीं होता था। टीचर दुकानदार ने उत्तर दिया तो मित्र ने और अधिक कौतूहल के साथ पूछ ही डाला—तो क्या टीचर शिप छोड़ दी ?

अरे नहीं।

तो फिर !

'तो फिर क्या ! दुकानदार अध्यापक ने जवाब दिया—'यह काम वहीं के एक पढ़े लिखे बेरोजगार युवक को एक सौ रुपये के 'सबलेट' (भाड़े) पर दे दिया है।

अधिक खोजबीन करने पर उस मित्र को पता चला कि उसने यह काम एक पाँचवी क्लास फेल अपने एक चचेरे भाई को पचास रुपये के कमीशन पर और उस चचेरे भाई ने ए० डी० आई० को पच्चीस रुपये का कमीशन देकर अपनी टीचर शिप को कायम रखा है। शाला बिना टीचर के कमीशन पर यथावत चालू है।

तपती धूप की हंसियाली छांव

गर्मियों के सूरज को देख सबके पसीने छूट जाते हैं और जीभ बाहर को लटक जाती है । जेठ की धूप में क्या तपन ही तपन है ? नहीं साहब, जेठ की धूप हंसी की ठंडी छांव भी पैदा कर सकती है । कुछ उदाहरण पेश हैं ।

दोपहर की धूप में पसीने की सड़ांध से सुवासित ठसाठस भरी बस में सफर करने के बाद उतरोगे तो चक्कर आ जायेंगे और किसी फिल्मी गाने को गाने की सीचुयेशन मिलेगी ।

पसीने की फिसलन के कारण सिपाही के हाथ से डंडा और चोर के हाथ से वेतन स्लिप हो सकता है । जो रोता होगा उसे हंसने का मौका मिला है ।

जेठ की धूप चेहरे पर से मेकअप का पर्दा पसीने से हटा देता है और आपको अपनी प्रेमिका की असली कुदरती सूरत के दर्शन हो जाते हैं । हुस्न का पहले जैसा रौब नहीं रहता । आप भविष्य में अकड़ कर उससे बात कर सकते हैं ।

पसीना कपड़ों को गीला करके पारदर्शी बना देता है और पर्दे के पीछे की चीज नजर आने लगती है ।

गर्मियों में बच्चों को आइसक्रीम खाने से कोई नहीं रोक सकता । उनके पास गर्मी धूप से लड़ने का यही एक हथियार है । माता पिता को आइसक्रीम खाने से रोकने का कोई कारण न सूझते देख हंसी आना स्वाभाविक है ।

धूप में आदमी के पास अखबार हो तो वह सिर पर रख सकता है। इस प्रकार वह अनपढ़ को बता सकता है कि शिक्षा और कहीं काम आये या न गर्मी में जरूर काम आती है।

गर्मी में आपको गर्दन तोड़ बुखार हो सकता है। हस्पताल की हसीन नर्सों से सम्पर्क का संजोग बनता है।

गर्मी की धूप भरी दोपहरी में गलती से आप नंगे पैर छत पर चले गये या टैरेस पर निकल आये तो तपा फर्श आपको भारत नाट्यम या कुचीपुड़ी डांस करना सिखा देगा।

गर्मी की धूप में नम्बर वाले चश्मे से आप सिगरेट या पाइप सुलगा सकते हैं। माचिस उधार मांगने की जरूरत नहीं पड़ती।

गर्मियों में कारें भट्टी की तरह तप जाती हैं। कार वालों को घोर कष्ट में देख हंसने का आपको एकमात्र सुअवसर मिलता है।

गर्मी में चूल्हे के पास बैठ कर गृहिणी के पसीने छूट जाते हैं। इतनी शक्ति नष्ट हो जाती है कि उसके पास पति से लड़ने की भी ताकत नहीं रहती. घर में अपूर्व शांति रहती है।

वेस्ट इन्डीज में क्रिकेट श्रृंखला भारत ने क्या खोया-क्या पाया ?

वेस्ट इंडीज के विरुद्ध श्रृंखला भी भारत 0-2 से हार गया। किसी भी टेस्ट या श्रृंखला के हारने पर दुख होना स्वाभाविक है पर इस दुख में वह दर्द या भुंभलाहट नहीं है जो पाक भ्रमण पर श्रृंखला-पराजय पर हुयी थी। तब हम जीतने की आशा लेकर गए थे और केवल चार खिलाड़ियों—इमरान, जहीर, मियांदाद और मुदस्सर नजर से पिट गए थे।

पाक श्रृंखला में हमने बहुत कम पाया और खोया बहुत अधिक ! विश्वनाथ एवं दोषी जैसे दिग्गज इस श्रृंखला की भेंट चढ़ गए। गावस्कर जैसे खिलाड़ी एवं कप्तान की प्रतिष्ठा में कमी आयी।

उपलब्धि के नाम पर मोहिन्दर की वापसी तथा एक नए आल राउंडर बलविन्दर संधू की खोज रही।

जब वेस्ट इंडीज का दौरा आरम्भ हुआ तब कप्तान के बदलाव के बावजूद यह सुनिश्चित था कि भारत हारेगा। कितने अंतर से यही इस श्रृंखला में निर्णय होना था।

भारत पहला व चौथा टेस्ट हार गया। फिर भी भारतीय प्रदर्शन आशा से कहीं अधिक अच्छा रहा।

भारत की तरफ से पांच शतक एवं ग्यारह अर्धशतक लगाये गये जबकि मेजबान टीम ने आठ शतक व आठ अर्धशतक लगाये। इसकी तुलना में पाक दौरा बड़ा असफल रहा था। भारत की तरफ से छः शतक लगाये गए जबकि भारत के विरुद्ध बारह शतक बनाये गये थे।

प्रति विकेट रन की तुलना में भी भारत जरा सा पीछे रहा। मेजबान इंडीज टीम ने 75 पारियों में (दस बार अविजित) 2242 रन (औसत 40.76) बनाये जबकि भारतीय टीम ने 87 पारियों में (बारह बार अविजित) 2308 रन (औसन 30-77 रन) बनाये।

अगर यह कहा जाए कि यह श्रृंखला भारत कपिल देव की अनुभवहीन कप्तानी के कारण हारा तो शायद गलत न होगा। कपिल श्रृंखला में पांचों टास हारा। यही नहीं, नाजुक मौकों पर वह सही निर्णय नहीं ले पाया।

उदाहरण के लिये प्रथम टेस्ट अनिर्णीत दिशा की ओर अग्रसर था परन्तु अचानक ही सारी टीम आऊट हो गयी और कपिल के अनुभवहीन नेतृत्व का लाभ उठाकर लायड एण्ड कम्पनी ने 90 मिनट में 172 रन बनाकर विजय हासिल कर ली।

इसी प्रकार दूसरे टैस्ट में जबकि वेस्ट इंडीज के एक रन पर तीन विकेट गिर गये थे तो कपिल को अपने गेंदबाजों को जल्दी-जल्दी बदल कर 'दबाव' बनाये रखना था पर उसने संधू को काफी देर तक लगातार गेंदबाजी देकर स्पिन-आक्रमण में अनुचित विलम्ब कर दिया।

दरअसल, नेतृत्व की दृष्टि से दोनों कप्तानों के अनुभव में जमीन-आसमान का अंतर था। कपिल यदि प्राइमरी (पहली से पांचवी) का विद्यार्थी था तो क्लाइव लायड पी. एच. डी. (54 टैस्ट)। कपिल चाहता तो लायड से कप्तानी के दो-चार दांव-पेंच सीख सकता था।

कप्तानी की दृष्टि से भले ही कपिल असफल रहा, पर खिलाड़ी के तौर पर वह सफल रहा · गेंदबाजी में उसने भारत की तरफ से सर्वाधिक विकेट लीं तथा बल्लेबाजी में भी उसका स्थान दूसरा रहा।

वैसे यह श्रृंखला धाकड़ बल्लेबाजों की रही। कुल गिरने वाली 112 विकेटों में से तेज गेंदबाजों को 77 प्रतिशत (86 विकेट) मिले। राबर्ट्स 34 विकेट, मार्शल 21 विकेट कपिल 17 विकेट तथा होल्डिंग 13 विकेट लेकर इस श्रृंखला में छाये रहे।

लगे हाथ स्पिनरों की दयनीय स्थिति पर भी नजर डाल लीजिये। शास्त्री एवं वेंकट दस-दस विकेट, गोम्स तीन, रिचर्डस एक, मनिन्दर दो विकेट प्राप्त कर सके।

रवि शास्त्री ने इस श्रृंखला में अपने आपको एक आल-राऊंडर के रूप में स्थापित कर लिया। कपिल देव के बाद वह भारत का नम्बर दो हरफनमौला खिलाड़ी बन गया है मदनलाल एवं संधू भी इसी श्रेणी के खिलाड़ी हैं पर शास्त्री के प्रदर्शन ने उन्हें पीछे धकेल दिया है।

इस श्रृंखला में सर्वाधिक निराशा उ[illegible] खिलाड़ी से हुयी जिस पर सर्वाधिक भरोसा था। जिसे भारत की आधी शक्ति माना जाता था। मेरा संकेत गावस्कर की तरफ ही है। ऐसा अनुमान था कि कप्तानी के दायित्व [illegible] मुक्त होकर वह बेहतर बैटिंग करेगा पर तृती[य] टेस्ट में शतक के अतिरिक्त उसका प्रदर्श[न] उसकी अपनी प्रतिष्ठा के विपरीत रहा। इ[स] श्रृंखला में उसने 30.00 रन की औसत प[र] 240 रन बनाये जबकि पाक-भ्रमण पर गावस्कर ने 47.11 की औसत पर 434 रन बनाये थे। यदि इस श्रृंखला से उसकी शतकीय पारी हटा दी जाए तो उसने आठ पारियों में 93 रन (औसत 11.63) बनाये।

कुल मिलाकर भारत की दृष्टि से यह श्रृंखला मोहिंदर अमरनाथ की रही। कपिल देव व शास्त्री प्रशंसनीय रहे। अशोक मल्होत्रा गुरशरण सिंह, मनिन्दर, मोरे, शिवराम कृष्ण ने निराश किया तथा अब दोनों सलामी बल्लेबाजों का विकल्प ढूंढ़ने का समय आ गया है।

हंसना मना है

एक व्यक्ति अपने मित्र के पास बैठा शेखी बघार रहा था बोला, 'अरे, मैं तो इतना बहादुर हूं कि शेर की भी परवाह नहीं करता, जब मैं अफ्रीका में था, तो एक दिन रास्ते में मुझे शेर मिला जो दौड़ता हुआ आ रहा था, मेरे पास बन्दूक भी नहीं थी, मैंने आव देखा न ताव, एक बाल्टी पानी लेकर उसके सिर पर उंडेल दिया, और वो वापिस भाग गया !'

'बिल्कुल ऐसा ही हुआ होगा' सुनने वाले ने बोर होते हुए कहा 'मैं भी उन दिनों अफ्रीका में ही था और वही शेर मुझे मिला था, जब मैंने उसकी कमर थपथपाई तो गीली थी।'

एक शराबी समुद्र तट पर नंग धड़ंग चलता जा रहा था। उसने अपने कपड़े अपनी बांह पर लटका रखे थे तभी एक पुलिस अफसर ने उसे देखा, पास जाकर पूछा, 'कपड़े अपनी बांह पर लटका 'बीच' पर नंगे घूमने की क्या तुक है ?'

'अरे ! आफीसर पीछे जाकर कपड़े पहनने के लिए मुझे कोई झाड़ी ही नहीं मिल रही।'

फिनिक्स

एक और अमरीका का उपग्रह फिनिक्स ९११ परमाणु शक्ति चालित खराब हो गया है और धरती की ओर गिरता जा रहा है परसों तक वह साबुत या टूट कर धरती के किसी भी भाग में गिर सकता है—जिस व्यक्ति को उपग्रह का कोई भाग सबसे पहले·······
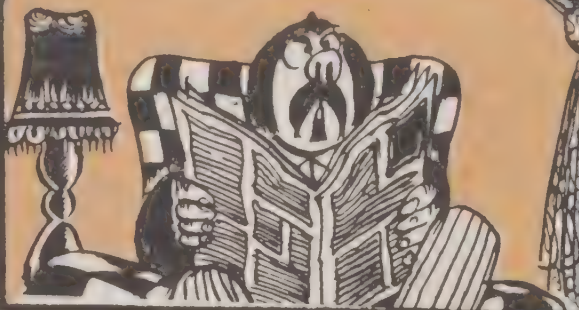
मिलेगा—उसे दस लाख रुपये दिए जायेंगे। बस जैसे ही उपग्रह का टुकड़ा मिले निकट के अमरीकी दूतावास या अमरीकी सूचना केन्द्र को सूचित कर दो। वह टायम नोट करेंगे। आपके दावे की जांच करेंगे—सारी बातें सही होने पर और जगहों की रिपोर्ट तुलना करने के बाद इनाम दिला देंगे।
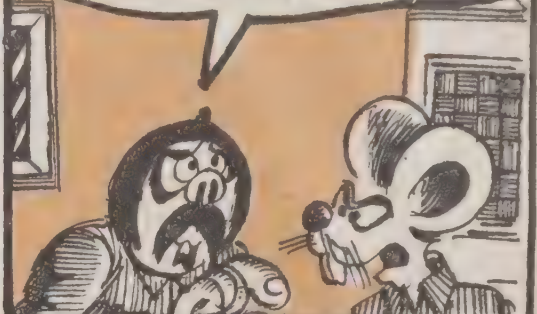
...ग दिन कहता है कि वह टुकड़ा मुझे ही मिलेगा। मेरी जन्मपत्री में लिखा है तेतीस वर्ष की आयु में मेरे भाग खुल जायेंगे। धातु सुख का योग है। उपग्रह भी तो धातु का ही बना होता है। अगर वह मुझे मिल गया तो मेरा जीवन फाइव स्टार होटल बन जाएगा।
अगर मुझे मिल गया तो मैं उसे अपने घौंसले में सजाऊंगा।
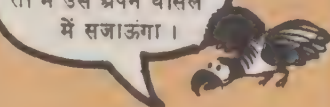
मुझे भी तो मिल सकता है। अगर मुझे मिल गया तो मैं अपनी सींगें सोने के पानी में मढ़वाऊंगा, कानों पर चांदी के वर्क चढ़वाऊंगा। फिर मैं घास नहीं खाऊंगा—रशियन सलाद खाऊंगा और पानी की जगह पाइन एपल जूस पीऊंगा।
लगता है बहुत से प्राणी उस उपग्रह से सपने सजाए बैठे हैं।

...स दुनिया में कम्पटीशन बोत ...ढ़ गया है। कोई किसी का चैन ...से रोटी नहीं खाने देना चाहता। मुझे एकांत में अपना प्लान तैयार करना होगा।
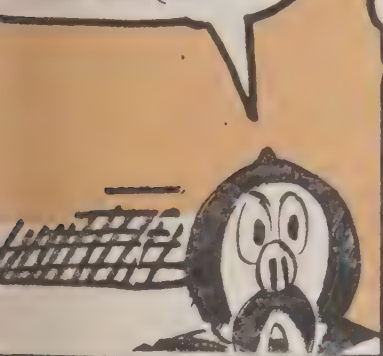
यहां बैठ कर अपने दिमाग के कम्पटीशन सक्सेस रिव्यू का लेटेस्ट ईशू पढ़ूंगा—शहर छोड़कर खुली जगह में आया तो यहां भी जंगली जानवर मेरी योजना में अपनी टांग अड़ाने लगे, वहां गरीब चंद और पिलपिल अड़ाते थे।
हुं ह!

अगर उस उपग्रह का टुकड़ा मुझे मिल जाए तो अपनी खोह को दीवारों पर पेंट करवाऊंगा—मेरी लैक सुपरसैंस की जोड़ी अमीन सायानी और मिस्त्री जी को बुलाऊंगा—फिर मैं घास में खाना ढूंढ़ता थोड़ ही फिरूंगा। काबुल से बादाम और अखरोट के पैकेट मंगवाऊंगा बाई एयर। उपग्रह का टुकड़ा यहां आस पास गिरे तो मैं उस तक दौड़ने में तुमसे बाजी मार ले जाऊंगा—मेरे जितना तेज नहीं दौड़पाओगे।
हुं हं।

...द हो गयी—मैं अब इस दुनिया में कोई अन्याय सहन नहीं ...रूंगा। जो मुझसे टकराएगा वह मेंदे जितना बारीक पिस ...एगा। उपग्रह का टुकड़ा मेरा है और रहेगा। जो उसे ...थ लगाने की कोशिश करेगा मैं उसके हाथ तोड़ दूंगा। किसी ने पंजा उसकी तरफ ...ढ़ाया तो उसका पंजा काट खाऊंगा।
हाथी के सूंड का क्या करेगा?

इस दुनिया में कोई दबे तो सब उसी को दबाने लगते हैं।
अभी-अभी यह जिराफ कितना लम्बा था और पलकें झपकते टिड्डे के बराबर बन गया। यह या तो बड़ा जादूगर है या अल में तोला, पल में माशा अली है।
अब मैं पहले वाला सिलबिल नहीं रहा। मैंने सब सबसे लड़ने का फैसला कर लिया है। अब देखते रहना उपग्रह का टुकड़ा मेरे से कोई नहीं छीन सकेगा।
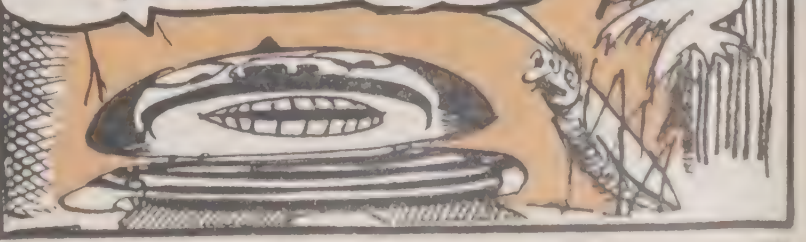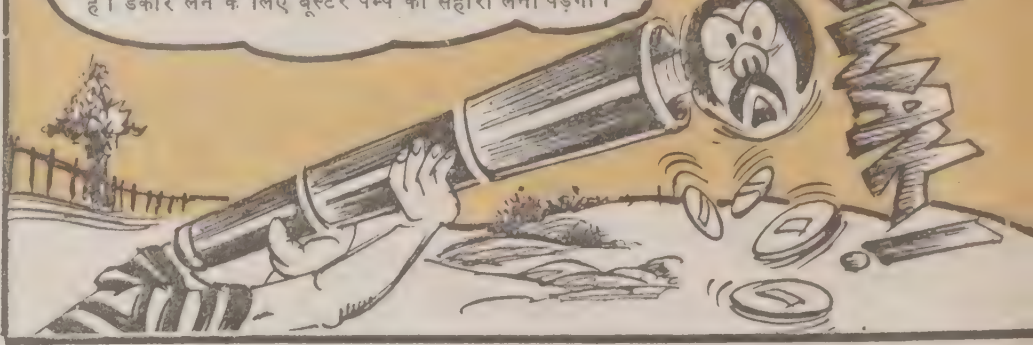
ओहो, चलो कोई बात नहीं भापा जी, अब इस नली में छेद निकाल कर इसकी शहनाई तो बन सकती है।
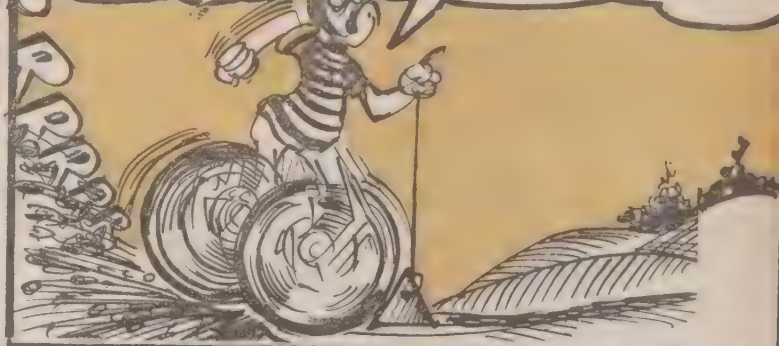
अब इस मूर्खानन्द को कौन समझाए कि उपग्रह गिर भी चुका है आस्ट्रेलिया के पास समुद्र में और उसका कोई टुकड़ा वुकड़ा कहीं धरती पर नहीं गिरा। सुबह आठ बजे वाली न्यूज सुनी होती तो पता भी होता।

तभी आसमान से गिरता हुआ एक चमकदार टुकड़ा सिलबिल को नजर आता है।

सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये

राजेन्द्र वेदी, सितारगंज : गरीब चन्द जी, क्या आपको साइकिल चलानी आती है? यदि हां! तो एक सितार गंज की चुहिया आपके साथ साइकिल पर बैठकर दिल्ली की सैर करना चाहती है। क्या आप राजी हैं?

उ० : अब तक आप उसे बोट में बैठा कर नैनीताल में मल्लीताल से झल्लीताल तक की सैर कराते रहे, अब सैकंड हैंड होने पर मेरे साइकिल के कैरियर पर बिठा कर छुट्टी पाना चाहते हो?

अशोक जौहर सांवरियां, देहरादून : प्यार में जब जूते पड़ते हैं तो उन्हें तकदीर क्यों कहते हैं?

उ० : इश्क में आदमी शर्म हया खो बैठता है, जूतों को तकदीर और खच्चर की लीद को हलवा कहने लगता है।

प्र० : गरीबचंद जी, बेवफा प्रेमिका अपने प्रेमी को घोड़ी पर बैठा देखकर क्या कल्पना करती है?

उ० : हैरान होती होगी अंधे के हाथ बटेर कैसे लगा? इसे तो मुंह उल्टा करके गधे पर बैठा होना चाहिये था। सच बताना यह किस्सा आपका अपना तो नहीं है?

पंकज वार्ष्णेय, अलीगढ़ : अंकल आप दीवाना में डाक्टरी सलाह प्रकाशित करें।

उ० : दीवाना किशोरों और युवकों की पत्रिका है। इस उम्र में बिमारी की चिन्ता करना दुर्भाग्यपूर्ण है। बस एक उदासी की बिमारी हो सकती है। और उसका इलाज हमारी पत्रिका है।

प्र० : गरीब चंद जी आपका दुश्मन कौन है?

उ० : मेरा दुश्मन सरकारी विभाग IDPL है। इंडियन ड्रग्ज एण्ड फार्मेस्यूटिकल लिमिटिड जो चूहे मारने की दवा बनाता है।

विनोद कुमार पुरसवानी, कोटा : क्या यह सही है कि आपके मुंह में सिर्फ दो ही दांत हैं?

उ० : क्या आपके आंखों में मोतियाबिन्द हो गया है। मेरी मुंह फाड़ी तस्वीर हर अंक में छपती है जिसमें दांतों का क्लोजअप होता है।

केवल प्रकाश दुआ, काशीपुर : इश्क करने से हिम्मत बढ़ती है या घटती है?

उ० : प्रेमिका का बाप शिकारी हो तो उम्र घटती है।

प्र० : गैर कब अपने बन जाते हैं?

उ० : जब उनकी लड़की आपसे लव मैरिज कर लेती है।

प्र० : मैंने जीवन में कोई उन्नति नहीं की ऐसा क्यों?

उ० : आपने तिकड़म लड़ाने की विद्या नहीं सीखी होगी। अब भी मौका है।

प्र० : चांद जमीन पर कब उतर आता है?

उ० : कभी नहीं उतरता। कबियों की खोपड़ी पर उतरता हो तो खुदा जाने।

उ० : दौलत के नशे में आदमी इन्कम ... वालों की धमकियों के डर से शराब का ... करता है। और प्रेम के नशे में प्रेमी या प्रे... की धमकियों के डर से। दोनों सूरतों मे... पर नशा करना पड़ता है।

प्र० : प्यार में धोखा खाने के बाद क्या ... चाहिए?

उ० : स्वयं को अनुभवी समझकर अ... चाहिये और गला फाड़ कर दोस्तों को ... यह बाल धूप में सफेद नहीं किये हैं।

राहुल गोदीका, जयपुर : गरीबचंद जी, ... व्यक्ति के ना कहने पर ये दुनिया उसकी प्र... क्यों करती है?

उ० : दुनिया समझ लेती है कि यह ग...

श्याम गगनानी, मुर्तिजापुर : अगर देश में फिर से एमरजन्सी लागू की गयी तो क्या होगा!

उ० : कोई भी और कुछ भी आती जाती रहे कुछ नहीं होगा। अगर कुछ हो सकता है तो तब जब अचानक सब देशवासियों में अक्ल आ जायें!

दिनेश कुमार चिटकारा, फरीदाबाद टाऊन : प्यारे गरीब चंद जी, अगर किसी दिन आपको किसी बिल्ली ने दबोच लिया तो हमारे पत्रों का जवाब कौन देगा?

उ० : इसकी आप चिन्ता न करें। हमारे देश में हर कुर्सी के पीछे दस हजार उम्मीदवार यही आस लगाये खड़े हैं कि जो बैठा है उसकी किसी तरह छुट्टी हो।

गुमानसिंह राजपूत, फिरोजपुर : यदि दोस्त की बहन बहन होती है और दोस्त की मां-मां होती है तो दोस्त की पत्नी···?

उ० : यह प्रश्न आप अपनी पत्नी से पूछिये। वह इसका उत्तर सही-सही देगी। प्रश्न पूछने से पहले अस्पताल के एमर्जेंसी वार्ड वालों को फोन करें।

सुखविन्द्र जौड़ा 'सीटी', कृष्णा पार्क : दौलत के नशे में और प्यार के नशे में क्या अन्तर है?

गणेश नहीं है। हां कहने वाला यस मैन हु... न! यस मैन चमचा हुआ। चमचे की ... क्यों प्रशंसा करे? आप ही बतायें।

प्रेमबाबू शर्मा, बगीची पीरजी : किसान... हाथ में हल, जवान के हाथ में गन, पहलव... के हाथ में बल तो मेहमान के हाथ में?

उ० : मेजबान के बच्चों के लिये मिठाई ... फल।

प्रहलाद जसवानी कृष्ण कन्हैया, मण्डल... चाचा जी दौलत किसको बुरी लगती है?

उ० : जिसके मां-बाप उन्हें यतीम छोड़ ... और खुद दौलत कमाने का फार्मूला न जा... सके।

रघुबीर सिंह राही, नई दिल्ली : 'गरीबी ... अपने भी बेगाने क्यों हो जाते हैं?'

उ० : भाई अगर गरीब के अपने गरीबी ... उससे बेगाने न हो जायें तो वह उनसे उधा... मांग कर उन्हें भी गरीब नहीं बनायेगा।

पृष्ठ २४ से आगे

कुलदीप सेनने लोगों से बहुत-सा कर्ज ले रखा था, किसी को चैक देकर बीस हज़ार, किसी से हुंडी पर पचास हज़ार और किसी-किसी से तो उसने पच्चीस-पच्चीस हजार ले रखा था अगर वह रूपये हम देने लगते तो हमारा दिवाला निकल जाता। हमें मारें मत, हमने सच बता दिया है।

इसीलिये हम दोनों भाईयों ने और माँ ने उसे मारना ही बेहतर समझा और हमनें बड़ी स्कीम से मार दिया।

यदि हमें पता होता कि खून कभी नहीं छिप सकता तो हम उसे मार कर दरख्त से न लटकाते, ना ही पागल बनाते।

हम रिमांड और नहीं काट सकते और नाही आप की मार खा सकते हैं आप इसके अलावा और जो चाहें सजा दें।

हे परमात्मा मुझे माफ करना मैंनें आज तक हर किसी का बुरा किया है और ये दर्शाती रही हूँ कि मैं तुम्हारा भला कर रही हूँ।

माघू, पीघू, मिस कटर और रगड़ू मैं तुम्हारा धन्यवादी हूँ तुमने इस केस को हल करने के लिये अपनी जान की बाजी लगा दी इस केस को हल करने की खुशी में मैं तुम सब को इनाम दिलाऊँगा।
सहपाल, हायपाल ने जिस थाली में खाया उसी में छेद किया। उनको बुरे काम का बुरा नतीजा मिला।
उनकी मिलें नीलाम हो गई हैं। अब वह भिखारी हो गये हैं।
हम सब को अच्छे काम करने चाहिये।
समाप्त
Raghubir Singh

हायपाल फौरन माचू को छोड़कर अपनी बन्दूक उठा लेता है और बाहर की ओर
घोष पर फायर
करता
ठाँय
लेकिन इंसपैक्टर घोष पुराने खिलाड़ी होने के कारण साफ बच जाते हैं और अपने सिपाहियों से कहते हैं।
तुम पिछली तरफ
बंगले में दाखिल
और बाकी के सिपा
चारों ओर से बंगल
को घेर लें।
हायपाल अपनी बन्दूक से मिस कटर का निशाना बनाता है। तभी इंसपैक्टर घोष कहते हैं-
मेरे तीन गिनने तक तुम अपनी बन्दूक फैंक दो नहीं तो मैं तुम्हें उड़ा दूंगा।
आपके तीन गिनने से पहले ही मैं कटर को उड़ा दूंगा-हा-हा-हा।
इससे पहले कि सहपाल मिस कटर को अपनी गोली का निशाना बनाये तब इंसपैक्टर घोष ऐसा निशाना मारते हैं कि हायपाल का वार खाली चला जाता है।
धाँय
हवलदार इन सब को हथकड़ी डाल
दी गई है इन्हें सम्भाल कर गाड़ी म
बिठाओ ये काफी खतरनाक हैं कहीं
फिर कोई हरकत न कर दें।
थाने में पहुँच कर रिमांड लेने के बाद हायपाल और सहपाल अपने बयान देते हैं-
हमने कुलदीप सेन को इसलिये मारा है क्योंकि उस पर स्मगलिंग का केस था जिसमें हम भाईयों का भी नाम था।
इसलिये हमनें जड़ ही खत्म कर दी न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।
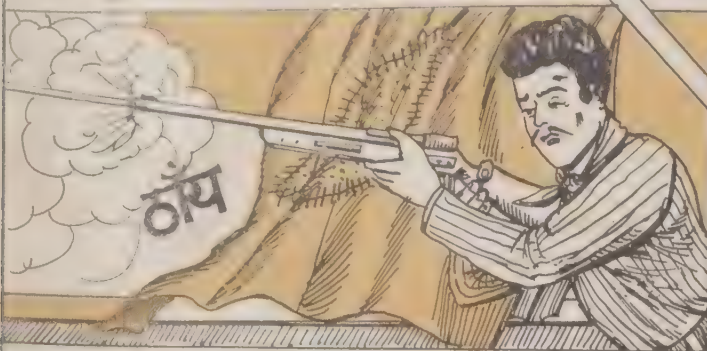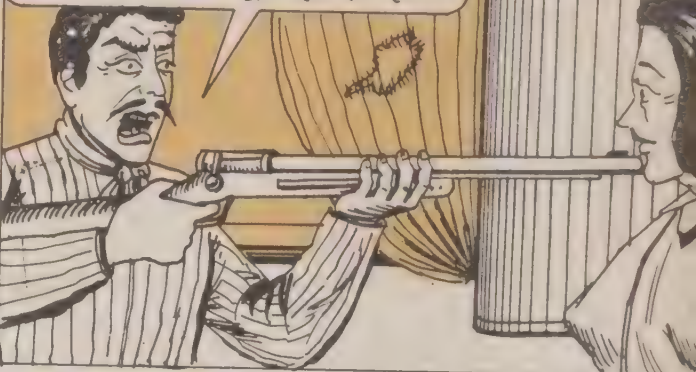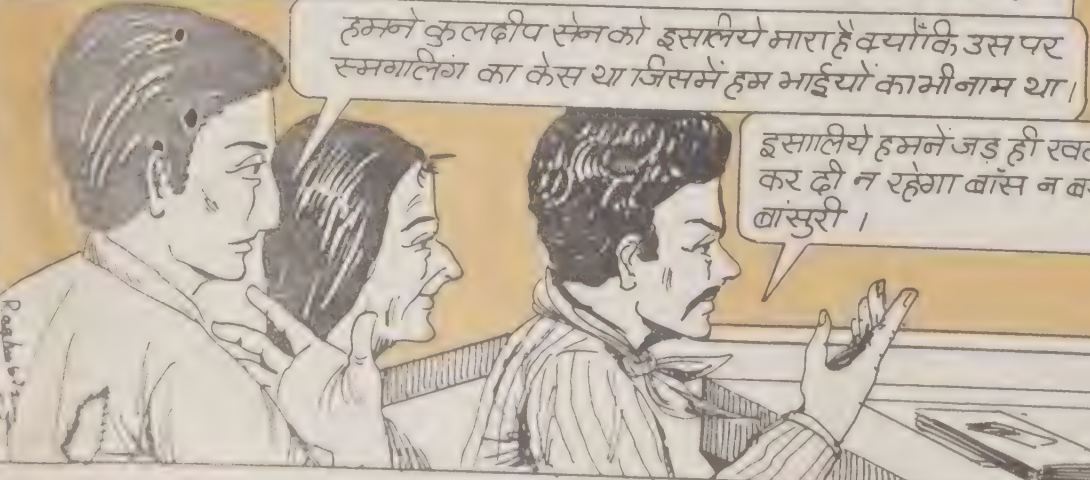
कॉलिंक रंग भरो
प्रतियोगिता
Colink OIL PASTEL
Colink
Colink
Colink

पृष्ठ १८ से आगे

होता कि मैंने पिछले किसी जन्म में कोई बहुत बड़ा पुण्य किया था . . .उसके बदले में ही भगवान ने मुझे तुम जैसी पत्नी दी है। जिसकी पत्नी तुम जैसी हो वह एक जन्म भी क्या दस जन्म तक हिम्मत नहीं हार सकता . . .और जिसकी तुम जैसी बहू हो, भाभी हो, उन लोगों के लिए तो घर वैसे ही स्वर्ग बन जाता है। तुमने आज नाटक किया है उसने जहां इतने दिनों बाद इस घर में ठहाके बिखेरे हैं वहां मुझे भी जैसे सोते से झंझोड़ जगाया है अब मैं स्वयं सोच रहा हूं कि जिस साहस, धैर्य और लगन के साथ मैंने एम. कामे तक पढ़ा था, केवल तीन महीने भटकने में ही वह सब कुछ खो बैठा। यह मेरी भूल थी . . .यह सच है कि मंजिल तक वही पहुंचते हैं जो थकते नहीं . . साहस नहीं छोड़ते ---- और जाने क्यों मेरे मन को एक विश्वास-सा हो गया है अब मुझे बहुत जल्दी नौकरी मिलने वाली है।''

''अरे सुनिए . . .आज आपने ब्रुश नहीं किया ?''

''क्यों ?'' कमल ने चौंककर कहा।

''तरकारी की गंध आ रही है।''

''नहीं तो . . .!'' कमल फिर चौंका।''

मगर दूसरे ही क्षण सुनीता उसकी पकड़ से दूर जा खड़ी हुई . . .। कमल ने ठंडी सांस लेकर कमर पर हाथ रखते हुए गम्भीरता से कहा—

''हूं . . .तो यह चोट . . .!

''जी नहीं, अपनी सुरक्षा . . .'' सुनीता बिस्तर के दूसरी ओर जाती हुई हंसकर बोली, ''आज आपकी नीयत अच्छी नहीं नज़र आती।''

''पकड़ी गईं तो ?''

''चिलाऊंगी।''

''यानी 'फाउल' करोगी . . .पकड़ी गई तो याद रखो . . .जब तक सुबह का उजाला न नजर आने लगे पलक तक नहीं झपकने दूंगा।''

''अरे मेरी मय्या! मैं तो मर गई।'' सुनीता दरवाजे की ओर झपटती हुई धीरे से चीखी, ''सरिता, मांजी . . . .बचाओ-बचाओ . . . .।''

मगर दूसरे ही क्षण कमल ने न केवल सुनीता को झपटकर पकड़ ही लिया बल्कि गोद में भरकर बिस्तर पर डाल दिया और जल्दी-से बत्ती बुझाकर उसे दबोच लिया—अन्धेरे में सुनीता की दबी-दबी चीखें गूंज उठीं।

□

सुनीता चाय की प्याली लेकर कमरे में आई तो कमल बड़े बेढंगेपन से आढ़ा तिर्छा पड़ा हुआ खुर्राटे ले रहा था . . .सिर तकिए पर सीधा रखा हुआ था . . .चेहरे पर बच्चों जैसा भोलापन और गहरा सन्तोष झलक रहा था। सुनीता के होंठों पर एक स्नेहमयी मुस्कराहट फैल गई . . .उसने चाय की प्याली मेज पर रख दी और फिर बिस्तर पर कमल के पास बैठकर धीरे-धीरे झुकी और जलते हुए होंठ कमल के होंठों पर रख दिए।

कमल की आंख खुल गई . . .वह चन्द क्षण तक एक आनन्दपूर्ण से सन्नाटे में खोया लेटा रहा . . .फिर उसने सुनीता की गर्दन में बांहें डालकर उसे खींचकर अपने ऊपर गिरा लिया . . .और सुनीता ने जल्दी-से कहा—

''फाउल . . .फाउल . . .?''

''सुनीता . . .प्लीज . . . .।'' कमल हांफता हुआ बोला।

''ओह नो . . .एग्रिमैंट में यह 'क्लाज' कहीं नहीं . . .बस जगाने के लिए एक 'किस्स' और उसके बाद शरीफ और आज्ञाकारी बच्चों के समान बेड टी, बाथरूम, कपड़े और दरवाज़ा . . .।''

''सुनीता . . .प्लीज . . .।'' कमल घिघियाया।

''ठीक है . . .।'' सुनीता ने अपने-आपको ढीला छोड़ दिया। ''कल से एग्रिमैंट की यह क्लाज समाप्त।''

कमल ने ठंडी सांस ली और केवल एक बार सुनीता के होंठ चूमकर उसे छोड़ दिया। सुनीता ने हंसते हुए चाय की प्याली मेज पर से उठाकर कमल को दी और कमल ने चाय का घूंट लेकर सुनीता को देखा जो उसके जागने से पहले नहा धो भी चुकी थी, धुली साड़ी भी पहने थी और बाल भी संवारे हुए थी। कमल ने कहा—

''माई गॉड! तुम क्या आधी रात को ही सो कर उठ जाती हो ?''

''जी नहीं . . .अपने समय से उठती हूं . . .नाश्ता भी तैयार कर चुकी हूं।''

''ओहो . . .।''

''बस . . .जल्दी उठिए . . .आज सबसे पहला काम आपको प्रार्थना पत्र टाइप कराने का है . . .अगर हो सके तो आज ही रजिस्ट्री करवा दीजिएगा।''

''मगर सादा डाक से क्यों नहीं ?''

''इसलिए कि साधारण डाक के प्रार्थना-पत्र ऊपर नीचे भी फाड़कर फैंक सकते हैं. . . .आप इन्हें रजिस्ट्री से भेजेंगे और वह भी ए. डी. के साथ।''

''लेकिन इसमें तो बहुत खर्चा हो जाएगा।''

''वह तो होगा ही।''

''मेरी हिम्मत तो अब पड़ती नहीं बाबूजी से मांगने की।''

''यह काम दासी पर ही छोड़ दीजिए।''

''अर्थात् . . .तुम मांगोगी ?''

''जी नहीं . . .मांगने से पहले ही बाबूजी एक रुपया रोज खर्चे को देते हैं . . .मेरे पास इस समय पचास रुपये से भी अधिक हैं।''

कमल का जी चाहा कि एक बार वह सुनीता को चूम ले। मगर एग्रिमैंट की सबसे विभोर कर देने वाली क्लाज की समाप्ति के डर से केवल चाय का अखिरी घूंट ही भर कर रह गया।

□

''पोस्टमैन . . .!'' दरवाजे पर से आवाज आई।

''अरे सरिता . . .देख बेटा।'' पारो ने पुकार कर कहा, ''पत्र आया है किसी का।''

'मांजी . . .?'' डाकिए ने ऊंचे स्वर में कहा, ''रजिस्ट्री है कमल बाबू के नाम . . .।''

''रजिस्ट्री।'' सरिता उछल पड़ी, ''कहां से आई है।''

'जी—बम्बई से।''

''ओहो . . .तब तो जरूर नौकरी की'' सरिता ताली बजाकर बोली, ''मगर भैया तो ब है।''

''अरे बेटा . . .तुम लोगों को कब से . . .तुम या मांजी ही साइन कर दो।''

''हां ला . . .ला . . .।'' पारो ने जल्दी ''मैं साइन किए देती हूं।''

''नहीं मां . . .यह काम भाभी को व . . .जरूर शुभ होगा।''

''हां बहनजी . . .बहूजी को बुला लें . . . रजिस्ट्री पत्नी ले सकती है।''

इतने में सुनीता रसोई से निकलकर आ . . .उसने रजिस्ट्री लेकर फार्म पर हस्ताक्ष . . .गरेबान से एक रुपया निकालकर बूढ़े पोस्ट दिया और बोली—

''काका! खुशखबरी हुई तो ढेर सारी मि

''बेटी . . .भगवान ने चाहा तो बहुत खुशखबरी होगी।''

डाकिया चला गया तो सरिता ने जल्दी से खु हाथ मलते हुए कहा—

''जल्दी पढ़ो भाभी . . .क्या लिखा है

सुनीता ने जल्दी-जल्दी लिफाफा खोला निकाला और पढ़ते पढ़ते खुशी से अनायास उछ . . .फिर उसने सरिता को दबोचकर उसका गा लिया और बोली—

''देखा . . .मैंने कहा था ना कि कहीं ना क इण्टरव्यू काल जरूर आएगा . . .बम्बई से आ ग

''क्या ?'' सरिता और पारो एक साथ खु उछल पड़ीं।

''बहुत अच्छी पोस्ट के लिए है . . .चीफ ए की पोस्ट।'' सुनीता ने उछलकर कहा, ''प्राइवे है . . .पूरे बारह सौ रुपये महीना वेतन।''

''बारह सौ रुपये!'' पारो ने जल्दी-से सीने प मलते हुए कहा, ''अरे कहीं खुशी से मेरा हार्ट फेल जाए।''

''मांजी! यह इन्टरव्यू काल है . . .भगव प्रार्थना कीजिए यह इन्टरव्यू में सफल हो जाएं . नौकरी मिलेगी।''

''हे भगवान! यह नौकरी मिल जाए मेरे कमल मैं चांदी का दिया जलाऊंगी मन्दिर में।''

''मांजी।'' सुनीता ने बड़े विश्वास के साथ ''आप देखिएगा . . .यह नौकरी अवश्य मिले सुनीता की आखों में दृढ़ विश्वास झलक रहा

क्रमश

फैण्टम-जंगल शहर

लूट नकली तले के नीचे ?

यह रहे मोती ? सोना ? देखते हैं ।

मोती और सोना दोनों ही हैं, तुमने इसमें से कितना निकाला है ?
कुछ नहीं, सारा यही है ईमान से ।
ईमान यह शब्द तुम्हारे लिए नहीं है ।

लुटा हुआ सामान और दोनों ठगों को मैं जंगल ले जाता हूं
रुको ! तुम सारा माल नहीं ले जा सकते । मैं अपने लड़कों को क्या जबाव दूंगा, जब वे होश में आयेंगे ।

वे अपना हिस्सा मांगेंगे, मैं क्या जबाव दूंगा ?
उस सबको सोचने के लिए काफी समय मिलेगा । तुम सब जेल में साथ ही रहोगे । 'गुरु' तुम्हारे और तुम्हारे

लड़कों के लिए पुलिस आ रही है, शहर से भागने की कोशिश न करना ।
सुना ! धोखेबाज बदमाश—तुम जो भी हो ।

'गुरु' जबान काबू में रखो यह बात मैं याद रखूंगा ।
!
गया—मुझे अभी भी नहीं मालूम, वह कौन है ?

उह ! सबको अब ही होश आने लगा है, उस आदमी की मार के बाद, वह था कौन ?
उनके जबड़ों पर वह चिन्ह ! खोपड़ी का निशान ।

!!

फैन्टम ।

ललोनी चलो उस नकाबपोश के ग्राने से पहले यहां से भाग चलें
नहीं ! उसने रुकने को कहा था ।
बकवास न करो—उह ।
BANG

तुमने स्त्रो की वात सुनी जाकाल—वहीं रुक जाग्रो, जाकाल ।
!
!
!
FALK & BARRY 3/16

उउह—सिर्फ एक व्यक्ति ही हमेशा ग्राधी रात को फोन करता है ।
कर्नल वोरुबू, बोल रहा हूं, हां कमान्डर ।
परेशानी का खेद है ।

घने जंगल में दो लोगों को बुरी तरह पीटा ग्रौर लूटा गया था जिनके पास ग्रोवांगी के मोती ग्रौर तेज का सोना था ।
एक स्थाननीय ठग 'गुरु' ने यह जुर्म करवाये थे लूट का सामान भी उसने ही लिया था ।
उसे गिरफ्तार किया जा चाहिए ।
हम उसे जानते हैं पर पुलिस का मामला है जंग सुरक्षा का नहीं
FALK & BARRY 3/17

कर्नल पुलिस को 'गुरु' के बारे में बताग्रो । ख्याल रहे पुलिस उसे गिर-फ्तार कर ले ।
कर्नल वोरुबू—सी. ग्रो जंगल सुरक्षा ।
प्रमाण का क्या होगा ?

मैं कुछ प्रमाण छोड़ ग्राया हूं, शिकार हुए लोग, चार्ज बाद में लगायेंगे कुछ सवाल ?
ग्ररे, ग्राप हमेशा ग्राधी रात को ही क्यों फोन करते हैं ?
कर्नल तभी तो काम होता सबसे बुरा भी ग्रौर ग्रच्छ भी । (बन्द)
FALK & BARRY 3/18

ललोनी ग्रौर जाकाल मेरे वापिस ग्राने तक यहीं रहेंगे, भागने की कोशिश न करना—डेविल पहरा दो !
ग्रब क्या ?
!

ग्रगर हम भागें तो यह क्या करेगा ?
मैं नहीं...पता लगाना चाहता
FALK & BARRY 3/19

क्रमश

गमगाते फिल्म संसार
कौन क्या पहन रहा है ?

सारे संसार में फिल्मी अभिनेता अभि-
त्रियों ने क्या पहना है का बहुत बड़ा प्रभाव
ता है। उनके प्रशंसक तुरन्त ही उनकी
कल शुरू कर देते हैं, दर्जी कपड़े सीने का
पना स्टाईल बदल देते हैं तथा फैशन की
निया वाले भी पीछे नहीं रहते। बेशक
ह सच है कि फिल्मी दुनिया में रहने वाले
व्यक्ति की पोशाक सुन्दर और चुने हुए
ों की ही नहीं होती, साथ ही बहुत बार तो
ह उन्हें सजती भी नहीं, आइये एक नजर
ल्मी सितारों के कपड़ों पर ही डालें—

मिताभ

अमिताभ ने अपने निजी तथा सार्वजनिक
वन में चूड़ीदार कुर्ता पाजामा तथा शाल
हनने का नियम सा ही बना लिया है। उनके
बे कद तथा छरहरे शरीर पर यह वेश भूषा
ब सजती है। परन्तु फिल्मों में अधिकतर
नके पास बहुत से अच्छे कपड़े होते हैं, स्क्रीन
र यह एक बहुत ही अच्छे पहनावे वाले
जन हैं शायद फिल्मों में तीन पीस सूट पहनने
इन्होंने ही आरम्भ किये थे। जब कभी भी
विदेश से लौटते हैं इनके साथ संसार भर
खरीदे उत्तम कपड़ों से भरे कई सूटकेस
ते हैं। इनके फैशन भी आधुनिकतम होते
'कचिन टेलर' जो अमिताभ के सूट बनाते
खते ही देखते सबसे मंहगे दर्जी हो गए
।'

त्रुघ्न

दूसरी तरफ शत्रुघ्न सिन्हा अपनी वेष
र पर कोई विशेष ध्यान नहीं देते, उन्हें चैक
नना पसन्द है जो उनके भारीपन के कारण
सूट नहीं करते, उनके पास अजीब चैकों
जैकेटस का काफी कलैक्शन है। जबकि
मताभ टाई या बो-टाई के बिना सूट नहीं
ते। शत्रु को खुले कालर की कमीज भाती
हैं वह स्वयं ही खुली तौर से मानते हैं कि
बिहार के पिछड़े इलाके का होने के कारण
उन्हें वेषभूषा का चुनाव अभी तक अच्छी तरह
नहीं आ पाया।

फिरोज

माचोमैन फिरोज के पास बहुत से तरह-
तरह के चमड़े के जैकेट और सुऐड के सूट हैं।
परन्तु उन्हें अपना बालों भरा सीना प्रदर्शित
करने का बहुत शौक है इसलिए वे कभी भी
अपने जैकेट के बटन बन्द नहीं करते। उन्हें
ताबीज अमूलेटस और सोने के ब्रेसलेट पहनने
का भी शौक है। केन्डल लाईट डिनर तक पर
वे लापरवाही से ही कपड़े पहने दिखाई दे
जाते है।

राजेश

राजेश खन्ना एक ऐसे फिल्मी सितारे हैं
जिन्हें अपनी वेषभूषा का सुन्दर चुनाव आता
है। याद ही होगा सन् 70 के करीब वे कभी
भी अपनी गुरु शर्ट और तंग पाजामे के अति-
रिक्त किसी भी पोशाक में नहीं दिखाई देते थे
उनके यह कपड़े अधिकतर सफेद या क्रीम कलर
के ही होते थे। स्क्रीन पर वे बहुत ही उत्तम
कपड़ों का चुनाव करते हैं जैसा की 'धनवान'
और 'रेड रोज' में देखा गया है। फिरोज खां
की तरह ही राजेश भी अपनी शर्ट के बटन
खुले ही रखते हैं।

संजीव
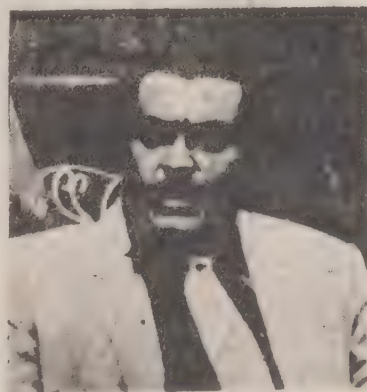
एक जमाने में संजीव कुमार को स्क्रीन का
सबसे खराब कपड़े पहनने वाला व्यक्ति कहा
जाता था परन्तु हाल ही में उन्होंने स्क्रीन पर
अपनी वेशभूषा पर खास ध्यान देना शुरू कर
दिया है। अब जरूरत के मुताबिक फिल्मों में
वे अच्छे सिले सूट पहनते हैं। परन्तु घर में
उन्हें सिल्क का कुर्ता और लूंगी ही भाती है
जिसमें दिन भर के काम के बाद वे आराम
महसूस करते हैं।

ऋषि कपूर को स्क्रीन के बाहर सफेद और
काले रंग पसन्द हैं परन्तु स्क्रीन पर वे तड़क-
भड़कदार पोशाक और रंग-बिरंगे जैकेट, टी-
शर्ट या स्पोर्ट शर्ट इत्यादि पहनने पसन्द करते
हैं।

धर्मेन्द्र

धर्मेंद्र फिल्मों में एक अति बलवान 'ही मैन'
का रूप दिखाना चाहते हैं, उनकी पसन्द की
खुले कालर की कमीजें खूब तड़क-भड़कदार
होती है, कभी-कभी फूलों वाली कमीजें भी धर्म
पहनते हैं, नौजवान दिखने के लिये वे आजकल
लेटेस्ट फैशन वाले कपड़े भी स्क्रीन पर पहने
दिखाई देते हैं, निजी जीवन में वे अपनी
पोशाक पर विशेष ध्यान देते हैं, इसलिए
पार्टियों में अधिकतर फोरमल सूट पहन उप-
स्थित होते हैं।

मिथुन

मिथुन चक्रवर्ती को भविष्य युग के कपड़े
पहनने का शौक है। स्क्रीन पर वह अंतरिक्ष
में पहने जाने वाली पोशाक जैसी ड्रैस पहनते
हैं तथा जान ट्रिवोल्टा की तरह व्यवहार करते
हैं। उनके फ्लैट पर संसार भर की आधुनिक
फैशन मेगजीन दिखाई देती हैं। क्योंकि विदेशों
के फैशनों को भारत में अपनाये जाने में कुछ
वर्ष लग जाते हैं, मिथुन सदा समय से आगे
दिखाई देते हैं। घर पर वे 'शेख स्टाईल में'
आराम करना पसन्द करते हैं, ड्रैस ड्रैसिंग गाऊन
तथा बड़े-बड़े लबादे से पहन।

कमलहसन

कमल हसन को स्क्रीन पर और बाहर
अपने 'मसल' प्रदर्शित करना पसन्द है। यही
कारण है कि वो ज्यादातर टी-शर्ट, जैकेट और
स्पोर्ट शर्ट इत्यादि ही पहनते हैं। ठिगने होने
के कारण वे गाढ़े रंग पहनना पसन्द करते है
जिनमें काला वे ज्यादा पहनते ह, इससे वे कुछ
दुबले भी दिखाई देते हैं।

हेमा मालिनी इन्डसट्री में सबसे खराब
पोशाक पहनने वाली कही जाती हैं। उनके
ब्लाउज, जेवरात तथा सैंडल बहुत कम ही
उनकी साड़ी से मैच करते हैं साथ ही उन्हें
रंगों का ज्ञान भी नहीं है। शेष पृष्ठ ४८ पर

पृष्ठ ११ से आगे

साहब से आकर शिकायत की—'साहब किस कार्टून को फोन पर बैठा दिया है । हम पूछते हैं—हैलो फारेन एक्सचेंज ।' जनाब जबाब मिलता है—हां साहब हमने फौरन आदमी बदल दिया है [illegible] और कोई सेवा ।'

बड़े साहब ने माथे में हाथ मारा और धनीराम से कहा—'धनीराम जी मुझे आप पर गुस्सा नहीं है; क्योंकि विद आऊट सेन्स व्यक्ति पर गुस्सा करना व्यर्थ है । गुस्सा तो [illegible] लोगों [illegible] पर है जिन्होंने तुम्हें पास करके तुम से जन्म-जन्म के बैर निकाले हैं ।

'क्या कहते हैं साहब, आप मुझे विद आऊट सेन्स कहते हैं मैंने आठवीं तक सेन्स पढ़ी है ।

'धन्य हो धनीराम !' साहब अपना माथा पीटने लगे और धनीराम को फटकार लगा कर भगा दिया । धनीराम ने मन ही मन भगवान को कई गालियां दे डालीं—'अरे भगवान ! इस बड़े साहब की टांग तोड़ दे ।'

वह कई दिन बड़े साहब से बोले भी नहीं । साहब को बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि वो जानते थे कि ऐसा व्यवहार केवल कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार और बुद्धिमान व्यक्ति ही कर सकता है। एक निकम्मा और अपने काम की ए. बी. सी. डी. न जानने वाला व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता । उसे तो मजबूरी गंदा-संदा चमचा बनना पड़ता है । एक दिन स्टेनो ने बड़े साहब को बताया—'साहब आपको पता है । आजकल धनीराम जी रिजर्व रहने लगे हैं ।'

'भला क्यों ?' साहब को आश्चर्य हुआ ।

'स्टाफ के लोगों ने उन्हें यही सलाह दी हैं कि तुम ज्यादा बोलते हो, इसलिए साहब तुम्हें डांट-डपट देते हैं । तुम साहब से बोलो ही मत, देखना साहब स्वयं एक दिन मांफी मांगेंगे ।

साहब मन ही मन मुस्कुराने लगे । उनके मुख से अनायास निकल पड़ा—'वाह ! रे धनीराम शास्त्री ।'

बेचारे धनीराम पर दिन भर डांट पड़ती । कभी साहब डांटते तो कभी बड़े बाबू । और तो और कल परसों के छोकरे भी उनका मजाक उड़ाते—'हां तो शास्त्री जी, इंटक का अर्थ है इन्दिरा टमाटर कम्पनी ।' कभी लोग उनसे उन्नीस का पहाड़ा सुनते, कभी वज्र का अर्थ पूछते । धनीराम का जब कोई बस नहीं चलता, तो कहते—'तुम कल परसों के छोकरे ज्यादा ही शान बघारते हो । बड़े छोटों की शर्म ही नहीं है । मैं तुम्हारे बाप की उम्र का हूं और तुमसे पहले अन्न खाना सीखा हूं ।'

एक दिन बड़े साहब और बड़े बाबू में विचार विमर्श हुआ कि इस वज्र मूर्ख को कहां लगाया जाए । बड़े बाबू ने सुझाव दिया—'सर इसे विज्ञापन विभाग में भोंपू पर बैठा दीजिए । लिखे लिखाए मैटर को यह जोर-जोर से भोंकता रहेगा ।' साहब को भी यह बात जंच गयी । अगले दिन ही शास्त्री जी को भोंपू पर बैठा दिया गया । धनीराम जी पब्लिक को सूचनाएं देने लगे—'सभी भाइयों को सूचित किया जाता है कि हमारे पुराने माल की लिल्लामी आठ तारीख को होगी । जो महानुभाव माल खरीदना चाहें; वो परशों तक आवेदन-पत्तर दफ्तर दाखिल करने की किरपा करें । थैंक्यू—नमस्कार ।'

दो दिन बाद ही धनीराम जी की कम्पलेंड हो गयी । लोग आकर बड़े साहब से कहने लगे—'खन्ना जी, एनाऊंस पर किस चिड़िमार को बैठा दिया है । एक भी उच्चारण सही नहीं है । यहां देशी-विदेशी सभी तरह के लोग आते हैं । आखिर तो विभाग की इज्जत का सवाल है ।'

आखिर धनीराम जी वहां से भी हटा लिए गए । साहब परेशान थे कि इस इक्यावन साला नकारा धनीराम शास्त्री का क्या किया जाए । तीन महीने तक उन्हें कोई काम नहीं सौंपा गया । वे आफिस में आते और चुपचाप बैठकर चले जाते । धनीराम ने इसे अपनी तौहीन समझा ; अतः इसकी शिकायत उन्होंने एक दिन बड़े साहब से की । साहब ने उन्हें समझाया—'शास्त्री जी, आजकल आपकी तबियत ठीक नहीं रहती । मस्तिष्क तो बिलकुल ही खत्म हो गया है । आप एक ऐसा कंकड़ हैं, जो चारों तरफ से बेढंगा है; अतः किसी भी सरकारी ब्रिल्डिग में तुम्हारा इस्तेमाल नहीं किया जा सकता । मैंने तुम्हारी परेशानियां सरकार को लिख भेजी हैं । अगली कार्यवाही के लिए तुम्हें शीघ्र ही सूचित कर दिया जाएगा ।'

और एक दिन अचानक धनीराम को सेवा निवृति का पत्र थमा दिया गया । धनीराम दौड़े-दौड़े बड़े साहब के आफिस में पहुंचे—'हुजूर, ये आपने क्या किया ! मेरे बाल बच्चों पर तो तरस खाया होता । कल परसों के छोकरे तो तरक्की पा गये और मुझे उल्टा पांच साल पहले जबरन रिटायर किया जा रहा है ।'

'सरकार मजबूर है धनीराम जी । आपका करें क्या ? आप प्रत्येक मी[illegible] प्रत्येक क्षेत्र में फेल हो गए हैं । ऐसा आदमी सरकार के किसी काम क[illegible] है ।'

'क्या कह रहे हैं हुजूर आप ? [illegible] भी कोई जजबाती (संवेदनशील) चीज़ यह तो मरा हुआ हाथी है, जिसका सैकड़ों गीदड़ नोच-नोच कर खा [illegible] क्या मैं सरकार में भारी पड़ गया हूं ।'

पहली बार धनीराम के मुंह से एक ऊंची बात निकली थी । कभी-कभी मूर्ख बहुत अक्लमंदी की बात कह जाते हैं ।'

'आई एम सारी मिस्टर धनीराम ! साहब उठकर चले गए । धनीराम असा[illegible] रिटायर हो गए । साथियों ने उन्हें भाव[illegible] विदाई दी । फेयर वैल पार्टी का आ[illegible] हुआ । बड़े बाबू ने उनके बारे में दो शब्द 'आज हमें धनीराम जी से बिछुड़ते हुए दुख हो रहा है । एक ईमानदार, कर्तव्य तथा मिलन सार व्यक्ति हमारे बीच नहीं है । (जैसे धनीराम जी राम नाम रट[illegible] गये हों) उनके लगन तथा एकाग्रता से [illegible] हुए विवेक पूर्ण कार्य काफी समय तक [illegible] नहीं जा सकेंगे । यह तो केवल विडम्बना संयोग ही है कि कुछ मानसिक तथा [illegible] परेशानियों की वजह से उन्हें सम[illegible] पूर्व रिटायर होना पड़ रहा हैं। हमारी [illegible] से प्रार्थना है कि आने वाले समय में धन[illegible] जी का मन और विवेक दोनों कायम रहें उनका भविष्य सुखमय बीते ।'

धनीराम ने यह विदाई भाषण सुना उसका खून उबाला लेने लगा । जी में [illegible] कि इन रंगे सियारों की पूंछ काटले औ[illegible] चार सिर-फिरे कुत्तों को इनके पीछे लगा[illegible] सरासर झूठ बोलकर मेरे आंसू पोंछ रहे मैं इन कमीनों के लिए कभी नहीं रोऊंगा हालात ये थे कि धनीराम फूट-फूट कर [illegible] चाहते थे । रुलाई तक नहीं रही थी ।

धनीराम जी अपने पुत्र महेश की भक्ति की तुलना प्रायः श्रवण कुमार से मगर रिटायरमेंट के बाद तो महेश दूर-दू[illegible] भी श्रवण कुमार नजर नहीं आता था । बात पर अपनी ही पत्नी ताने कसने ल[illegible] 'ऐसे थाली में के बैंगन और घोंघा ना होते क्या सरकार इस तरह धक्के मार कर

पहले छुट्टी कर देती।' घनीराम यद्यपि गधे
भाई थे मगर उतनी बात उनकी समझ में
वश्य बैठ गयी थी कि घर के सब लोग सी.
आई. से संबंधित हैं। अव्वल दर्जे के झूठे और
क्कार। घर में उनके साथ पूरा भेदभाव था।
ौर लोग चीनी की चाय पीते मगर घनीराम
ो गुड़ घोलकर ही चाय दे दी जाती। महेश
ी पत्नी उन्हें मोटी-झोटी अधकच्ची रोटी
क कर फेंक देती। महेश की मां कहती—
बहू, इन्हें कच्ची रोटी मत दिया कर। दर्द हो
ायेगा।

तुम भी अम्मा कैसी बातें करती हो। ये
ोई अक्कल का काम करते हैं, जो रोटी
चेगी ही नहीं। मूरख आदमी का क्या है,
ैंसे की तरह सब मोटी-झोटी पच जाती है।'

पुत्र वधु के ये शब्द घनीराम जी के कान
ं भी पड़े। उन्हें बहुत क्रोध आया। बोले—
ैं भैंसा हूं? तू ही कहां की बकरी है। अरे
भी तो हथिनी की तरह हो रही है।'

'हाए राम! मुझे इस निक्खट्टू बुड्ढे ने
थिनी कहा। 'हाथी तू' 'हथिनी तू.।'

'तू भैंसा'

'अर्रर! अर्रर!' तभी दोनों बच्चों ने दादा को चिढ़ा दिया। घनीराम जी चिढ़कर बोले—'रुक जाओ सपोलो तुम्हारा अभी फन कुचलता हूं।'

महेश की पत्नी ने सुना तो आपे से बाहर हो गई। बोली—'देखलो! सब देखलो बाबा को। अपने ही पोतों का फन कुचलता है। अरे! ये काशीफल मेरे बच्चों को सांप बताता है।'

'हां! हां! तू भी सांपिन है। नमकीन, चटपटे, खट्टे और मीठे सारे स्वाद चखती है और मुझे एक रोटी भी ठीक से नहीं देती। सारे दिन घर में स्याही बिन्दी और मुंह पर खड़िया पोतती रहती है।'

बहू ने सारे मुहल्ले की औरतों को इकट्ठा कर लिया—'हाए दैया! इस बुड्ढे की नीयत ठीक नहीं है मेरी स्याही बिन्दी देखता है।'

एक पड़ौसिन ने मुंह पिचका दिया—'हूं बनी फिरती है मुहल्ले में चौधरन। बुड्ढा रोटियों को भी तरस रहा है।'

अब तो दोनों पड़ौसिनों में वाक युद्ध प्रारंभ हो गया। गालियों का आदान प्रदान हुआ तथा केशा-केशी होने लगी। जब दोनों थक गईं तो महेश की पत्नी घर में पड़कर चिल्लाने लगी—'अरे! ये मुआ बुड्ढा ना मरा रे। इसने दो पैसे की औरतों से मुझे गाली दिलवाई।' शाम को महेश आया तो त्रिया चरित्र शुरू हो गया। महेश ने बाप को आड़े हाथों लिया—'औरतों की तरह बस लड़ना आता है। बाकी अक्ल में गोबर भरा हुआ है। बच्चों को जोड़ भी नहीं करा सकते। कहते हैं हासिल तो हमारे जमाने में था ही नहीं। गधे और बैल भी थोड़ी बहुत अक्ल रखते हैं, मगर यहां तो बेड़ा ही गर्क है बिलकुल।

'गधा होगा तू! रात दिन तुम दोनों मुझे गधा, भैंसा, बैल, गोबर गणेश, घोंघा और न जाने क्या-क्या कहते रहते हो। मैं समझता हूं अब तुम्हें मेरी जरूरत नहीं है।'

'हमें ही क्या, तुम्हारी किसी को भी जरूरत नहीं है।' महेश ने उपेक्षा से कहा।

'इसका मतलब है मैं कहीं भी कामयाब नहीं हो सकता।'

'जब जवानी भाड़ झोंकते हुए चली गई तो बुढ़ापे में क्या मुनीम बनोगे।'

'ठीक है, तुम मुझे रोज ताने देते हो। कल से मैं अपनी रोटी खुद बनाऊंगा।'
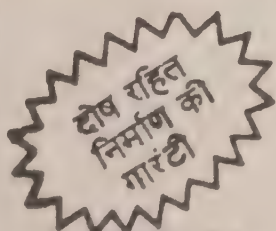
धनीराम गुस्से में अपनी लठिया उठाकर चल दिए।

कई रोज इसी प्रकार बीत गए। धनीराम जिस गली और मुहल्ले से निकलते बच्चे अर्रर ! अर्रर करते। धनीराम मुहल्ले में भैंसा बाबा के नाम से मशहूर हो गए थे। घर में उनकी पूरी उपेक्षा की जाती थी, यहां तक कि अब रोटी मिलना भी प्रायः बन्द सा हो गया था। एक दिन महेश ने देखा कि समय-समय पर बापू चारपाही पर नहीं हैं, केवल उनकी लठिया इधर-उधर लुढ़क रही है।

● ●

धनीराम सीधे निकल कर हरिद्वार पहुंचे। कई महीने साधुओं की चिलम भरी, मगर वहां भी दाल न गली। कई बार सुलफी में वे तम्बाकू ही रखना भूल गए। वहां से एक गुरुद्वारे की शरण ली, मगर कई बार जूतों समेत ही वह ग्रंथ साहब के आसन तक चले गए; अतः कसकर पिटाई हुयी। वहां से हटकर धनीराम बैरागी हो गए। दो साल तक कुत्ते की तरह घर-घर दुत्कार खाते रहे। अपने जीवन से तंग आकर एक दिन वह आत्महत्या करने ही वाले थे कि उन्होंने जय-जय कार होती सुनी। देखा किसी नेता का जुलूस निकल रहा है। पता किया वह तो देश के महान् नेता भोलानंद थे। उन्होंने भोलानन्द को ध्यान से देखा ! अरे ! यह तो मेरी ससुराल का भोला जुलाहा है। बिलकुल मेरी तरह मूरख। बस फिर क्या था, उन्होंने भोला की पूंछ पकड़ ली। भोला पहले बड़ा चुस्त और छरहरा था मगर अब तो उसका विशाल-काय शरीर हिलता-डुलता नहीं है। ब्लड प्रेशर कभी हाई तो कभी लो हो जाता है। कई सेवकों ने कई छड़ी के सहारे भोला जी को मंच पर आगोश में भरकर पहुंचाया। भोलानन्द जी ज्यादा देर तक खड़े नहीं रह सकते, क्योंकि दमे के मरीज हैं; अतः बैठकर भाषण देने का इन्तजाम किया गया। भोलानंद के भाषण से धनीराम को बहुत खुशी हुई। उन्हें लगा जैसे मूर्खों का सही मुकाम उन्हें मिल गया है। उन्होंने भोला से मुलाकात की। दोनों मित्र गले मिले। धनीराम जी ने जब उन्हें आपबीती सुनाई, तो भोलानन्द बहुत हंसे और बोले--'अरे ! बावले धनीराम, आत्म-हत्या की सोचता है। मुझे देख मैंने पहले जितनी भी चादरें बुनीं सब गलत थीं मगर आज मजाल है जो कोई मुझे गलत कहदे। तू भी मेरी तरह नेता बन जा।

'लो मैं भी आज से नेता बन गया।' धनीराम जोश में कह गए।

'ऐसे नहीं प्यारे ! पहले सेवा, त्याग, ज्ञान, धर्म भावना, सत्य और सत्कर्म सबका मुंडन संस्कार कराकर झूठ का यज्ञोपवीत पहन डालिए और फिर कूद पड़िए राजनीति में।

भोलानंद से मिलकर बुद्ध की तरह धनीराम के ज्ञान चक्षु खुल गये। उन्हें पीपल का पेड़ मिल गया ! ? भोलानंद जी ने उनकी ताल अग्रवादियों से लगवादी। जो बगैर खोपड़ी इस्तेमाल किए 'हाय ! कुर्सी, नौ इन्ची ना, तो हम भी ना। हमें तख्त पर बैठा दो बाकियों को खाईयों में फेंक दो।' ऐसा-ऐसा कहते रहें।

भीड़ के साथ धनीराम भी ऐसा ही कहने लगे। सहज-सहज तो सब चलता रहा मगर जब वह दांत भींच कर चिल्लाए, तो गिरिफ्तार कर लिए गए और जेल भेज दिए गए। हम विज्ञान के सूत्र की तरह जानते हैं कि साधारण व्यक्ति+जेल=नेता का पद। जेल नेता निर्माण की अच्छी फैक्ट्री हैं, यहां बूढ़े-ठेड़े और सड़े-बुसे एक बार फिर तरोताजा कर दिए जाते हैं। जेल में धनीराम को कोई तकलीफ नहीं हुई बल्कि सुबह को दूध के साथ अण्डे, चाय के साथ डबलरोटी और बिस्कुट तथा चपातियों के साथ सलाद भी मिलने लगा। कुछ दिन की ही जेल की हवा से धनीराम फूलने लगे। अब तो जेल का उन्हें चस्का लग गया। कई आंदोलनों में वो सबसे पहले जेल गए। अखबारों की सुर्खियों में उनका नाम रहने लगा। आचार्य धनीराम शास्त्री अब काफी चर्चित और प्यारे जन नेता बन चुके थे। नेता पद पर जमने के लिए उन्होंने सारे हथकंडे अपनाए। जैसे राजघाट पर झूठी कसमें खाना, दल बदलना, चाहे गंदे कार्यों में मगर अखबारों की सुर्खी में बने रहना आदि। इन चाटुकारिता पूर्ण हथकंडों से राम के पल्ले एम. पी. का टिकिट पड़ लिखे लिखाए एक दो भाषण पेल प्रजातंत्र का कमाल देखिए वह भारी वोट जीत गए। इसके बाद भाग्य ने जोर मा दल से विश्वासघात करके सत्तारूढ़ दल सरक कर अच्छे भाव बिक गए। पार्टी नेत सदैव स्टील का चमचा रहने का वचन रातों रात मंत्री पद भी झपट बैठे। जैसे वो शपथ लेकर मंत्री की कुर्सी पर बैठे, कोमल नारी स्वर ने कहा—'मे आय कम सर ?'

'यस कम' धनीराम जी ने अकड़ में क 'कौन हो तुम ?'

'जी ! मैं आपकी अक्ल हूं। आपको पद मिल गया है न, इसीलिए आपके आई हूं।'

धनीराम का ब्लड प्रेशर झटके खाने ल मुट्ठियां भिच गयीं। क्रोध में उबलते बोले--'ओ बेवफा औरत ! तो वो तू ही जिसने मुझे मुहल्ले का भैंसा बनाया। ब से अर्रर—अर्रर करवाई। गधे और बैल खिताब दिलवाया। चली जाओ यहां से।'

'सर ! वो!......' अक्ल गिड़गि

लगी।'

'मैं कहता हूं चली जाओ। अब तुम्हारी कोई जरूरत नहीं है।'

'सर एक बात तो सुनो !।'

'जो कुछ कहना है मेरे पी. ए. से ज कहो। उसे ही तुम्हारी जरूरत है। मैं केवल दसकत करने का मर्द हूं।'

'हुजूर दसकत नहीं, दस्तखत।' अ मुस्कुराने लगी।

शेष पृष्ठ ४६

चिल्ली लीला

ओह!यह बेचारा जिन्दगी से तंग आकर आत्महत्या करना चाहता है। लोग कितनी जल्दी आशा का दामन छोड़ देते हैं।
भाई साहब आत्महत्या अपराध है। यह कायरता की निशानी है। इन्सान को कभी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।
अब मेरी जिन्दगी में कुछ नहीं रहा। मेरा घर जल गया। नौकरी छूट गयी। बीवी पड़ोसी के साथ भाग गई, बच्चे लापता हैं। जिऊं तो किसके लिए जिऊं? अब मौत ही एकमात्र रास्ता है।
ऐसा नहीं सोचते—यह नेगेटिव एप्रोच है। घर दोबारा बन सकता है। आप दोबारा शादी कर सकते हैं, घर बना सकते हैं। अभी उम्र ही क्या है?

मैं यह क्या करने लगा था? भय्या तुमने मेरी आंखें खोल दीं। मैं कितनी बड़ी गलती करने लगा था।
देर आयद दुरुस्त आयद। अब आप लौट जाइये। मैं जरा दूसरी तरफ जा रहा हूं वर्ना कार में आपको लिफ्ट दे देता। अच्छा मैं चलूं?

किसी की जान बचाने या किसी को गलत काम करने से रोकने पर कितना संतोष मिलता है।
EEEE
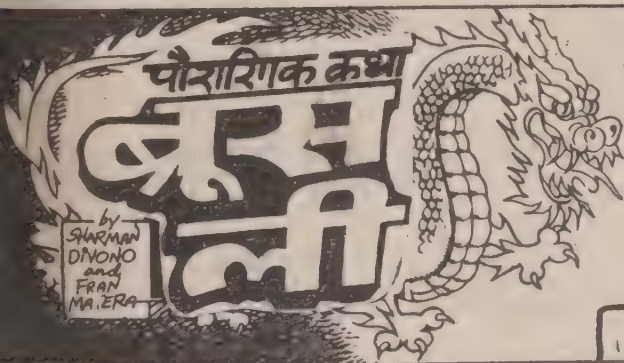
पौराणिक कथा
ब्रूस ली
by SHARMAN DIVONO and FRAN MATERA
ताओ आफ जीत कूने
जब कभी भी दो,एक जैसी रफ्तार, बल तथा कला के लड़ने वालों की मुठभेड़ होती है।

कला में दक्ष होने वाले की विजय होती है।

3
ब्रूस के विरोधों के बावजूद ...नी वर्ल्ड डज एसोसियेशन की 'एक्शन ग्रार्म' 'मौत के ...जे' में अभिनय करने वालों में 'स्टंटमैन' के जैसे शामिल हो गया। फिल्म की शूटिंग दक्षिणी अफ्रीका के जोहन्स...र्ग शहर में चलती रही।
सब लोग सुनो! यह शॉट हम केवल एक ही बार ले सकते हैं।

कैमरा ट्रक तुम्हारे पीछे-पीछे आ रहा है इसलिये उसके रास्ते से अलग रहना।
भीड़ में वह औरत ...फेंड हूवे की पत्नी मैंगी है। मुझे पूरा विश्वास है।
DIST BY ASIA FEATURES

...बहुत लापरवाह हो गई। ...सने मुझे देख लिया, पर ...भीड़ में गुम हो जाऊंगी।
7

मैंगी! रुको!
ब्रूस! तुम कहां जा रहे हो?

ताएक्वोन्डो

रोमांचक ताएक्वोन्डो पाठ का
और भाग जो विख्यात जिमी जगतिया
द्वारा जिनके बहुत से मार्शल आर्टस
स्कूल देश भर में चल रहे हैं और जि
मास्टर ब्रूस ली से इस आर्ट का
भाग सीखने का सौभाग्य प्राप्त है ।

पाठ 11

डब्लू. त्वीयो अपाचा पुसुगी—(आगे कूद कर लात मारना)

गायरुगी में खड़े हो, दो से चार कदम भाग कर ऊपर हवा में कूदो, दायीं टाँग को आगे लाओ, घुटना मोड़ो और छाती के करीब लाओ ।

कूदते समय एक पैर जमीन पर और दूसरा हवा में होना चाहिए । फिर उस पैर से जो जमीन पर था लात मारो । यह क्रिया अधिकतर प्रदर्शन के लिये प्रयोग में लाई जाती है । इसे वास्तविक प्रतियोगिता में प्रयोग नहीं किया जाता ।

दीवाना-कैमल रंग भरो प्रतियोगिता नं० २८ का परिणाम

प्रथम पुरस्कार—जायदीप मित्रा द्वारा श्री पी. के. मित्रा, क्वार्टर नं० 247/डी, रेलवे कालोनी गोरखपुर, उ. प्र. ।

द्वितीय पुरस्कार—(3) 1. कुमारी दीप सिखा सांघी—अलवारपेट (मद्रास), 2. विवेक शाह-चम्बा (हिं. प्र.), 3. संजय अग्रवाल—आगरा ।

तृतीय पुरस्कार—(10) 1. रिजवान परवीन—कोटा, 2. मलकीत सिंह सीहरा—फरीदाबाद, 3. विशाल कुमार—पटना, 4. कुमारी अर्चना—बिलासपुर, 5. कुमारी आशा अग्रवाल—बम्बई, 6. बेबी फिरोजा पी. मेहरा—बम्बई, 7. कुमारी अंजू गुप्ता—मुरादाबाद, 8. संदीप राव जी भाई पटेल—अहमदाबाद, 9. ललित कुमार दयालाल जैन—बम्बई, 10. प्रकाश प्रसाद—बिहार ।

दीवाना आश्वासन पुरस्कार—(5) 1. जयंत नाथ वर्मा—मोतीहारी, 2. हेमन्त रला—कूच (राजस्थान), 3. विमल थापा—अम्बाला कैण्ट, 4. शिवानी शर्मा—दिल्ली, 5. विक्की पन्नू—तरन तारन (पंजाब) ।

सर्टीफिकेट—(10) 1. आनन्द सेठी—हिसार, 2. सीमा कुमारी सूर्या—बम्बई, 3. समीर कुमार पाल—गोपाल गंज, 4. सुनील कुमार—दिल्ली, 5. अजय कुमार गुप्ता—नई दिल्ली, 6. कुमारी इन्दू—जालंधर सिटी, 7. बालिन्द सिंह बालूजा—पटियाला, 8. सुनील वालिया—नई दिल्ली, 9. नृपति सुभाष भाई पटेल—बरूआ (गुजरात), 10. संजय पालीवाल—कानपुर ।

पुरस्कार जीतिए

कैमल
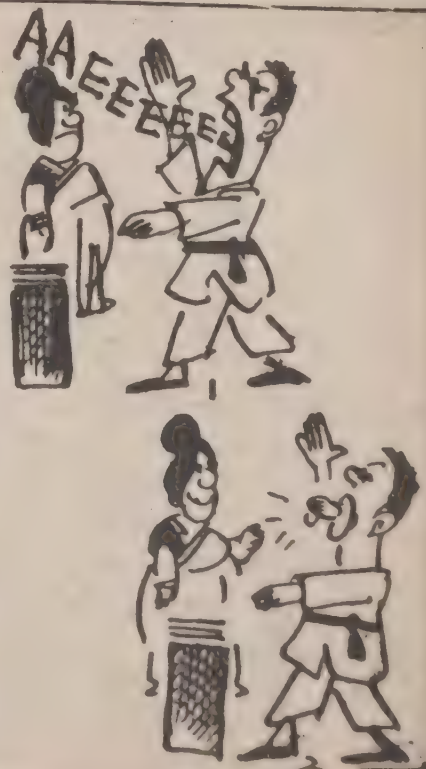
पहला इनाम (१) रु. ३०/-
दूसरा इनाम (३) रु. २०/-
तीसरा इनाम (१०) रु. १०/-
१० प्रमाणपत्र

दीवाना

५ आश्वासन इनाम

इस प्रतियोगिता में १२ वर्ष की उम्र तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं. ऊपर दिये हुए चित्र में पूरे तौर से कैमल कलर्स रंग भरिए और इसे निम्नलिखित पते पर भेज दीजिये :
दीवाना, ८-बी, बहादुर शाह जाफर मार्ग, नई दिल्ली ११० ००२.
जजों का निर्णय अंतिम और सभी के लिए मान्य होगा. इस विषय में कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जायेगा.
कृपया कूपन केवल अंग्रेजी में भरिए.

नाम .... उम्र ....

पता ....

....

प्रविष्टियाँ 16-6-83 से पहले भेजी जायें.

CONTEST NO 31

पृष्ठ ४२ से आगे

'यहां सब चलेगा अक्ल रानी ! ये मंत्री की कुर्सी है ।

ही···ही···ही !' मंत्री खिरा—खिराकर अक्ल को चिढ़ाने लगे । अक्ल ने फिर कुछ कहना चाहा, तो धनीराम कर्कश स्वर में बोले —अक्लिया ! फौरन तख्लिया' हैं ! हैं ! देखा कमाल, उर्दू भी बोलने लगा हूं ।'

मंत्री बनते ही धनीराम ने एक-एक से बदला लेना शुरू कर दिया । सबसे पहले उन्होंने अपने पुराने बॉस और बड़े बाबू को तलब किया । बॉस ने आते ही सेल्यूट मारा । धनीराम ने पूछा पहचान्वे हो ।'

'जी ? जी ! सर' बॉस थूक सटकने लगा ।

'ओ निकम्मे, नकारा और कामचोर आदमी । जी सर । जी सर क्या लगा रखी है, पैरों की धूल चाटिए ।' धनीराम की त्यौरी [illegible] बोलने लगी ।

क···क्या सर' बास का सर चकराने [illegible]

[illegible] । अभी तक धूल चाटने में आना कानी । आई एम से धनीराम गलत-सलत अंग्रेजी झाड़ने लगे—'हमें शिकायत मिली है कि तुम काम ठीक नही कर रहे हो । तुम्हारी अक्ल मारी गई है ।'

'सर । बौस ने कुछ कहना चाहा ।

'जो कहना है मेरे पी. ए. से कहिए और वहीं से बर्खास्तगी का आर्डर ले लीजिए । कल तुम्हें और तुम्हारी सरकार को हमारी जरूरत नहीं थी और आज हमें और हमारी सरकार को तुम्हारी जरूरत नहीं है ।'

बौस बेचारा अपना सा मुंह लेकर चला गया । धनीराम फिर बड़े बाबू की ओर उन्मुख हुए—'गधा, बैल, सूअर, बज्र मूरख । और भी कुछ कहूं ।' धनीराम ने बाबू से पूछा ।

'ज ज जी' बाबू बगलें झांकने लगा ।

'मेरे जूते साफ कीजिए ।' धनीराम ने आदेश दिया ।

बाबू बेचारा जूते साफ करने चला तो धनीराम ने झिड़क दिया—'ऐसे नहीं जीभ से साफ कीजिए ।'

आखिर बाबू से जीभ द्वारा जूते चटवा कर, नाक रगड़वा कर और तीन धक्के मार कर धनीराम ने कहा—'तुम्हारा काम ठीक नहीं है । आज से तुम्हारी तनज्जुलि । तुम छोटे से छोटे बाबू बनाए जाते हो । जाओ अपना डिग्रेशन लैटर मेरे पी. ए. से ले लो ।'

दूसरा काम जो धनीराम ने मंत्री बनकर किया वह यह कि महेश से सारी जमीन-जायदाद छीनकर उसका सारा पैसा फिक्स डिपोजिट में जमा करवा दिया और दो तीन युवतियों को साथ ले अपनी पत्नी से मिलने गए । आगे कार,पीछे कार और बीच में बूढ़े धनीराम मुस्कुराते हुए बीबी के पास पहुंचे तो धनीराम ठाहाका लगाकर हंसे—'मैं नकारा हूं' थाली में का बेंगुन हूं', फालतू हूं । देखा बुढ़िया, दुनिया में बेकार, फालतू, निक्कमे और मूर्खों की भी कोई जगह है ।

धनीराम ने समूह से कहा—'जरा दो चार नारे जमके लगाओ ।'

'धनीराम शास्त्री—जिंदाबाद । देश के नेता धनीराम'

'ऊं हूं । इस तरह नहीं ।' धनीराम ने कागज पर लिखकर समूह को नारा दिया । 'बुद्धि के मालिक—धनीराम शास्त्री' विवेक स्तंभ—धनीराम शास्त्री । लोग जोर-जोर से नारे लगाने लगे । युवती, किशोरियां धनीराम को पंखा झलने लगीं । धनीराम ने अपनी बीबी की तरफ अजगर की तरह देखा और कहा—'देखा कुछ, कभी तूने भी हमें ऐसा पंखा नहीं झला । मक्कार बीवी—तलाक—तलाक । और उसी के साथ धमाका हुआ तथा बैन्ड बजने लगा । शास्त्री जी की विजय यात्रा निकलने लगी । सारा मुहल्ला देखता रह गया । धनीराम ने सोचा बूढ़े हाथ पैर हैं कहीं फालिज या लकवा न मार जाए, इसलिए पहले ही फारेन कंट्रीज की यात्रा कर डालनी चाहिए । अतः सचिव को साथ ले धनीराम जी डाक्टरों के साथ विदेश यात्रा पर निकल पड़े । अमेरिका की प्रेस कान्फ्रेन्स में उनका इंटरव्यू हुआ ।

पत्रकार :—'सुना है राजनीति में आने से पहले आप सरकारी मुलाजिम थे । आपको मूर्ख और निक्कमा समझ कर सरकार ने समय से पहले रिटायर कर दिया था । क्या ये सही है ?'

'**धनीराम** :—'ये कोई नयी बात नहीं है । ऐसा तो पचास फीसदी मंत्रियों के साथ होता है । आखिर सरकार ने सचिव, आई. ए. एस. आफिसर तथा विशेषज्ञ क्यों रखे हुए हैं । ये सब लोग मिलकर खोटे सिक्के को भी चला देते हैं । और फिर मुझे बलात् रिटायर कर दिया गया तो क्या हुआ । पांच साल में मैं भी रिटायरों की लाईन लगा दूंगा ।'

पत्रकार :—'लोग कहते हैं कि पह[illegible] सोलह दूनी आठ बनाते थे ?

धनीराम :—'वो तो आज भी [illegible] हूं । आखिर हमने कम्पयूटर किस लि[illegible] हैं ।'

पत्रकार :—'एक सरकारी चपरा[illegible] भी अट्ठावन साल में अक्षम समझकर कार्य से सेवा मुक्त कर दिया जाता है; एक नेता कभी अक्षम नहीं होता । केवल तो लाश ही सेवा मुक्त होती है । ऐसा क[illegible]

धनीराम :— 'वह राजनीति का [illegible] जो लेता है । दूसरे कुर्सी पर केवल नेत[illegible] शरीर दीखना चाहिए भले ही वह अपंग, लंगड़ा तथा टी. बी. या कैंसर का मरी[illegible] क्यों न हो । तीसरे हमारी कुर्सी बेशर्म[illegible] मौज की कुर्सी है । इस पर केवल मेरी [illegible] बेशर्म ही डटा रह सकता है । एक जवा[illegible] इस पर बैठकर जल्द ही उबलने लगता है [illegible] त्याग पत्र दे बैठता है । इसके विपरीत बूढ़े आदमी का खून ठंडा तथा शर्म प्रूफ [illegible] है । अतः वो इस कुर्सी पर अधिक दि[illegible] रह सकते हैं ।

पत्रकार :—'आप और आपकी स[illegible] रोज कहती है कि हम ठोस कदम उठा [illegible] मगर वो कदम कभी उठते क्यों नहीं हैं ?

धनीराम :—'अजीब पत्रकार हो । [illegible] बात भी समझ नहीं आती । अरे ! भाई वो कदम ठोस होते हैं, तो जल्द कैसे [illegible] जाएं । खोखले कदम हम रोज जल्द ए[illegible] बाद एक उठाते ही हैं । आप ऐसा हमा[illegible] झूठे आश्वासनों में देख सकते हैं ?

पत्रकार :—'शास्त्री जी, आजकल फि[illegible] सितारे फिल्मी लाईन छोड़कर राजनी[illegible] भाग ले रहे हैं । इसका क्या कारण है ।

धनीराम :—'बड़ा सामयिक प्रश्न [illegible] है आपने । सच तो ये है कि आज हेमामा[illegible] और रेखा के साथ एक्टिंग करने में भ[illegible] आनंद नहीं आता, जो यहां जनता का [illegible] बनाने की एक्टिंग करने में आता है । [illegible] जानते हैं कि फिल्मों में तो एक बूढ़ा हीरोईन का बाप बन सकता है मगर राजनीति में वह जनता का स्वामी बना [illegible] है । क्या आपको स्वामी और बाप में [illegible] नहीं दिखाई देता ।

दूसरे वहां बेजान कैमरे का इतना [illegible] होता है, जितना यहां प्रधान मंत्री का [illegible]

ं। वहां डायरेक्टर बहुत रिटेक करता है। राज की तरह हीरो की जान पर चढ़ा ता है मगर यहां स्वयं हमारे डायरेक्टर मूर्ख चमचों की आवश्यकता होती है, जो ल हां में हां मिला सकें, अतः रिटेक का ाल ही नहीं है।'

पत्रकार :—'मंत्री बनने से पूर्व आप शब्द का उच्चारण भी ठीक से नहीं कर ते थे, मगर आज धड़ाधड़ प्रश्नों का उत्तर रहे हो इस परिवर्तन का क्या कारण हैं ?'

धनीराम :—'सीधा कारण हैं। पहले नौकर थे। अतः भाषा को बना संवार बोलने में चूक हो जाती थी। अब ऐसी ई बात नही है। हमने कई शोक सभाओं लिखे लिखाए उद्घाटन भाषण पढ़ डाले र जनता ने फिर भी बड़े ध्यान से सुना।

पत्रकार :—'आप जैसे कई मंत्रियों को ड़-पकड़ कर कार में बिठाया जाता है। स्वयं उठकर चल भी नहीं सकते; फिर जनता आपको कैसे चुन देती है !'

धनीराम :—'ये अगर आप जनता से ही तो बेहतर होगा। मगर जहां तर्क मेरा ल है, इसके दो कारण हैं। पहला कारण ये है कि जनता हम बूढ़ों का इलाज कराना हती है। मंत्री बन कर हम मुफ्त में आपके में इलाज करवा सकते हैं। दूसरे जनता नकारा आदमी को भी शान शौकत के निगम बोध घाट पर जगह दिलवाना हती है।'

पत्रकार :—'क्या कारण है कि एक छोटा क्लर्क तो हाई कम्पटीशन क्रांस करके करी पाता है; मगर नेता ऐसा कोई कम्प-शन नहीं देता।'

धनीराम :—'आप भी अजीब सवाल ते हो। चुनाव के दौरान हजारों रुपयों का ना, कम्बल बांटना, वोटरों को शराब ाकर धुत करना, रात दिन भाषण देना, ता की गालियां खाना और अखबारों के र अपनी-अपनी' जैसे कालम में छीछालेदार ा कर भी जिन्दे बने रहना क्या ये किसी कम्पटीशन से कम हैं बल्कि ये कहिए कि ो दी ग्रेट कम्पटीशन है।

पत्रकार :—'आपने एक बार डिपार्टमेन्टल ीशन की परीक्षा दी थी। उसमें आपसे म की राजधानी दिसपुर के बारे में पूछा था, मगर आपने उसे सिंगापुर की राज-ी बताया था। जब आपकी जनरल नालेज इतनी कमजोर है तो फिर आप सरकार कैसे चलायेंगे ?'

धनीराम :—'क्या आपको सरकार चलती नजर नहीं आ रही। दिसपुर का तो मुझे आज भी पता नहीं है। मगर आज मैं कम्पूचिया के मामले, अफगानिस्तान समस्या और डिएगो गार्शिया के मसले पर भी बोल सकता हूं। अब आप ही देखिए कि मुझे तो क्या मेरे बाप को भी ये पता नहीं है कि ये फिलीस्तीन और इजराईल क्या बवाल हैं, मगर फिर भी मैं इनका जिक्र अपने भाषणों में अक्सर करता हूं।'

पत्रकार :—'अन्त में एक प्रश्न और। आप कब तक मंत्री बने रहेंगे ?

धनीराम :—'जब तक उनकी नजरे इनायत रहेगी और शरीर की मिट्टी कुर्सी पर पड़े रहने लायक रहेगी।'

थैंक्स, धनीराम जी। तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया गया। अमेरिकी यूनीवर्सिटी ने उनको डीलिट की उपाधि दी। लौटते हुए एयर पोर्ट पर विदेश मंत्री ने उनकी अगवानी की। धनीराम ने देश में मूर्खों का सम्मेलन कराया, जिसके स्वयं वे अध्यक्ष चुने गए। अपने अध्यक्षीय भाषण से बोलते हुए उन्होंने कहा—'मेरे मूरख भाईयों, इस समाज में मूर्खों की बड़ी दुर्दशा है। हर गली, हर मुहल्ले में उनके पीछे कुत्ते लगाए जाते हैं। उन्हें भैंसा समझकर उनके पीछे अर्रर अर्रर की जाती है। मतलब हर जगह अक्ल का बोलबाला और मूर्खों का मुंह काला है। मगर एक मेहकमा ऐसा भी है, जहां कंडम माल भी चल जाता है। वो मेहकमा है राजनीति का। इसमें दूसरों की अक्ल और मेहनत पर मौज उड़ाई जाती है। आप मुझे ही देखिए, कहीं नहीं जमा; मगर यहां ऐसा जमा हूं कि सहज उखड़ नहीं सकता। ठीक से उठकर चल भी नहीं सकता मगर फिर भी सरकार चला रहा हूं। अतः आज से किसी मूरख भाई को हताश होने की आवश्यकता नहीं है। वह जरा सी तिकड़म और मक्कारी से बिना अक्ल के भी कहीं से कहीं पहुंच सकता है।'

चारों तरफ तालियों से उनका स्वागत हुआ। 'धनीराम जी की जय।' लोगों ने उनको कंधों पर उठा लिया। और मालाओं से लाद दिया। अचानक किसी ने टांग पकड़ कर उन्हें नीचे पटक दिया। मालाएं तोड़ दीं। देखा तो महेश की मां है। धनीराम को गुस्सा आ गया। बोला—'इस बुढ़िया की खाल खींच ली।'

'खाल तो मैं तुम्हारी खींचूंगी। कल हल्दी लेने बाजार भेजा था मगर यहां भाषण चल रहे हैं। तुममें इतनी अक्ल होती तो भले ही दिन न थे।' इतने में महेश भी आ गया। मां बेटा दोनों धनीराम को खचेड़ने लगे। धनीराम चिल्लाने लगे—'देख लेना एक-एक को खचेड़ दूंगा। मैं मंत्री हूं ?

'किसे खचेड़ रहे हो ? कौन मंत्री है ? महेश की मां ने उन्हें झिंझोड़ कर पूछा।

'छोड़ दो मुझे।' एक-एक की खाट खड़ी कर दूंगा।

उन्हें झिंझोड़ कर जगाया गया, तो उनकी आंखें फट गयीं—'यानि मैं फिर इस घर में आ गया। मेरी कुर्सी कहां है।'

मां ने महेश को पुकारा—'अरे देखना इनका दिमाग तो बिल्कुल ही जाता रहा शायद।

'खामोश। मुझे मेरी जगह मिल गयी है। मुझे मेरे स्ट्रेचर पर उठाकर राजनारायण के पास ले चलो। मैं चुनाव लड़ूंगा।'

महेश उन्हें पागल खाने ले जाने का प्रबंध करने लगा।

●
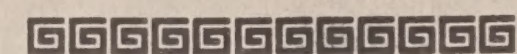
एक कम्पनी के प्रेजीडेन्ट ने अपने मैनेजर से कहा, 'ग्राहकों की आलोचना कम करने के लिए मैंने अपने माल पर दस वर्ष की गारंटी देने का फैसला किया है।'

'पर साहब हमारा समान तो तीन वर्ष में टूट फूटकर अलग हो जाता है।'

'मैं जानता हूं' प्रेजीडेन्ट बोला, 'परन्तु हम गारन्टी ऐसे कागज हर छापेंगे जो दो में ही नष्ट हो जाये।

●

जेबरात की दुकान में अंगूठी चुराते हुए पकड़े जाने पर चोर बोला, 'पुलिस को न बुलाइए, मैं इसके दाम खुशी से दे दूंगा।

जब खजान्ची ने उसे बिल थमाया तो वह बोला।

'यह तो मेरे खर्चा करने के इरादे से कुछ ज्यादा ही है, क्या आप मुझे कुछ कम कीमती नहीं दिखा सकते ?'

पृष्ठ ३९ से आगे
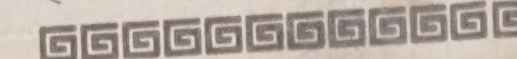
परवीन

परवीन बाबी को मिथुन की तरह ही भविष्य युग के कपड़े भाते हैं इसलिए वे अपने कपड़े अक्सर स्वयं डिजाईन करती हैं जिनमें विदेशी माडर्न फैशन मैगजीन उनका काफी साथ देते हैं। वह पूरी तरह पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित हैं और अधिकतर पैंडल, पुशर, डंगरी और जम्प सूटों में दिखती हैं आधी रात की पार्टियों में वे शाम के कपड़े पहने पहुंच जाती हैं।

रीना

रीना राय कपड़ों के भद्दे चुनाव में हेमा मालिनी जैसी ही है। वह चटक रंगों के बेमेल कपड़े ढेर सारे जेवरात के साथ पहन लेती है चाहे वह अच्छी लगे या न लगे। वह अपने ड्रेस डिजाईन पर अपना रौब झाड़ती है जिसके फलस्वरूप उनकी ड्रैस बस एक भद्दा रूप ले लेती है। निजी जीवन में भी वे लापरवाही से कपड़े पहने रहती हैं, जैसे चूड़ीदार पर टाप।

रेखा

रेखा बहुत ही अच्छी तरह से अपने कपड़ों का चुनाव करती है पर उसका स्वयं का कोई विशेष स्टाईल बताया नहीं जा सकता क्योंकि उनकी वेशभूषा पर उनके चालूबाय फ्रेंड का विशेष महत्व होता है। उदाहरण के लिये अमिताभ के दिनों में वह अधिकतर हल्के सुन्दर रंगों की बंगाली स्टाईल साड़ी पहनती थी, पर जैसे ही उनके मित्र में बदलाव आया और संजयदत्त से मित्रता हुयी उन्होंने पैंडल पुशर और जीन्स पहननी शुरू कर दी पर अब क्योंकि उनके अमिताभ से सम्बन्ध सुधर गये हैं, आशा है वे वापिस पारम्परिक वेशभूषा पर लौट आयेंगी। यह मानना होगा कि उनकी पसन्द और चुनाव बहुत ही बढ़िया है जैसा कि 'सिलसिला' में माडर्न कपड़ों तथा 'उमराव जान' में प्राचीन वेशभूषा से पता चलता है। दोनों ही फिल्मों में अपने कोस्टयूम रेखा ने स्वयं डिजाइन किये थे।

दीवाना के अंक ८, ९ में प्रकाशित पहेली का सही हल

अंक ८

की	लौ	बौ	जा	र
र	जा	ई	■	त
ण	■	र	त	न
■	म	को	य	■
वि	ला	प	■	■

विजेता—अनिल कुमार द्वारा श्री एस गुप्ता एडवोकेट, 292, दरीबा कलां, दिल्ली

अंक ९

विजेता—अजय कुमार मल्होत्रा, सी, पंडारा पार्क, नई दिल्ली-110003

दीवाना वर्ग पहेली

20 रु. इनाम जीतिये

अन्तिम तिथि - १९-७-८३

संकेत

बांये से दांये

१. लड़की जो प्रारंभ अंत में बनती ठनती है बीच में आंसू बहाती है (३)
४. जिन्दगी के आधे तौर तरीके (३)
५. अधिकतर इतवार में खेने का मसाला (४)
७. वर्ष में पैसा बनाने की जगह (४)

ऊपर से नीचे
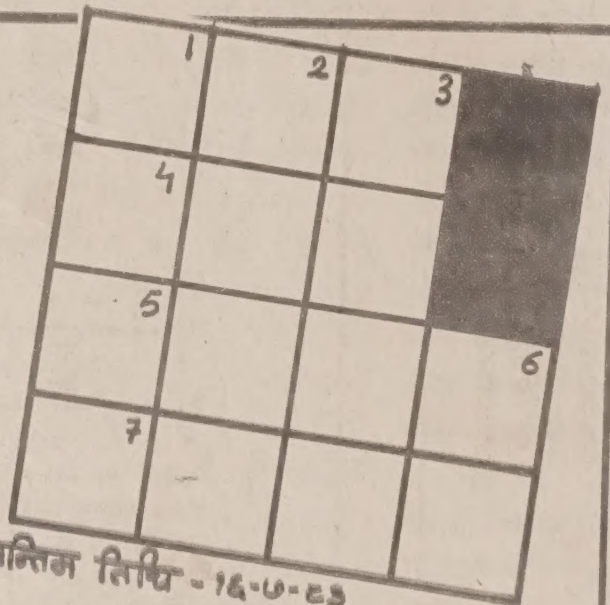
१. सीधे भागना (४)
२. एक स्थान जहाँ की सीमा आधा समारोह है ? (४)
३. शादी में औरतों का स्थान (४)
६. घुलमिल (२)

नाम ————————————

————————————

पता ————————————

————————————

दो कटप...

—राजेन्द्र ...

डराया
धमकाया
परन्तु फिर भी
वह
भाषण देने से—
बाज न आया।

वह बोली—
'पंडित जी
आप तो
जगह-जगह जाते हैं
श्राद्ध आदि
खाते हैं
हमारी लड़की
जवान हो गयी है
नजर दौड़ाइए
कोई अच्छी सी सास...
तो हमें बताइए।'

बोलते अक्षर

मांग

कमोड

दीवाना

के वार्षिक सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये

चन्दे की दरें

वार्षिक	अर्द्धवार्षिक	एक प्रति
५० रुपये	२६ रुपये	२ रुपये ५० पैसे

साधारण रुप से दीवाना की सदस्यता शुल्क ६०. रु. एवं डाक खर्च अलग से होती है। लेकिन आप अभी सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये एवं अपनी कापी अपने घर या दफ्तर में प्राप्त कीजिये।

नीचे दिये कूपन को भरिये और चन्दे की रकम के साथ हमें डाक द्वारा भेजिये चन्दे की रकम केवल दीवाना के नाम से ही भेजें।

अपना सदस्यता शुल्क निम्न पते पर शीघ्र भेजिये
सरकुलेशन मैनेजर,दीवाना ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

कृपया मुझे दीवाना के वार्षिक/अर्द्ध वार्षिक ग्राहकों की सूची में सम्मिलित कर लीजिये। मैं चन्दे की रकम———— रुपये भारतीय पोस्टल आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट/मनीआर्डर नं.————————से भेज रहा हूं।

नाम————————————————

पता————————————————

——————————शहर/जिला——————————

राज्य ——————————पिन कोड ——————————

विशेष उपहार दीवाना के उन पाठकों को जो दीवाना के 6 वार्षिक सदस्य बनाकर हमें भेजेंगे एक दीवाना टी शर्ट या छः माह

आगामी अंक में पढ़िये

* पेड़ लगाइये-हंसिये हंसाइये
* ऐ! गलत फहमी
* कुछ अनोखे वनमहोत्सव
* सभी स्थाई स्तम्भ

प्रमोद कुमार जैन, जैन जनरल स्टोर, बागपत रोड, मेरठ, 24 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

प्रेम रत्न व्यास, डागों का चौक, बीकानेर, (राज.), 18 वर्ष, कुश्ती लड़ना।
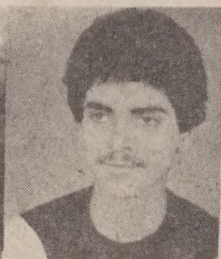
अकील सैयद, 8 शौकत अली रोड, इलाहाबाद, 17 वर्ष, टिकट संग्रह करना।
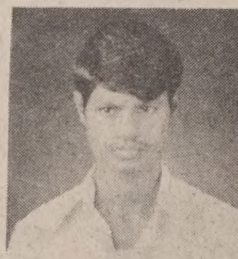
विजय महादेव नलावडे, 10/15 दत्तात्रेय बिल्डिंग, बम्बई-7, 21 वर्ष, लिखना और पढ़ना।
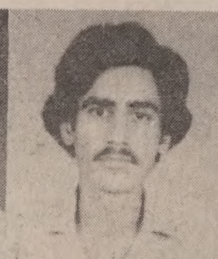
राजकुमार नन्दा, म नं 153, बरमीआ मोहल्ला, दसूहा, 21 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

सत्यपाल चोपड़ा, 265/9, राम नगर, गांधीनगर, दिल्ली-31 17 वर्ष, फोटोग्राफी करना।

दिल बहादुर, 533/3 पुरा नं. 2, गांधीनगर 18 वर्ष, मेहनत करन

सुनील कुमार, म. नं. बी-5, शिवशंकर कालोनी, जयपुर, 14 वर्ष, क्रिकेट खेलना।
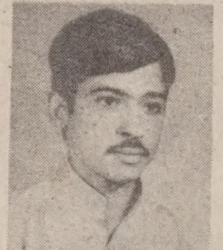
अर्जनदास डावड़ा, बिरेन्द्र हेयर ड्रैसर, 21 वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता करना।

वेद, म. नं 2, टी. बी. कालोनी बिजनौर, 19 वर्ष, अभिनय करना, पत्र-मित्रता करना।
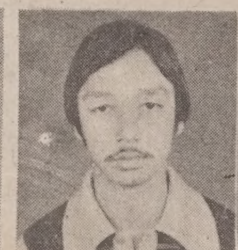
यतेन्द्र कुमार गुप्ता, 270-271, आजाद मार्केट, दिल्ली-6, 25 वर्ष, घूमना, पत्र-मित्रता।

नवारुणकर, जौनपुर मार्ग, कोटद्वार, 17 वर्ष, पत्र-मित्रता करना तथा दीवाना पढ़ना।

श्री छत्ताराम, दुकान नं. 406, इन्द्रा बाजार, जयपुर, 45 वर्ष, किताबें पढ़ना।

राजेश डंगोल, म. नं. मखन टोल, काठमांडो, 25 वर्ष, नया मित्र बन

कृष्णमान डंगोल, 8/245, मखन गली, काठमांडो नेपाल, 25 वर्ष नया मित्र बनाना।

श्याम कुमार 'शक्ता' तिलक नगर, जयपुर, 17 वर्ष, दीवाना पढ़ना, फरमाईश भेजना।

म० अलीम, देह्लियांवा टोला, छपरा, 18 वर्ष, शायरी करना प्यार करना तथा पढ़ना।
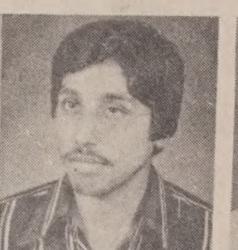
लियाकत भारती, मौ. मुकीबान म. नं. 13/1636, सहारनपुर 22 वर्ष, अदाकारी करना।

अनिल अरोड़ा, 64/11, अशोक नगर, नई दिल्ली, 15 वर्ष, दीवाना पढ़ना।
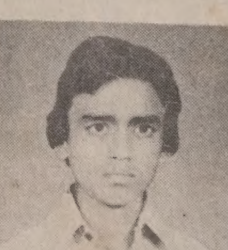
शमीम खान, रहेमानिया चौक, नयापारा रायपुर, 18 वर्ष, पान बेचना दीवाना पढ़ना।

जुबेन डिकूज, 102, रोड, बांद्रा, बम्बई, बैड मिन्टन खेलना।

मरीक सिंह, एफ-382, रघुबीर नगर, नई दिल्ली, 25 वर्ष, दीवाना पढ़ना, ड्राइवरी करना

क्रोश कुमार 'रोमू' सरगोधा पान भंडार, जी. टी. रोड शाहाबाद, 19 वर्ष, मित्रता करना।

रमेश कुमार जायसवाल, रमेश टी स्टाल बटाला, 14 वर्ष, मित्रता करना, दीवाना पढ़ना।
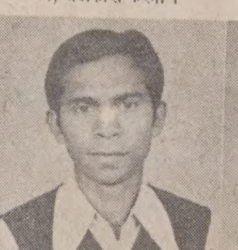
अविनाश सिंह, 166-ए, बनखंडी देहरादून, ऋषिकेश, 23 वर्ष, मित्रता करना, दीवाना पढ़ना।

राजेश रोशन पाण्डेय, बीरगंज नेपाल, 15 वर्ष, मेहनत करना तथा दोस्ती करना।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब,
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लि

नाम ——————————

पता ——————————

——————————

आयु —————— शौक ——————

——————————

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे जीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

तेज प्रेस नई दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता